श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा
पंजीयन सं. 467

॥वृष्णि वंश जयते॥

वार्ष्णेय कल्याण

अंक 30
2025-26

सानिध्य विशेषांक

स्वत्वाधिकारी : श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

e-mail : varshneykalyan@yahoo.com, srivarshneysabhaagra@gmail.com

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका 'सानिध्य'

विशेषांक अंक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

Er. Nemi Chand Gupta
(Retd. A.E. U.P.S.E.B.)
M. 9319105030

Er. Manish Kumar Gupta
(B.E. Civil)
M. 9412256803

Er. Yogesh Kumar Gupta
(B.E. Civil)
M. 9720007373

Er. Jayant Gupta
(B.Tech CSE)
Data Engineer
M. 8171212399

Agra Wire Industries

Manufacturer & Suppliers of M. S. Wire, H.B. & H.H.B. Wire & Chains Wire

655, Artoni, Sikandra, Agra
Mob. 9319103653, 9720007373

Prabha Exports

(Manufacturers & Exporters of Leather Footwear)

Mob. 9412256803

U.V. Infra Associates

(Government Contractor & Builders)

Mob. 9412256803

Nemi Ashiana Pvt. Ltd.

(Real Estate)

Mob 9319105030

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका 'सानिध्य'
विशेषांक अंक के प्रकाशन एवं
नववर्ष की शुभकामनाएं
M M BUILDERS GROUP
M. M. BUILDERS
Civil Contractor
Near GLA University, NH-2, 17km. Mile Stone, Mathura
Mob. 7500499999, 7457088888, 9012877777, 7505133804
FLY-ASH BRICKS, PAVERS, BRICKS BLOCKS AND
PRE-CAST BUILDING ELEMENTS IN VARIOUS SHAPES & DESIGNS
MAUJA - JAIT, MATHURA
M/s. M.M. RMC
Ready Mix Concrete Plant
NH-2, Ajhai, Teh. Chhata (Mathura)
Mob. 7457088888, 7252877777
7505133804, 7055513262 (Gate) 7017993085
M. M. BUILDERS
Ready Mix Concrete Plant
Ghana Road, Sasni (Hathras)
Mob. 7500499999, 7457088888, 9012877777, 7505133804,
7007281088, 8439790474, 7017993082
Agrasen Nagar, Kosi Kalan (Mathura)
m.m.builders.kamal@gmail.com
prasoonjainmmb@gmail.com

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

Magnum Pharmaceuticals

(VISION TO OFFER QUALITY AND AFFORDABLE DENTAL PRODUCTS)

770, Devi Nagar, N.S. Road, Jaipur (Raj.)

: 9352419304. Suvesh Varshney

Saryu Saran Varshney &
Mrs. Veenu Varshney
Mob. : 9219872717
9368991010

Magnum Footwear (P) Ltd.

(Mfr. & Exporter of High Fasion Ladies Footwear)

C-47, Site-C, UPSIDC Industrial Area, Opp. SHRI AKROOR MANDIR, Shastripuram, Sikandra, Agra-282007

: 9837090409, Shailesh Varshney

Resi. : 46, Tulsi Vihar, Dayal Bagh, Agra-282005

||श्री गणेशाय नमः||

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

Dr. Ashok Varshney
Director
Mob. : 9319099241
9412280029
(Tenti Gaon Wale)

Varshney
Polypack Pvt. Ltd.

Manufacturer of : Multilayer LD Film for Lamination, Shrink Film, Milk Film, Nitrogen Flush and Vaccum Poly Film, etc.

F-56, Industrial Area, Site-C, Sikandra, Agra-6

LAMIPRO
POLYCOATING Pvt. Ltd.

Manufacturer of : Surface Protection Films (SPF Film)
Coating Film for Mica, etc.

Plot No. 2, Khasra No. 661, Near Uttam College, Runkata, Agra.

Er. Shubham Varshney
Director
Mob. : 7427894826

Shivam Varshney
Director
Mob. : 8909770887

Varshney
ELECTRICAL ELABO Pvt. Ltd.

Trading House : All type of Plastic granuales and Master batches. (LD, LL, PP, HD, etc.)

F-57, Industrial Area, Site-C, Sikandra, Agra-6

With Best Compliments from ...

Munendra Varshney
M. 9319619993

Sumit Varshney
M. 9319104669

Amit Varshney
M. 9999385254

Publisher- Exporter and Distributors of Medical, Nursing, Veterinary, Religious, Jyotish and Indological Books

www.medicorefresher.in

45 years of focused VISION

Dedicated and committed house for
Quality Education

DEEP PUBLICATION
Hospital Road, Agra-3

SUMIT PRAKASHAN
B-91/A, Alok Nagar, Agra-10

MEDICO REFRESHER PUBLICATIONS
4807/24, Daryaganj, New-Delhi-2

With best Compliments

A SOLID FOUNDATION FOR FUTURE

Seth Kishori Lal Varshney Jan Kalyan Samiti (Regd.)

Late Shri Kishori Lal Varshney Late Smt. Shakuntala Devi

Dr. Sanjeev Varshney(Bunty Babu)
M. D., APS
प्रांतीय संयुक्त महामंत्री– उद्योग व्यापार मंडल

Sajal Varshney
Director
Awagarh Public Sr. Sec. school

Awagarh Public. Sr. Sec. School

Jalesar Road, Awagarh, Etah (U.P.). Pin - 207301

A Co. education, CBSE Affiliated Sr. Sec. School, run by Seth Kishorilal Jan Kalyan Samiti (regd.), since 2003.

...a guarantee of success....

100% Board Result

Address : Bhajanpur. Jalesar Road. Awagarh (207301)
Cont no. - +91- 9759212226. 9837409911
Website www.awagarhpublicschool.in, email:awagarhpublicschool@gmail.com

Little Flowers..... a pre school

A unit of Awagarh Public Sr. Sec. School, nourishing kids with talent, knowledge and personality.

Tara Varshney(Manager)

Mansi Varshney(Director)

Sajal Gun House

शस्त्रों एवं कारतूसों के विक्रेता

Address : Near Gopal Ji Temple, Main market, Awagarh (Etah) U.P. -207301
Contact no. - +91- 9759212226, 9837409911

वृष्णि वंश शिरोमणि
पूज्य श्री अक्रूरजी महाराज

त्वं नो गुरूः पित व्यश्च श्लाघ्यो बधुश्च नित्यता।
वयं तु रक्ष्याः पोश्याश्च अनुकम्पयाः प्रजाहि चः।।

(भागवत 10-48-29)

श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन, आगरा (रजि.)

अन्तर्गत श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

श्री अक्रूर मंदिर

(175 फुट रोड, लखनपुर, शास्त्रीपुरम, आगरा)

सभी वार्ष्णेय बंधुओं से विनम्र निवेदन करना है श्री अक्रूर जी मंदिर श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन, आगरा (रजि.) का निर्माण कार्य चल रहा है। इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कर पुण्य के भागीदार बनें। धन्यवाद!

ई. नैमीचन्द गुप्ता (अध्यक्ष)

ई. योगेश कुमार गुप्ता (संस्थापक सदस्य)

अंकित गुप्ता (संस्थापक सदस्य)

ई. पी.एस. गुप्ता (सचिव)

श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चैरिटेबल ट्रस्ट

अन्तर्गत श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

अक्रूर वाटिका

(मथुरा रोड, सोंठ की मंडी, आगरा)

वाटिका में विवाह, जन्मदिन तथा अन्य मांगलिक कार्यक्रम समाज के लिए बहुत ही सुलभ दरों पर उपलब्ध है।

ई. विनय कुमार वार्ष्णेय	डॉ. अशोक वार्ष्णेय	विनोद कुमार गुप्ता	ई. डी.सी. वार्ष्णेय
(संरक्षक)	(अध्यक्ष)	(कोषाध्यक्ष)	(सचिव)

हार्दिक शुभकामनायें

मनोज वार्ष्णेय
8279797594

Manoj Battery House

Dealer of All Parts of e-Rickshaw

सागर वार्ष्णेय
741763065

E-Rickshaw Battery

Retail and Distributors

लखन वार्ष्णेय
MCA
DOB-2001
9720147571

Manoj Enterprises

Front of Hanuman Mandir, Behind Rambagh, Agra

Manoj & Sons

Buddha Ka Nagla, Naripura, Jagner Road
Kheria Mod, Agra

हार्दिक शुभकामनायें

डॉ. गार्गी नर्सिंग होम

71-ए, ऋषि मार्ग, शिवाजीनगर तिराहा (उमंग मैरिज होम के सामने)
साकेत, शाहगंज, आगरा-282 010

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त, प्रसूता एवं बाल चिकित्सा का विश्वसनीय स्थल

विशेष सुविधाएँ :

Mob. 9456460546

समस्त प्रसूति सम्बन्धी सुविधायें, महिला सम्बन्धी सभी प्रकार के ऑपरेशन
निःसन्तान दम्पत्ति (महिला एवं पुरुष) की चिकित्सा
नवजात शिशु के लिए : नर्सरी, फोटोथिरेपी, वार्मर/इन्क्यूबेटर, एक्सचेंज-ट्रान्सफ्यूजन (पीलिया में रक्त बदलने) आदि की सुविधा

डॉ. राजीव कृषक
MBBS (Hon, Gold Medalist) M.D. (Pediatrics)
नवजात शिशु बालरोग एवं Adolescents स्पेशलिस्ट
कन्सल्टेंट : पुष्पांजलि हॉस्पीटल, आगरा
भूतपूर्व विशेषज्ञः होली फेमिली एवं सुन्दरलाल जैन अस्पताल दिल्ली,
M.O.H. लीबिया सरकार एवं शान्ति मांगलिक अस्पताल, आगरा

डॉ. (श्रीमती) गार्गी गुप्ता कृषक
MBBS, M.S. (obs. & Gyn.)
प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ
(पूर्व कन्सल्टेन्ट : ऊषा देवी मिशन अस्पताल) आगरा
भू. पू. विशेषज्ञ : जयपुर गोल्डन
एवं बत्रा अस्पताल, दिल्ली

॥ श्री अक्रराय नमः ॥

वर्ष 2025-2026

अंक : 30

वार्ष्णेय कल्याण

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.) द्वारा वार्ष्णेय समाज का लोकप्रिय, स्मरणीय, संग्रहणीय एवं यशस्वी स्मृति प्रकाशन

विनम्र समर्पण

अपने परिवार से लेकर प्रत्येक स्तर पर समाज में, राष्ट्र में, राजनीति में, शिक्षा में, मानव मूल्यों को संचरण करने में परस्पर सानिध्य, स्तरीय विवेक, उचित मार्गदर्शन अनिवार्य होता है। इसमें भी 'सानिध्य' द्वेष एवं व्यक्तिगत हित रहित मानवता के अनेक घट को ध्यान में रखकर दिया जाना चाहिए।

सानिध्य विशेषांक

(सम्पूर्ण निष्ठा, विनम्रता एवं हृदय की भावनाओं से समर्पित)

परिवार के सदस्य अपने-अपने कार्यों में ही व्यस्त न रहें। कुछ समय परिवार के दूसरे सदस्यों के लिए भी लगाएँ। संवादहीनता की स्थिति न आए। एक-दूसरे के हाल-चाल पूछते रहें, यथोचित सहयोग-सहायता करते रहें।

प्रधान सम्पादक : **दिनेश चन्द्र गुप्ता 'पत्रकार'**

अधिमान्य भव्य संग्रहणीय प्रकाशन

E-पत्रिका

अनमोल वचन

(1) "मैं नहीं कर सकता, यह कभी न कहना। ऐसा कभी नहीं हो सकता क्योंकि तुम अनन्त स्वरूप हो। तुम्हारी जो इच्छा होगी वही कर सकते हो, तुम सर्वशक्तिमान हो।" —स्वामी विवेकानन्द

(2) "विश्वास, विश्वास, अपने आप पर विश्वास, परमात्मा के ऊपर विश्वास, यही उन्नति करने का एकमात्र उपाय है।" —स्वामी विवेकानन्द

(3) "भाग्य और पुरुषार्थ हर क्षण साथ-साथ चल रहे हैं। जो पुरुषार्थ को पकड़ लेता है वह वर्तमान क्षण में नया हो जाता है तथा जो भाग्य को पकड़ता है वह अतीत में रहता है तथा पुराना हो जाता है।" —स्वामी विवेकानन्द

(4) "साहसी बन सत्य जीवन में भरो, स्वप्न जग को दूर आँखों से करो। यदि न सम्भव, सत्य स्वप्नों को निहारो, प्रेम सेवा रूप में निज प्राण करो।" —स्वामी विवेकानन्द

(5) "प्रेम चतुर मनुष्यों के लिये नहीं, वह तो शिशु से सरल हृदयों की वस्तु है।" —आचार्य जयशंकर प्रसाद

(6) "सांसारिक आकांक्षा मनुष्य को बाँधती और घसीटती है।" —स्वामी रामतीर्थ

(7) "जिस मार्ग पर तुम्हारे पूर्वज चले हों, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नहीं होता।" —मनुस्मृति

(8) "महान संकल्प ही महान फल का जनक होता है।" —आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

(9) "मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसकी गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करोगे तो हिन्दी का दर्जा बढ़ेगा।" —महात्मा गाँधी

पंचतत्व से बना शरीर (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर)

भगवान शब्द भी पंच तत्व से बना है।

भ	ग	व	ा	न
भूमि	गगन	वायु	अग्नि	नीर

भगवान की रची हुई प्रकृति के तत्वों के अपमान से क्या हुआ

भूमि के अपमान से **भूकम्प**, गगन (आकाश) के अपमान से **उल्कापात**, वायु के अपमान से **सुनामी**, अग्नि के अपमान से **बम विस्फोट**, नीर (जल) के अपमान से अतिवृष्टि या अनावृष्टि। —'हिन्दू विश्व' से साभार

"हमारा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक अंग-संचालन, प्रत्येक विचार हमारे चित्त पर एक प्रकार का संस्कार छोड़ जाता है। यद्यपि ये संस्कार ऊपरी दृष्टि से स्पष्ट न हों, तथापि ये अवचेतन रूप से अन्दर ही अन्दर कार्य करने में पर्याप्त समर्थ होते हैं।" —स्वामी विवेकानन्दजी

पत्रिका परिवार

प्रधान सम्पादक :

दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'

एफ-98, ट्रांस यमुना कॉलोनी फेज-2, आगरा-282005 (उ. प्र.) मो. 9410839792

सम्पादक :

कुलदीप वार्ष्णेय

70, हरीश नगर, अमल गार्डन

सिकन्दरा-बोदला रोड, सिकन्दरा, आगरा-282007 (उ. प्र.) **मो.** 9756200955

मनोनीत विशिष्ट सदस्य

1.	श्री मंगल सेन गुप्ता	20, नटराज पुरम, कमला नगर, आगरा	9456803311
2.	ई. विनय कुमार वार्ष्णेय	5/99 बी, बिल्लोच पूरा, आगरा	9412721271
3.	ई. नेमी चंद गुप्ता	C-6F, न्यू आगरा, आगरा	9319105030
4.	ई. डी.सी. वार्ष्णेय	B-18, न्यू आगरा,	9412155816
5.	ई. एच. एस. वार्ष्णेय	F-302, कमला नगर, आगरा	7009832961
6.	श्री लव कुमार गुप्ता,	5/84, मदिया कटरा, आगरा	9319101955
7.	श्री मुनेन्द्र वार्ष्णेय	91A आलोक नगर, जयपुर हाउस, आगरा	9319619993
8.	श्री दिनेश चन्द्र गुप्ता (पत्रकार)	F-98, ट्रांस यमुना कालोनी, फेस 2, आगरा	9410839792
9.	श्री लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय	25, मधुवन एन्क्लेव, दयालबाग, आगरा	9412256520
10.	डा. अशोक वार्ष्णेय (पोलिपैक)	F-2, धाकरे एन्क्लेव, धौलपुर हाउस रावली आगरा	9319099241
11.	श्री प्रहलाद चन्द्र गुप्ता	17/39, टीला माईथान, आगरा।	9412064812
12.	श्री दीपक वार्ष्णेय	60, विजय नगर कॉलोनी आगरा।	9412255882
13.	डा. अशोक वार्ष्णेय हौम्यो	306, पर्ल टावर, गणपति क्लासिक, UPSIDC, सिकंदरा, आगरा	9412543646
14.	श्री अनिल कुमार वार्ष्णेय (सादाबाद वाले)	F-29, कमला नगर, आगरा।	9412723302
15.	श्री शैलेश वार्ष्णेय	46, तुलसी विहार, दयालबाग, आगरा।	9837090409
16.	श्री महेश चन्द वार्ष्णेय खादवाले	F-183 कमला नगर आगरा।	9412723301
17.	श्री पवन कुमार वार्ष्णेय (टिल्लू बाबा)	D-230 कमला नगर आगरा।	6398100581
18.	श्री त्रिलोक चन्द्र गुप्ता	C-173 केदार नगर, आगरा। 9412155772	
19.	श्री सुनील कुमार वार्ष्णेय	5/6 सेक्टर 16B पुष्पांजलि गार्डनिया, सिकन्दरा, आगरा	9319103005
20.	श्री मृदुल वार्ष्णेय	D-56 कर्मयोगी इन्कलेव, कमलानगर, आगरा।	9897264969
21.	श्री ई. प्रदीप कुमार वार्ष्णेय	5A, महात्मा गाँधी मार्ग, आगरा।	9837053777

महामन्त्र
ओउम् (ॐ) की अनन्त शक्ति

वेदों में भगवान का स्वरूप ॐ अक्षर ही है। वेदों का सारतत्व ओउम् ही है। ओउम् प्राणों का आधार है।

- प्रश्नोपनिषद में महर्षि पिप्लाद ने कहा था, 'अ' का अर्थ शारीरिक ध्यान 'उ' का अर्थ मानसिक ध्यान और 'म' का अर्थ है आध्यात्मिक ध्यान। ओउम् का अर्थ है अनन्त, नि:सीम, श्रेष्ठ। ओउम् वह शब्द है, जिसकी प्रतिध्वनि त्रिभुवन में गूँजती है।
- भगवद्गीता में 'अएम', उद्गीथ, एकाक्षर मंत्र, ओंकार, नादब्रह्म, पंचवर्ण, परमाक्षर, प्रणव, ब्रह्माक्षर, शब्द ब्रह्म, शब्दाक्षर, स्वर ब्रह्म भी कहा गया है। यह शब्द साक्षात भगवान का ही स्वरूप है।
- ओउम् आत्मा का लक्ष्य है, मुक्ति का साधन है। ब्रह्माजी ने कहा था कि ओउम् के तीन अक्षर अ, उ, म है जो क्रमश: ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद को सूचित करते हैं। ओउम् ही आत्मीय ध्वनि है। ॐ त्रिकालातीत सत्य है।
- ब्रिटेन के रिसर्च एण्ड इन्स्टीट्यूमट ऑफ न्यूरो साइंस के प्रमुख प्रो. जे. मार्गन ने सात वर्ष तक ॐ के उच्चारण के प्रभावों का अध्ययन करके बताया कि विभिन्न आवृत्तियों और ध्वनि के उतार चढ़ाव से पैदा होने वाली कम्पन क्रिया से मृत कोशिकाओं का पुनर्निर्माण हो जाता है। रक्त-विकार हाने नहीं पाता। मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, हृदय और पेट तक तीव्र तरंगों का संचार होता है। रक्त विकार दूर होकर स्फूर्ति बनी रहती है।
- अमेरिका में डॉ. हार्बर्ट बैंसन OM THERA- PY HOSPITAL संचालित कर रहे हैं। उनके अनुसार 'अ' की ध्वनि पेट से 'उ' की ध्वनि गले से तथा 'म' की ध्वनि नाक से उच्चारित होती है। इस क्रिया में नाभि मूल, पेट, स्नायु संस्थान, गला, मस्तिष्क का पूर्ण प्रयोग हो जाता है।
- न्यूयार्क के एक अस्पताल Columbia Press Biotarian Medical Centre में हृदय रोग पीड़ितों को ऑपरेशन से पूर्व अंगमर्दन, योग व ध्यान करने को कहा जाता है। सर्जरी से पहले 'ओउम्' का उच्चारण करने या सुनने से आत्मबल मिलता है और बुद्धि सिथर रहती है। हमारी आत्मा की शुद्धि के लिये एक सर्वश्रेष्ठ औषधि है 'ओउम्' नाम जो दुख का विनाशक है।

ऊँकार बिन्दु संयुक्त नित्यं ध्यायन्ति योगिना:।
कामद, मोक्षद चैव ओंकाराय नमो नम:॥

"योगी, वृत्त बिन्दु से परिपूर्ण ओंकार मन्त्र का प्रतिफल ध्यान करते हैं। सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण करने वाले एवं मोक्ष प्रदान करने वाले महामन्त्र 'ओउम्' को नमस्कार है।"

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका परिवार

दिनेश चन्द्र गुप्ता 'पत्रकार'
(प्रधान संपादक)

कुलदीप वार्ष्णेय
संपादक

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा क्षेत्र प्रमुख

वेद प्रकाश गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : दयालबाग)

विनोद कुमार गुप्ता (वर्क वाले)
(क्षेत्र प्रमुख : यमुना पार 2)

राजीव गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : माईथान)

पवन कुमार गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : कमला नगर)

राजेन्द्र कुमार वार्ष्णेय
(क्षेत्र प्रमुख : यमुना पार 1)

शुभम वार्ष्णेय
(क्षेत्र प्रमुख : बेलनगंज)

प्रवेन्द्र गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : सिकंदरा)

संजीव गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : मधु नगर)

अमित गुप्ता
(क्षेत्र प्रमुख : शाहगंज)

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा मनोनीत विशिष्ट सदस्य

मंगलसेन गुप्त
विशिष्ट सदस्य

ई. विनय कुमार वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

ई. एन. सी. गुप्ता
विशिष्ट सदस्य

ई. एच. एस. वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

डॉ. अशोक वार्ष्णेय (पौलीपैक)
विशिष्ट सदस्य

लक्ष्मीनारायन वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

लव कुमार वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

डॉ. अशोक वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

ई. डी. सी. वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

मुनेन्द्र वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

महेश चन्द्र वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

दिनेश चन्द्र गुप्ता 'पत्रकार'
विशिष्ट सदस्य

शैलेश वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

मृदुल वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

प्रहलाद चन्द्र गुप्ता
विशिष्ट सदस्य

अनिल कुमार वार्ष्णेय (सीमेंट वाले)
विशिष्ट सदस्य

सुनील कुमार वार्ष्णेय
(विशिष्ट सदस्य)

पवन कुमार वार्ष्णेय (टिल्लू बाबा)
(विशिष्ट सदस्य)

ई. प्रदीप कुमार वार्ष्णेय
विशिष्ट सदस्य

त्रिलोक चन्द गुप्ता
(विशिष्ट सदस्य)

दीपक गुप्ता
(विशिष्ट सदस्य)

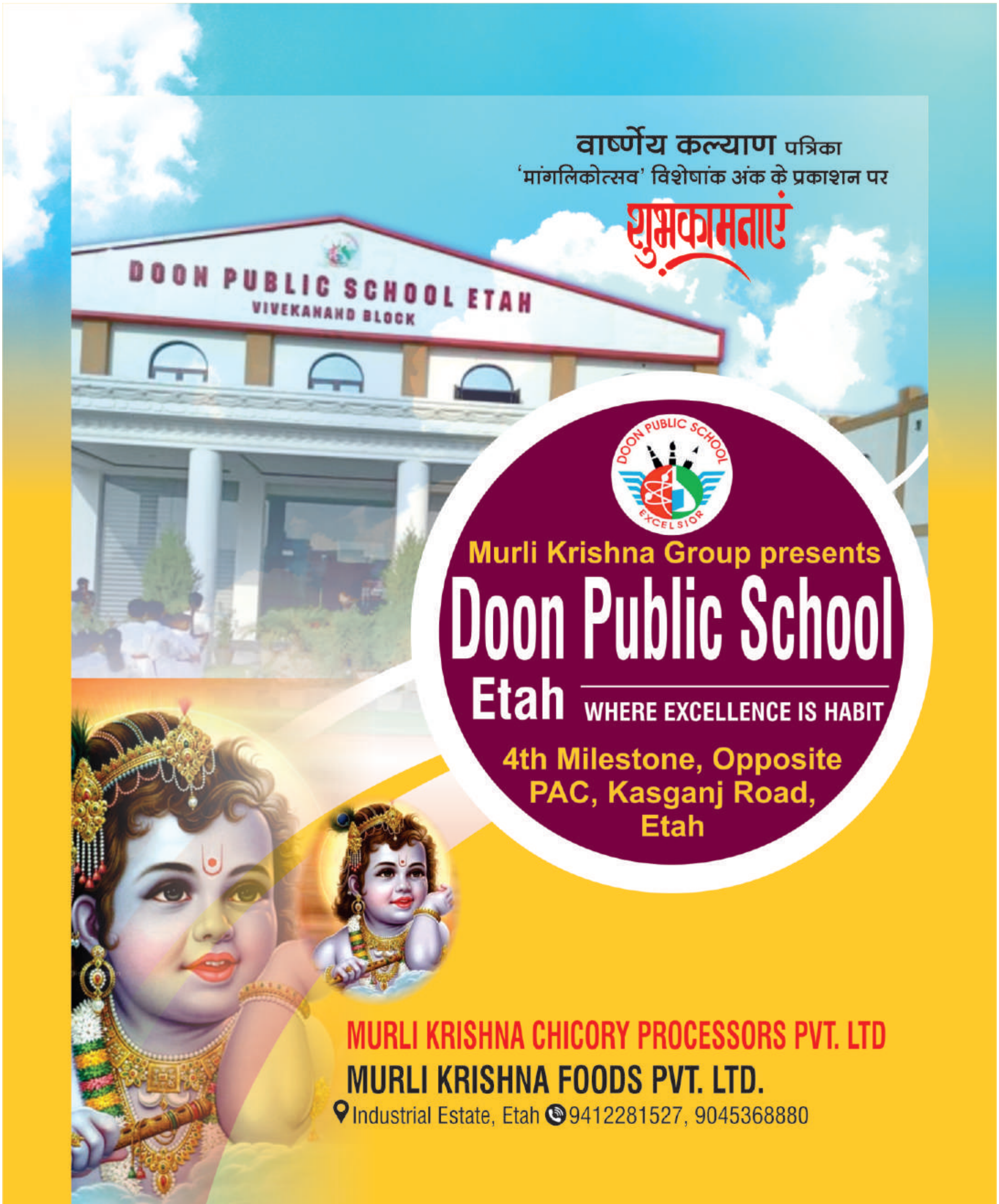
वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका
'मांगलिकोत्सव' विशेषांक अंक के प्रकाशन पर
शुभकामनाएं
DOON PUBLIC SCHOOL ETAH
VIVEKANAND BLOCK
DOON PUBLIC SCHOOL
EXCELSIOR
Murli Krishna Group presents
Doon Public School
Etah
WHERE EXCELLENCE IS HABIT
4th Milestone, Opposite
PAC, Kasganj Road,
Etah
MURLI KRISHNA CHICORY PROCESSORS PVT. LTD
MURLI KRISHNA FOODS PVT. LTD.
Industrial Estate, Etah 9412281527, 9045368880

श्री वार्ष्णेय सभा के पदाधिकारी

दाऊदयाल गुप्ता (अध्यक्ष)

विनोद कुमार गुप्ता (मंत्री)

राकेश बाबू गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

ई. सुरेंद्र कुमार वार्ष्णेय (वरिष्ठ उपाध्यक्ष)

लक्ष्मी नारायन वार्ष्णेय (कनिष्ठ उपाध्यक्ष)

भानू प्रकाश वार्ष्णेय (सहमंत्री)

अनिल कुमार गुप्ता 'आर्य' (ऑडीटर)

पंकज गुप्ता (कोठारी)

संजय वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

हेमन्त वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

दीपक कुमार वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

मदनमोहन वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

मनोज गुप्ता (सदस्य कार्यकारिणी)

कालीचरन गुप्ता (सदस्य कार्यकारिणी)

कुलदीप वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

कृष्ण मोहन गुप्ता (मीडिया प्रभारी)

श्री वार्ष्णेय महिला मण्डल

मंजू वार्ष्णेय (अध्यक्ष)

रजनी वार्ष्णेय (वरि. उपाध्यक्ष)

रश्मि वार्ष्णेय (कनिष्ठ उपाध्यक्ष)

रीनू वार्ष्णेय (मंत्री)

सीमा वार्ष्णेय (कोषाध्यक्ष)

सरिता वार्ष्णेय (सह-मंत्री)

मेघा वार्ष्णेय (संगठन मंत्री)

नीतू गुप्ता (प्रचार मंत्री)

रीना गुप्ता (कार्यकारिणी सदस्य)

कुमकुम वार्ष्णेय (कार्यकारिणी सदस्य)

अंजना वार्ष्णेय (कार्यकारिणी सदस्य)

मोहिनी वार्ष्णेय (कार्यकारिणी सदस्य)

डिम्पल वार्ष्णेय (कार्यकारिणी सदस्य)

सीमा गुप्ता (कार्यकारिणी सदस्य)

सुनीता अत्री (कार्यकारिणी सदस्य)

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

डॉ. निमता वार्ष्णेय
पेन फिजीशियन एवं इन्टरवैन्शन स्पेशिलिस्ट
Dr. Nimta Varshneya
D.N.B. (Anesthesia)
Pain Physician & Pain Intervention Specialist

डॉ. अंकित वार्ष्णेय,
हड्डी विशेषज्ञ एवं जौइन्ट रिप्लेशमैन्ट चिकित्सक
Dr. Ankit Varshneya
M.S. (Ortho), D. Orth
Fellowship in joint replacment (Laud Clinic Mumbai)
Fellowship in Pelvi Acetabular Surgery (PGI Chandigarh)

दर्द का सही इलाज आधुनिक दवाइयों एवं इन्जैक्शन के द्वारा

• सिरदर्द / माइग्रेन • नसों का दर्द • गर्दन का दर्द • स्लिप डिस्क • ट्राईजिमाइनल न्यूरलजिया

• जोड़ों का प्रत्यारोपण • पुराने फैक्चर एवं एक्सीडैन्ट केस • हड्डी में मवाद • गठिया का इलाज एवं हड्डी से जुड़ी किसी भी बीमारी के लिए सम्पर्क करें।

नोट – वार्ष्णेय सभा के सभी सदस्यों को उचित डिस्काउन्ट दिया जायेगा

हमारे यहाँ सभी प्रकार की कैशलैस (Cashless/TPA) एवं आयुष्मान भारत कार्ड की सुविधा उपलब्ध है।

CENTRE FOR TRAUMA AND JOINT REPLACEMENT

CENSICO INTERNATIONAL

N.A.B.H. ACCREDITED HOSPITAL

PRADEEP KUMAR VARSHNEYA

5-A, Mahatma Gandhi Road, Near St. John's College, AGRA-282 002
E-mail : drankitorth@gmail.com, www.traumaandjointcentre.com
Mob. : 08755053777

3176

श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चेरिटेबिल ट्रस्ट (अक्रूर वाटिका, आगरा) प्रबंध कार्यकारिणी

ई. विनय कुमार वार्ष्णेय (सरंक्षक)

डॉ. अशोक वार्ष्णेय (अध्यक्ष)

ई. डी सी वार्ष्णेय (सचिव)

विनोद कुमार गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

ई. प्रदीप कुमार वार्ष्णेय (वरिष्ठ उपाध्यक्ष)

अनिल कुमार वार्ष्णेय (सीमेंट वाले) कनिष्ठ उपाध्यक्ष

योगेश कुमार वार्ष्णेय सह सचिव

संजीव बाबू गुप्ता संगठन सचिव

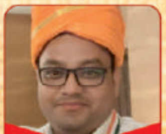
पंकज वार्ष्णेय कार्यालय प्रभारी/कोठारी

प्रहलाद चन्द्र गुप्ता सदस्य कार्यकारिणी

डॉ. प्रकाश चन्द वार्ष्णेय सदस्य कार्यकारिणी

दीपक कुमार वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

हेमन्त वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

अंकुर वार्ष्णेय (सदस्य का. का.)

श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन (अक्रूर मंदिर, आगरा) प्रबंध कार्यकारिणी

ई. एन सी गुप्ता (अध्यक्ष)

ई. योगेश कुमार गुप्ता (संस्थापक सदस्य)

अंकित गुप्ता (संस्थापक सदस्य)

मुनेन्द्र वार्ष्णेय (उपाध्यक्ष)

ई. पी एस गुप्ता (सचिव)

एड. राजीव गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

सुनील कुमार वार्ष्णेय (बहजोई वाले) (कोठारी)

लक्ष्मी नारायन वार्ष्णेय (सदस्य का. का.)

गिरिराज किशोर गुप्ता (सदस्य का. का.)

घनश्याम वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

डॉ. अशोक वार्ष्णेय (पौलीपैक) (सदस्य कार्यकारिणी)

ई. एच. एस. वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

अनिल कुमार वार्ष्णेय (सदस्य कार्यकारिणी)

संजीव बाबू गुप्ता (सदस्य कार्यकारिणी)

संजय गुप्ता (सदस्य कार्यकारिणी)

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा विधि प्रकोष्ठ समिति

ई. विनय कुमार वार्ष्णेय चेयरमैन (श्री वार्ष्णेय विधि प्रकोष्ठ)

महेश चन्द्र वार्ष्णेय (सदस्य विधि प्रकोष्ठ)

अनिल कुमार वार्ष्णेय (सदस्य विधि प्रकोष्ठ)

वार्ष्णेय परिवार कल्याण निधि

प्रहलाद चन्द्र गुप्ता चेयरमैन

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

GHUREY LAL MAHESH CHANDRA VARSHNEY

Mahesh Chandra Varshney
Mob. : 9279765209

Fertilizers Distributor

Mahesh Chandra Varshney

Avishita Business House

Shop No. 1, Gori Ram Road, Bhagupur
Etmadpur, Agra

Gaurav Varshney
Mob. : 9412723310

Distributer of
Major Crops Seeds

Gaurav Varshney

LAKSHYA INTERNATIONAL

Deepak Varshney
Mob. : 9412723304

125, New Market, Jeoni Mandi,
AGRA-282004 (U.P.)

Suppliers of
TG Chemicals

Deepak Varshney

वार्षिकोत्सव 2025 की प्रबन्ध समितियाँ

डॉ. अशोक वार्ष्णेय
स्वागताध्यक्ष

दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'
समन्वयक

संजीव बाबू गुप्ता
कार्यक्रम संयोजक

मदन मोहन गुप्ता
भोजन व्यवस्था

रविन्द्र गुप्ता
भोजन व्यवस्था

राजीव गुप्ता
भोजन व्यवस्था

हेमन्त वार्ष्णेय
पुरुस्कार

भानू प्रकाश वार्ष्णेय
पुरुस्कार

दीपक वार्ष्णेय
वेजबैनर

शुभम वार्ष्णेय
वेजबैनर

अनिल गुप्ता आर्य
प्रतिभाशाली छात्र-छात्रायें

डॉ. शशि प्रभा वार्ष्णेय
प्रतिभाशाली छात्र-छात्रायें

स्वेता वार्ष्णेय
प्रतिभाशाली छात्र-छात्रायें

ई. सुरेन्द्र वार्ष्णेय
खेलकूद एवं मंच व्यवस्था

भानू प्रकाश वार्ष्णेय
खेलकूद एवं मंच व्यवस्था

मनोज गुप्ता
बृद्धजन सम्मान

ई. डी. सी. वार्ष्णेय
बृद्धजन सम्मान

संजय वार्ष्णेय
सांस्कृतिक कार्यक्रम

रीनू वार्ष्णेय
सांस्कृतिक कार्यक्रम

डिम्पल वार्ष्णेय
सांस्कृतिक कार्यक्रम

कशिश गुप्ता
सांस्कृतिक कार्यक्रम

ई. पी. एस. वार्ष्णेय
अतिथि सत्कार

कालीचरन गुप्ता
अतिथि सत्कार

मृदुल वार्ष्णेय
अतिथि सत्कार

सुनील वार्ष्णेय
बहजोई अतिथि सत्कार

लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय
अतिथि सत्कार

ओमवीर वार्ष्णेय
अतिथि पंजीकरण

पंकज वार्ष्णेय
अतिथि पंजीकरण

आर. बी. गुप्ता
सूरसदन व्यवस्था

कुंज विहारी गुप्ता
अनुशासन समिति

अमित वार्ष्णेय
अनुशासन समिति

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

BPS

BAJRANG POLY SACKS

Manufacturer of :

Paper Laminated HDPE Fabric Bag for Milk Dairy Industry,
Laminated HDPE Fabric Bag, HDPE / PP Fabric Bag

Mridul Varshney
M. 9897264969

Er. Nipur Varshney
M. 9760344770
(Data Analyst)

Er. Kushal Varshney
M. 9760156934

Works : 45A-47A, Village Poiya, Near Kusum Petrol Pump, Nandlalpur, Agra-282007

Resi.: O-56, Karmyogi Enclave, Near Fountain, Kamla Nagar, Agra-282005

E-mail : bajrangpolysacks@gmail.com

3102

वार्ष्णेय कल्याण के प्रेरणा स्रोत–संरक्षक सदस्य

डा. अनिल कुमार वार्ष्णेय
ई. हरीप्रकाश गुप्ता (अलीगढ़)
अनिल कुमार वार्ष्णेय हाथरस
सोम प्रकाश वार्ष्णेय सादाबाद
मुनेन्द्र कुमार वार्ष्णेय
रामगोपाल वार्ष्णेय (हाथरस)
सियाराम गुप्ता (हैदराबाद)

पवन कुमार वार्ष्णेय सहावर
वेद प्रकाश वार्ष्णेय पलवल
अनिल कुमार वार्ष्णेय सादाबाद
देवेन्द्र कुमार वार्ष्णेय जलेसर
उमेश चन्द्र गुप्ता (जहाँगीराबाद)
रामकृष्ण वार्ष्णेय (अलीगढ़)
सुभाष चन्द्र गुप्ता आगरा

हेमन्त वार्ष्णेय बुलन्दशहर
इ. नेमीचन्द्र गुप्ता
प्रेमशंकर वार्ष्णेय एटा
अशोक कु. वार्ष्णेय चंदपा (हाथरस)
ई.हरीशंकर वार्ष्णेय आगरा
केशव कुमार वार्ष्णेय अलीगढ़
पवन कुमार गुप्ता आगरा

अंकित वार्ष्णेय हाथरस
सुनील कुमार वार्ष्णेय
राजकुमार गुप्ता सहावर, एटा
अनिल कुमार वार्ष्णेय आगरा
मंगलसैन गुप्ता (हाथरस)
विजय कुमार वार्ष्णेय एटा
संजीव कुमार वार्ष्णेय (बंटी बाबू, अवागढ़)

लवकुमार वार्ष्णेय
सत्य प्रकाश वार्ष्णेय अनूपशहर
सतेन्द्र कुमार वार्ष्णेय (फिरोजाबाद)
देवेन्द्र कुमार वार्ष्णेय (फिरोजाबाद)
दिनेश कुमार वार्ष्णेय (हैदराबाद)
मनोज वार्ष्णेय (हाथरस)
वासुदेव प्रसाद कसेरे (अलीगढ़)

एम.सी.गुप्ता (मुम्बई)
गनेशीलाल वार्ष्णेय आगरा
राजेन्द्र कु. वार्ष्णेय आगरा
पवन कुमार वार्ष्णेय अलीगढ़
श्रीमती सावित्री वार्ष्णेय (अलीगढ़)
शिवेन्द्रमणि गुप्ता (भीलवाड़ा)
ई. विनय कुमार वार्ष्णेय

वार्ष्णेय कल्याण के प्रेरणा स्रोत–संरक्षक सदस्य

मुकेश कु. गुप्ता हाथरस	डॉ.प्रमोद शंकर वार्ष्णेय बम्बई	रतन कु. वार्ष्णेय आगरा	सुभाषचन्द गुप्ता आगरा	वेद प्रकाश गुप्ता आगरा	योगेश बाबू वार्ष्णेय हाथरस	नवीन कु. वार्ष्णेय चौमुहां, मथुरा

अमोल कुमार वार्ष्णेय हाथरस/सहावर	इं. उमेश चन्द्र द्वादश श्रेणी गोरखपुर	के. एन. वार्ष्णेय ग्वालियर	स्वतंत्र कुमार गुप्ता हाथरस	डॉ. अशोक कु. गुप्ता किरावली	अशोक कुमार गुप्त हाथरस	सतीश चन्द्र वार्ष्णेय चौमुहां, मथुरा

विनोद कु. वार्ष्णेय वृन्दावन	मुकेश आँधीवाल हाथरस	अमन कुमार गुप्ता अलीगढ़	प्रहलाद कु. वार्ष्णेय चौमुहां	दिनेश कु. वार्ष्णेय हाथरस	राजेन्द्र कु. वार्ष्णेय सासनी	मुन्नालाल गुप्ता नौहझील

प्रवीन कुमार (चिंटू बाबू) हाथरस	मुकेश वार्ष्णेय सासनी	त्रिलोक चन्द गुप्ता	सत्यप्रकाश वार्ष्णेय सासनी	विशाल वार्ष्णेय एटा	जगमोहन वार्ष्णेय अवागढ़	अजय कुमार गुप्ता हाथरस

सुरेश चन्द्र गुप्ता आगरा	नेत्रपाल गुप्ता वसुन्धरा	नरेन्द्र कु. वार्ष्णेय छाता	रतन कुमार वार्ष्णेय सासनी	पवन कुमार गुप्ता चदौंसी	इं. त्रिलोक चन्द्र गुप्ता सुरीर	सुम्मेर चन्द्र वार्ष्णेय एटा

मुक्तेश कुमार वार्ष्णेय भोपाल	विपिन कुमार सर्राफ अलीगढ़	एल. डी. वार्ष्णेय अलीगढ	सत्येन्द्र आर्य सरायतरीन	भुवनेश चौधरी गाँधीनगर, गुजरात	अतुल कुमार वार्ष्णेय हाथरस	सत्य प्रकाश गुप्ता आगरा

लक्ष्मणदेव शास्त्री फतेहपुरसीकरी	डॉ. शैलेन्द्र गुप्ता भरतपुर	डॉ. अशोक वार्ष्णेय आगरा	नरेन्द्र कु. गुप्ता मथुरा	मनोज कुमार वार्ष्णेय वजीरगंज, बदायूँ	कुमुद किशोर 'भारतीय' डिबाई, बुलन्दशहर	डॉ. रामबाबू वार्ष्णेय दूरा

वार्ष्णेय कल्याण के प्रेरणा स्रोत–संरक्षक सदस्य

इं. के.एम. वार्ष्णेय | कैलाश चन्द्र गुप्ता, आगरा | हरिओम वार्ष्णेय | सुरेन्द्र कु. वार्ष्णेय, कोसीकलां | शंकर लाल गुप्ता, नोयडा | फूलप्रकाश वार्ष्णेय, चंदौसी | हरिओम वार्ष्णेय, बबराला

डॉ. डी. सी. वार्ष्णेय, अलीगढ़ | बी. एम. वार्ष्णेय, जलेसर | देवेन्द्र कुमार गुप्ता, हाथरस | राजीव गुप्ता | मुकेश वार्ष्णेय, नोयडा | सुधीश वार्ष्णेय, अलीगढ़ | आर. सी वार्ष्णेय, अलीगढ़

प्रेमस्वरूप गुप्ता, अलीगढ़ | ई. एन. के. गुप्ता, नोयडा | डा. एस. सी. गुप्ता, आगरा | के. के. वार्ष्णेय, कोसीकलाँ | हरीबाबू वार्ष्णेय, कनाडा | विज्ञान गोटेवाल, टेक्सास यू एस ए | त्रिवेदी प्रसाद, सरायतरीन

डी. के. वार्ष्णेय, नोयडा | इन्द्र कुमार गुप्ता, अलीगढ़ | हरीश चन्द्र वार्ष्णेय, अलीगढ़ | सुभाष चन्द्र गुप्ता, पलवल | डा.आई.सी.गुप्ता, जोधपुर | ऋषि कुमार वार्ष्णेय, गंजडुण्डवारा, कासगंज | प्रदीप ख्यालीराम, अलीगढ़

राकेश कुमार वार्ष्णेय, सिकन्दराराऊ | प्रहलाद चन्द्र गुप्ता, आगरा | इ. तपेन्द्र गुप्ता, आगरा | इं.प्रदीप कुमार वार्ष्णेय, आगरा | डॉ. विजेन्द्र कु. गुप्ता, मथुरा | कृष्णा गुप्ता, अलीगढ़ | मुकेश वार्ष्णेय, बाजना,

बल्देव प्रसाद वार्ष्णेय, टेंटीगाँव | सुरेश चन्द्र वार्ष्णेय, अलीगढ़ | शरद कुमार वार्ष्णेय, अलीगढ़ | राजीव आँधीवाल, नई दिल्ली | अखिलेश कुमार, हाथरस | बिशन वार्ष्णेय, लाडपुर, हाथरस | सुधीर कु.वार्ष्णेय, एटा

जितेन्द्र कु. पौद्दार, फिरोजाबाद | हरिओम गुप्ता, मथुरा | हरिस्वरूप गुप्त, चौमुहाँ, मथुरा | छोटे लाल वार्ष्णेय, बाजना, मथुरा | रवीन्द्र कुमार गुप्ता, अलीगढ़ | पंकज वार्ष्णेय | प्रेमचन्द्र वार्ष्णेय (गुड्डू भाई)

वार्ष्णेय कल्याण के प्रेरणा स्रोत–संरक्षक सदस्य

ई.देशबन्धु गुप्ता आगरा	प्रेमशंकर गुप्ता आगरा	प्रेममोहन वार्ष्णेय आगरा	पी. एच. गुप्ता मुम्बई	किशन लाल गुप्ता आगरा	संजय गुप्ता आगरा	राजेन्द्र कुमार वार्ष्णेय सासनी

मुकुट शंकर गोटेवाल आगरा	दीपक गुप्ता आगरा	अशोक कुमार वार्ष्णेय हाथरस	डॉ. राजबहादुर गुप्ता	चैतन्य स्वरूप वार्ष्णेय अतरौली	दिनेश कुमार गुप्ता अलीगढ़	विवेक गुप्ता अलीगढ़

नन्नूमल गुप्ता हाथरस	के. सी वार्ष्णेय आगरा	इं. के. बी. वाष्णेय अलीगढ़	डॉ.ए.एस.वार्ष्णेय आगरा	आर.सी.वार्ष्णेय आगरा	अजय कु. वार्ष्णेय कोसीकलां	भीक चन्द गुप्ता मथुरा

सतीश प्रकाश वार्ष्णेय चौमुहाँ	मुरारीलाल वार्ष्णेय कासगंज	शिवकुमार वार्ष्णेय हाथरस	गंगासरन वार्ष्णेय हाथरस	जय प्रकाश गुप्ता फरीदाबाद	दुर्गाप्रसाद वार्ष्णेय चौमुहाँ	डॉ. श्रीकान्त वार्ष्णेय ढोल, मुजफ्फरपुर, बिहार

रामगोपाल वार्ष्णेय चौमुहाँ	महेन्द्र कुमार वार्ष्णेय गाजियाबाद	उमेश चन्द्र गुप्ता पलवल	फूलचन्द्र वार्ष्णेय मथुरा	यतेन्द्र कुमार वार्ष्णेय हाथरस	नवल किशोर वार्ष्णेय हाथरस	डॉ. भगवतस्वरूप गुप्ता चौमुहाँ

राकेश कु. गुप्ता आगरा	नीरज कु. वार्ष्णेय सासनी	प्रवीन कुमार हाथरस	रमाशंकर वार्ष्णेय कासगंज	जगदीश प्रसाद वार्ष्णेय चौमुहाँ	फूल चन्द वार्ष्णेय छाता	सत्य प्रकाश वार्ष्णेय जलेसर

वार्ष्णेय कल्याण के प्रेरणा स्रोत—संरक्षक सदस्य

हरीबाबू गुप्ता मथुरा | चन्द्र किशोर (अलीगढ़) | डा. राजेश गुप्ता आगरा | ई. के. सी. गुप्ता आगरा | प्रमोद कुमार गुप्ता आगरा | इ. गोविन्द प्रसाद आगरा | इ. प्रदीप रत्नम आगरा

हृदेश कुमार वार्ष्णेय कासगंज | राकेश कुमार वार्ष्णेय एटा | गिरजेशचन्द वार्ष्णेय कासगंज | कालीचरन वार्ष्णेय कासगंज | डॉ. डी.डी. गुप्ता अलीगढ़ | डॉ. नीरज साँई बदायूँ | पूनम बजाज अलीगढ़

श्रीनिवास वार्ष्णेय (सी.ए.) मथुरा | गौरव वार्ष्णेय अलीगढ़ | अजय वार्ष्णेय अलीगढ़ | प्रमेश वार्ष्णेय मथुरा | मूल चन्द्र वार्ष्णेय मथुरा | रवीन्द्र कुमार गुप्ता मथुरा | नवीन प्रकाश गुप्ता अलीगढ़

ओम प्रकाश वार्ष्णेय अलीगढ़ | विजय कुमार गुप्ता फरीदाबाद | श्याम सुंदर वार्ष्णेय अलीगढ़ | अनिल कुमार वार्ष्णेय अलीगढ़ | ओम प्रकाश गुप्ता एटा | शैलेन्द्र कुमार वार्ष्णेय सादाबाद | संजय प्रकाश वार्ष्णेय लखनऊ

विनोद कु. गुप्ता अलीगढ़ | रमाशंकर वार्ष्णेय कासगंज | प्रदीप कु. वार्ष्णेय हाथरस | शेर बहादुर वार्ष्णेय सुरीर | डॉ. हरिश्चन्द्र वार्ष्णेय सुरीर | राजकुमार गुप्ता अलीगढ़ | सुनील कुमार वार्ष्णेय सादाबाद

राजकुमार गुप्ता मथुरा | प्रदीप कुमार वार्ष्णेय अलीगढ़ | सूरज वार्ष्णेय सासनी | राजाबाबू वार्ष्णेय कासगंज | उमाशंकर गुप्ता मथुरा | देवेन्द्र कुमार गुप्ता भरतपुर | जितेन्द्र वार्ष्णेय कासगंज

नरेन्द्र वार्ष्णेय हाथरस | नवीन कुमार वार्ष्णेय कासगंज | विनोद कुमार गुप्ता बहजोई | चेतन प्रकाश वार्ष्णेय आगरा | सुनील कुमार वार्ष्णेय एटा | कुलदीप कुमार गुप्ता इस्लामनगर

गुप्ता बुक डिपो एण्ड स्टेशनरी मार्ट

हार्दिक शुभकामनायें

A-9/25, मोती बाग, यमुना ब्रिज, आगरा-6

नोट—हमारे यहाँ पर नर्सरी से लेकर B.A., B.Com., B.Sc., व M.A., M.Com., M.Sc. आदि की पुस्तकें, गाइडें, नोट्स, सैम्पल पेपर एवं सभी कॉलेजों व स्कूलों की स्टेशनरी उचित मूल्य पर मिलती है।

राजकुमार गुप्ता
7217511109

गुप्ता फैन्सी जनरल स्टोर एवं लेडिज कार्नर

B-9/25, मोती बाग, यमुना ब्रिज, आगरा-6

नोट—सभी प्रकार के कॉस्मेटिक आइटम, हौजरी, गेम, टॉयज, कन्फैक्शनरी आदि उचित मूल्य पर उपलब्ध रहती है।

पवन कुमार गुप्ता
8755754422

नववर्ष पर ग्रीटिंग कार्ड, होली पर्व पर फैन्सी पिचकारियाँ, रक्षाबन्धन पर्व पर फैन्सी राखियाँ, जन्माष्टमी पर्व पर खिलौने, दीपावली पर्व पर मुर्गा ब्रान्ड आतिशबाजी उचित मूल्य पर मिलती है।

आशीष वार्ष्णेय
8445441577

गुप्ता बुक डिपो एण्ड स्टेशनरी मार्ट

G-14, ट्रान्स यमुना कॉलोनी फेस II, आगरा-6

नोट—हमारे यहाँ पर सभी कॉलेजों व स्कूलों की किताबें, कॉपियाँ एवं आफिसों की स्टेशनरी मिलने का उचित स्थान है।

सभी कॉलेजों व स्कूलों की ड्रैस उचित मूल्य पर मिलती है।
हर प्रकार की किताबें उपलब्ध हैं।

अभिनव गुप्ता
8006996343

हार्दिक शुभकामनायें

ॐ कन्वेसर (कन्वेसिंग एजेण्ट)

सभी प्रकार के दाल एवं चावल के थोक एजेण्ट एवं विक्रेता

कार्यालय : दुकान सं. 4, प्रथम तल, राधेश्याम मार्केट, मोतीगंज, आगरा

ओम ट्रेडिंग कम्पनी

प्रतिष्ठान दुकान सं. 182, मोतीगंज, आगरा

विकास वार्ष्णेय
9412258536, 9368969799

अवकाश वार्ष्णेय
9319106113, 9259494009

आवास : 11/41 बी, जी. टी. गली, रामबाग, आगरा-282006

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा रजि. सं. 467

7, शीतलाधाम कॉलोनी, सरला बाग एक्स., दयालबाग, आगरा मो. 9412167408, 8630446752

Email : srivarshneysabhaagra@gmail.com

कार्यकारिणी

अध्यक्ष

दाऊदयाल गुप्ता

ए-46-47, MIG शास्त्रीपुरम्,
सिकन्दरा, आगरा
फोन : 9997398164

मंत्री

विनोद कुमार गुप्ता

7, शीतलाधाम, सरलाबाग एक्स,
दयालबाग, आगरा-282005
फोन : 9412167408, 8630446752

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

ई. सुरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय

604, मंगलम आधार, सिकन्दरा, आगरा
फोन : 9897016490

कनिष्ठ उपाध्यक्ष

लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय

82, शम्भू कुंज, कमला नगर, आगरा
मोबा. 9412811092

सहमंत्री

भानू प्रकाश वार्ष्णेय

एच-52, राधा विहार, कमला नगर
आगरा मो. 9719289080

कोषाध्यक्ष

आर. वी. गुप्ता

706, सेक्टर-14, आवास विकास,
सिकन्दरा, आगरा फोन. 9412256329

ऑडीटर

अनिल गुप्ता आर्या

1ए, पंचवटी, श्यामनगर, विनय नगर,
शाहगंज, आगरा मोबा. 8218776073

कोठारी

पंकज गुप्ता

63बी/674, मुस्तफा क्वार्टर, न्यू जनता
कॉलोनी, आगरा मो : 8126483518

सदस्य कार्यकारिणी

हेमन्त वार्ष्णेय	ए-435, ट्रांस यमुना कॉलोनी, आगरा	9412161248
संजय वार्ष्णेय	22, राधिका विहार, पश्चिमपुरी, सिकन्दरा, आगरा	9719311424
दीपक कुमार वार्ष्णेय	सुज्ञान भवन, 29, तिरुपति रेजीडेंसी कॉलोनी, दहतोरा, आगरा	7017167918 8126060160
मदनमोहन वार्ष्णेय	37/319 सी, नगलापदी, न्यू आगरा, आगरा	9259144555
मनोज गुप्ता	37/331, सुपर मार्केट, नगलापदी, न्यू आगरा, आगरा	9219848171
कालीचरन गुप्ता	31, शिवपुरम कॉलोनी, पश्चिमपुरी, आगरा	9368002223
कुलदीप वार्ष्णेय	70, हरीश नगर, अमल गार्डन, सिकंदरा, आगरा	9756200955

: मीडिया प्रभारी :

कृष्ण मोहन गुप्ता सी-508, अपर्णा पंचशील अपार्टमेन्ट, सैक्टर-16बी, आ. वि. कॉलोनी, सिकन्दरा, आगरा-7 मो. 9410663596, 9412164996

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि०)

वार्षिकोत्सव, 2025 की नामित प्रबन्ध समितियाँ

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा की एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें सदैव की भांति वार्षिकोत्सव को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया। इसमें सज्जनों को सर्वसम्मिति से दायित्व सौंपा गया है।

स्वागताध्यक्ष

डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय (होम्यो.)

समन्वयक

दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'

कार्यक्रम संयोजक

संजीव बाबू गुप्ता

1. भोजन व्यवस्था	मदनमोहन वार्ष्णेय, रविन्द्र गुप्ता, राजीव गुप्ता
2. पुरुस्कार समिति	हेमन्त वार्ष्णेय, भानु प्रकाश वार्ष्णेय
3. बैज बैनर समिति	दीपक वार्ष्णेय, शुभम् वार्ष्णेय
4. प्रतिभाशाली छात्र/छात्राएँ	अनिल गुप्ता, डॉ. शशिबाला वार्ष्णेय, स्वेता वार्ष्णेय
5. खेलकूद समिति	ई. सुरेन्द्र वार्ष्णेय, भानु प्रकाश वार्ष्णेय
6. मंच व्यवस्था समिति	ई. सुरेन्द्र वार्ष्णेय, भानु प्रकाश वार्ष्णेय
7. वृद्धजन सम्मान समिति	मनोज कुमार गुप्ता, ई. डी. सी. वार्ष्णेय
8. सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति	संजय वार्ष्णेय, रीनू वार्ष्णेय, डिम्पल वार्ष्णेय, कशिश गुप्ता
9. अतिथि सत्कार समिति	ई. पी.एस. गुप्ता, कालीचरन गुप्ता, मृदुल वार्ष्णेय, सुनील वार्ष्णेय, (वहजोई), लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय
10. अतिथि पंजीयन	ओमवीर वार्ष्णेय, अमित वार्ष्णेय, पंकज वार्ष्णेय
11. सुरसदन व्यवस्था	आर. बी. गुप्ता
12. अनुशासन समिति	कुंजविहारी गुप्ता, अमित वार्ष्णेय

"अग्निहोत्रं तु गायत्री मंत्रेण विधिवत् कृतम्।
सर्वेष्व वसरेष्वेव शुभमेव मतं बुधैः॥" —गायत्री संध्या

गायत्री मंत्र से विधिपूर्वक किया गया अग्निहोत्र (यज्ञ) सब अवसरों पर विद्वानों ने शुभ माना है।

हिन्दू धर्म में समूची सृष्टि को यज्ञ माना गया है। यज्ञ यानी एकाग्रचित्त होकर ब्रह्म का साक्षात्कार-शुरू में ब्रह्म का अर्थ था मंत्र नैमित्तिक यज्ञ''

क्षेत्र विभाजन

आगरा जनपद को 8 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। क्षेत्र प्रमुख एवं कार्यकारिणी सदस्य आपसे प्रकाशनार्थ सामग्री परिवार सम्बन्धी सूचना एवं शुल्क दान तथा विज्ञापन राशि प्राप्त करने एवं पारिवारिक विवरण भरने के लिए वार्ष्णेय सभा की ओर से अधिकृत हैं।

क्षेत्र नं. 1 यमुना पार (A)	क्षेत्र प्रमुख—**राजेन्द्र कु. वार्ष्णेय** एम–23, महावीर नगर, फिरोजाबाद रोड, आगरा। मो. 9897059962
(B)	क्षेत्र प्रमुख—**विनोद कु. गुप्ता** (वर्फ वाले) माखन विहार कॉलोनी, नाऊ की सराय, जलेसर रोड, आगरा मो. 7464807610
क्षेत्र नं. 2 कमला नगर	क्षेत्र प्रमुख—**पवन कुमार गुप्ता** E-673, कमलानगर, आगरा मोबा. 9411001982
क्षेत्र नं. 3 दयालबाग	क्षेत्र प्रमुख—**वेद प्रकाश गुप्ता,** 37/141, सरननगर, दयालबाग, आगरा मोबा. 9358857791
क्षेत्र नं. 4 माईथान	क्षेत्र प्रमुख—**राजीव गुप्ता** 24/168, विन्दागंज, नाला नई वस्ती, गुदड़ी मंसूर खाँ आगरा मो. 7895323934
क्षेत्र नं. 5 बेलनगंज	क्षेत्र प्रमुख—**शुभम वार्ष्णेय** 24/42, कटरा काछियान, गुदड़ी मंसूर खाँ आगरा मो. 8791444524
क्षेत्र नं. 6 शाहगंज	क्षेत्र प्रमुख—**अमित गुप्ता** 27, क्षमा एन्कलेव, मारुति स्टेट, बोदला, आगरा। मो. 706097418
क्षेत्र नं. 7 मधूनगर	क्षेत्र प्रमुख—**संजीव कुमार गुप्ता** 37A/21K, मधू नगर, आगरा मोबा. 6398652241
क्षेत्र नं. 8 सिकन्दरा	क्षेत्र प्रमुख—**प्रवेन्द्र गुप्ता** 1154/7, आवास विकास, सिकंदरा, आगरा मो. 9897445465

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

योगेन्द्र वार्ष्णेय
एडवोकेट

योगेन्द्र वार्ष्णेय

सिविल/क्रिमिनल/उपभोक्ता फोरम/वैवाहिक मामलों के विशेषज्ञ

चैम्बर : निकट फेमिली कोर्ट, सिविल कोर्ट, आगरा

प्रथम तल, शीला प्लाजा, मदिया कटरा, आगरा–282002

Mob. : 9897619957, 9411651010, E-mail : yogendravarshney49@gmail.com, varshneyassociates52@gmail.com

देशरत्न
(हिन्दी दैनिक)

स्व. हरिशंकर वार्ष्णेय

संस्थापक/प्रधान सम्पादक

भुवनेन्द्र वार्ष्णेय

Bhuvnendra Varshney
Advocate

- Income Tax
- VAT & GST
- Legal Adviser (Tax)

स्व. प्रशान्त वार्ष्णेय

Classic Trade Mark Service

29/48, Raja Ki Mandi, Agra-282002
Mob. : 941066744, 9319113717
E-mail : bhuvendra.v@rediffmail.com

3079

पुरूषोत्तम खण्डेलवाल
विधायक 89, आगरा उत्तर भाजपा, उ. प्र.

8/14, भैरों बाजार, आगरा
फोन नं. 0562-2973555
मो. 9410667471

दिनांक : 18.11.2025

शुभकामना-संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आगरा शहर द्वारा 29 वर्षों से '**वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका**' का वार्षिक प्रकाशन विभिन्न विशेषांकों के रूप में निरंतर चला आ रहा है। और इस वर्ष वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका के 30वें अंक का प्रकाशन "**सानिध्यर विशेषांक**" के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। जिसका विमोचन 21 दिसम्बर को श्री वार्ष्णेय सभा आगरा के वार्षिकोत्सव में किया जाएगा वह अत्यन्त ही सराहनीय है।

मेरी ओर से इस पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय

(पुरूषोत्तम खण्डेलवाल)
विधायक 89 ,आगरा उत्तर

सेवा में,
श्री दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'
प्रधान सम्पादक, वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका

डॉ. धर्मपाल सिंह
विधायक
86-एत्मादपुर विधानसभा, आगरा

निवास :
बंगलिया क्वाटर्स,
आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा

दिनांक : 22.11.2025

शुभकामना-संदेश

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा विगत 29 वर्षों से निरंतर समाज हित में '**वार्ष्णेय कल्याण**' पत्रिका का प्रकाशन करती आ रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देते हुए ईश्वर से प्रार्थना है कि पत्रिका समाज हित में निरंतर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में पूर्व की भाँति सफलता अर्जित करती रहे।

पत्रिका के 30 वें **अंक** '**सानिध्य**' की अभूतपूर्व सफलता के लिए प्रार्थना करता हूँ, साथ ही पत्रिका के संचालन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने वाले सभी सहयोगियों को मेरा हृदय से धन्यवाद है।

सेवा में,
श्री दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'
प्रधान सम्पादक, वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका

(डॉ. धर्मपाल सिंह)

सम्पादकीय

सानिध्य में परस्पर हित चिन्तन अनिवार्य

अपने परिवार से लेकर हर स्तर पर समाज में, राष्ट्र में, राजनीति में, शिक्षा में, मानव मूल्यों को संचरण करने में परस्पर सौजन्य, स्तरीय विवेक, उचित मार्गदर्शन अनिवार्य होता है। इसमें भी सानिध्य द्वेष एवं व्यक्तिगत हित रहित तथा मानवता के अनेक घटकों को ध्यान में रखकर दिया जाना चाहिए। इस 'सानिध्य' विशेषांक के माध्यम से हमारा प्रयास है कि जन साधारण के प्रत्येक स्तर पर 'सानिध्य' का संचरण हो। सभी एक-दूसरे के सत्कार्यों की सराहना करें तथा हित चिन्तन का एक्य भाव दिखायें। मिल-जुलकर एकजुटता प्रदर्शित कर 'सानिध्य' के गुणों की सीख लें तथा सामुदायिक शक्ति के रूप में सार्वजनिक उत्थान एवं विकास के कार्य मन में भावना में संकल्पित दृष्टि से करें। यही हमारी संस्कृति एवं वैदिक धर्म की मान्यता है।

सृष्टि के आरंभ में मनुष्य का जन्म हुआ तब केवल एक धर्म-एक जाति थी। एक समाज स्त्रोत से सबका अवतरण हुआ, सभी में एक परमतत्व ज्योति व्याप्त है। किन्तु शनैः शनैः संकीर्ण भावनाएँ व्याप्त होने से हमारी देव संस्कृति विकृत होती गई। राजनीतिक नेतृत्व स्वार्थपरता से ग्रस्त हो गए। मैत्री भाव, सहयोग, सहिष्णुता, सामंजस्य, सद्भावना, सहनशीलता जैसे मानव मूल्य विलुप्त हो गए।

प्रस्तुत कृति को पाठकों की सुविधा के उद्देश्य एवं ज्ञान अर्जित करने के लिए अनुपम बनाने का प्रयास किया गया है। विशेषांक की विषयवस्तु विश्वकल्याण एवं चेतना की दिशा में कितनी सहायक सिद्ध होगी यह तो प्रबुद्ध पाठक ही निर्णय करेंगे। हर प्रकार की अपूर्णता या त्रुटि के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में—आओ हम सानिध्य की प्रार्थना करें—

सभी सानिध्य, सद्भावी क्षमाशील हो।
सभी देवतुल्य स्वर्ग अर्चना करें।
सभी वसुधैव कुटुम्ब की प्रार्थना करें।

दिनेश चन्द गुप्ता 'पत्रकार'
प्रधान संपादक
वार्ष्णेय कल्याण, आगरा

अंतर्मन की पुकार है प्रार्थना

प्रार्थना से हमारे भीतर विपत्तियों से लड़ने की ऊर्जा आ जाती है और हम संकल्पों को पूरा करने की ओर अग्रसर होते हैं। कई बार हमारे चारों ओर विपत्ति के बादल मँडराने लगते हैं, निराशा का अंधकार छा जाता है। लगता है कि कोई हमारे दर्द को महसूस नहीं करता, उस समय हम किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करते हैं, जिससे हम अपनी बात कह सकें और वह हमारे दु:ख दूर कर सके। तब हमारे संबल की तलाश ईश्वर पर जाकर खत्म होती है।

ईश्वर का संबल मिलते ही हमारा आत्मबल मजबूत होने लगता है। विपत्तियाँ भले ही नष्ट न हों, लेकिन हमारे भीतर उनसे लड़ने की अपार ऊर्जा आ जाती है। इस ऊर्जा से हम न सिर्फ विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, बल्कि अपने संकल्पों को पूरा करने की ओर अग्रसर भी होते हैं।

प्रार्थना के लिए किसी भाषा या व्याकरण की जरूरत नहीं है। आवश्यकता है पूर्ण आस्था के साथ ईश्वर के समक्ष संपूर्ण समर्पण। ईश्वर के प्रति हमारा विश्वास हमारे भीतर आत्मबल पैदा करता है। प्रार्थना का अभिप्राय यह नहीं है कि हमारी इच्छा पूर्ण हो ही जाए। यह तो हम पर है कि ईश्वर का संबल लेकर अपने आत्मबल को हम कितना मजबूत बना लेते हैं।

प्रार्थना का तात्पर्य जीवात्मा की परमात्मा के समक्ष निजभाव की अभिव्यक्ति से है। ऐसे में मन को ईश्वर के प्रति केंद्रित करना होगा, तभी हम उनसे अपने मन की बात कह सकेंगे। ऐसा करने से न सिर्फ हम अपनी कुंठाओं का विसर्जन कर देते हैं, बल्कि हमें ध्यान का भी अभ्यास होता है।

ध्यान मन को भटकने से नियंत्रित करता है। हम समस्याओं को व्यापक फलक पर देखने लगते हैं और उनके मूल में जाकर हम उनके समाधान को खोज लेते हैं। इससे हमें संकट से मुक्ति मिल जाती है। प्रार्थना के संबंध में अनेकों पौराणिक कथाएँ हैं। भक्त प्रह्लाद की पुकार पर भगवान नृसिंह रूप धारण करके खंभे से प्रकट हो गए थे। कौरवों की सभा में जब द्रौपदी का चीर-हरण होने लगा, तब उसकी पुकार पर भगवान वस्त्ररूपी कवच बन गए, जिसे महाबली दु:शासन भी तोड़ न सका।

गज को जब तक अपनी ताकत का अभिमान था, वह ग्राह (मगरमच्छ) से लड़ता रहा, पर जब गज को लगा कि वह अपने बल पर अपने प्राणों की रक्षा नहीं कर पाएगा, तब उसने श्रीहरि को पुकारा। भक्तवत्सल भगवान ने उसकी रक्षा की और 'गजेंद्रमोक्ष' एक आदर्श प्रार्थना बन गई। इन कथाओं में देखा जाए तो भगवान ने उन्हीं लोगों की सहायता की, जिनका आत्मबल चरम पर रहा, जिन्होंने परिस्थितियों से समझौता नहीं किया।

मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि प्रार्थना से अंतर्मन की सोई हुई ऊर्जा सक्रिय हो जाती है, जिससे असाध्य रोग तक ठीक हो जाते हैं। प्रार्थना एक प्रकार का योग है, जिसका अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए। फिर हम रोज प्रार्थना के परमानंद-रस का आस्वादन लेंगे और प्रार्थना का प्रतिफल भी देख सकेंगे। जब अंतर से करुण पुकार उठती है तो वही स्वर प्रार्थना का पुष्प बनकर परमात्मा के चरणों में अर्पित हो जाता है। प्रार्थना से असंभव संभव में परिवर्तित होता है। अत: हमें भावभरे मन से प्रार्थना करनी चाहिए।

चाँदनी वार्ष्णेय जयपुर

अध्यक्षीय आभार

सर्वप्रथम मैं श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.) की ओर से दशकों पुरानी सामाजिक संस्था से जुड़े हुए सभी वार्ष्णेय समाज के परिवारीजनों का आत्मिक रूप से हार्दिक स्वागत करता हूँ। वार्ष्णेय समाज, आगरा का प्रत्येक परिवार इस संस्था से तन, मन एवं धन से आत्मिक रूप से जुड़ा हुआ है। हमें समाज के बुजुर्गों, शुभचिंतकों, बुद्धजीवियों तथा मार्गदर्शकों का विशेष सहयोग मिलता रहा है। मुझे इस वर्ष समाज ने अध्यक्ष पद का महत्वपूर्ण दायित्व सभा के चुनावों के माध्यम से दिया है, जिसको मैं अपनी पूरी टीम के साथ, मिलकर कार्य कर रहा हूँ। श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा द्वारा प्रत्येक वर्ष 28 वर्षो से लगातार प्रकाशित पत्रिका 'वार्ष्णेय कल्याण' द्वारा समाज की एकता, अखंडता, सामाजिक समरसता को पत्रिका के वार्षिक प्रकाशनों द्वारा अनवरत मजबूत किया गया है।

इस वर्ष वार्ष्णेय कल्याण ई-पत्रिका का 30 वां अंक 'सानिध्य' विशेषांक के रूप में आपके हाथ में है। इस अंक में समाज के सम्मानित लेखकों, शुभचिंतकों, विद्वानों, बुद्धजीवियों तथा नवयुवा पीढ़ी से संकलित रचनायें तथा ज्ञानवर्धक सामग्री का भरपूर संकलन है। इसकी गुणवत्ता का आंकलन आप स्वयं कर सकते हैं।

मुझे अपनी कार्यकारिणी, विशिष्ट सदस्य, क्षेत्र प्रमुखों तथा विभिन्न नामित समितियों के सदस्य आदि का समाजोन्मुख कार्यो हेतु भरपूर सहयोग मिलता रहा है जिसके लिए मैं सभी का कृतज्ञ हूँ।

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा अपना वार्षिकोत्सव इस वर्ष सूरसदन प्रेक्षागृह, संजय प्लेस, आगरा पर आयोजित कर रहा है, जिसमें बच्चों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। वृद्धजन सम्मान, प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान किया जाता है। बच्चों की खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम की और अधिक शोभा बढ़ाने में हमारे देश के विभिन्न प्रांतों, विदेशों से आये अतिथिगणों की शोभा देखते ही बनती है। सभी कार्यक्रमों के पश्चात सामूहिक भोज के साथ कार्यक्रम संपन्न होता है।

वार्ष्णेय कल्याण निधि, वार्ष्णेय सभा द्वारा चलाई जा रही है। जिसके द्वारा समाज के निर्धन विद्यार्थी, निर्धन विवाह योग्य कन्याओं व जरूरतमंद लोगों की मदद की जाती है। यह कोष समाज के दानदाताओं द्वारा दानस्वरूप दी गई धनराशि से संचालित है। जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के जरूरतमंद सदस्यों की सहायता करना है। कोरोना काल में कल्याण निधि द्वारा जरूरतमंदों को राशन किटों का वितरण कराया गया। श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा के अन्तर्गत विधि प्रकोष्ठ अपना कार्य सुचारु रूप से कर रहा है।

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा के अन्तर्गत वार्ष्णेय महिला मण्डल समाज की समस्त महिलाओं के उत्थान व सामाजिक उत्सवों का अति उल्लास के साथ कार्य कर रहा है। श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा के अंतर्गत दो ट्रस्ट संचालित हैं। जिनमें श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन, आगरा में हमारे लिए एक चुनौती है। मंदिर परिसर में निर्माणाधीन 4 मंजिला भवन का निर्माण जिसमें चार मंजिल में पहले दो मंजिल में हॉल का निर्माण तथा ऊपर के दो मंजिल में 12 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। जिसकी प्रगति का प्रमाण पत्रिका के इस अंक में दिये छायाचित्र के माध्यम से देख सकते हैं। आप सभी से अनुरोध है कि इस पुण्य कार्य के निर्माण में अपना आर्थिक सहयोग देकर पुण्य लाभ कमायें तथा श्री नत्थीलाल लाल वार्ष्णेय चेरीटेबल ट्रस्ट, अक्रूर वाटिका है। अक्रूर वाटिका में एक हॉल का निर्माण व टीन सेट कार्य प्रगति पर है। अक्रूर मंदिर पर नई कार्यकारिणी का चुनाव हुआ, इसके तहत मंदिर के विकास में चार चांद लगेंगे। इस वर्ष अक्रूर चौक का निर्माण कार्य प्रगति पर है। उसके बाद अक्रूर जी की मूर्ति की स्थापना होगी। इसका अनावरण शीघ्र ही होना है। मेरा समाज के सभी बंधुओं से निवेदन है कि आप अपने होने वाले मांगलिक कार्य को अक्रूर वाटिका में करायें जिससे यहाँ आर्थिक सहयोग प्राप्त हो सके।

अंत में समाज के सभी लोगों को शुभकामनाएँ देता हूँ व सभी से सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

दाऊ दयाल गुप्ता
अध्यक्ष
श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि.)

वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका सानिध्य विशेषांक अंक के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

mycem cement

ATS CONSTRUCTION & COMPANY

(C & F, MYCEM CEMENT, Agra Warehouse)

Anil Varshney
9412723302

GLMC ASSOCIATES

WHOLESALE CEMENT, AGRA

DIVY CONSTRUCTIONS

WHOLESALE CEMENT, HATHRAS

A & N LOGISTICS

WHOLESALE CEMENT, ETAH & KASGANJ

Tushaar Vaarshney
9412723305

BHAWAN NIRMAN KENDRA

Berger

DISTRIBUTOR

BERGER PAINTS

(AGRA, HATHRAS, ETAH, KASGANJ, ALIGARH MATHURA, FIROZABAD & MAINPURI)

Shantanoo Varshney
9557040333

ONE STOP SOLUTION FOR ALL TYPES OF BUILDING MATERIALS, KUBERPUR, AGRA

Head Office : Plot No. 3, New Market, Jeoni Mandi, AGRA

मंत्री का प्रतिवेदन

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि०) आगरा जिले की गई वर्षों पुरानी एकमात्र ऐसी सामाजिक संस्था है जिससे वार्ष्णेय समाज आगरा का प्रत्येक परिवार इस संस्था से तन, मन एवं धन से आत्मिक रूप से जुड़ा हुआ है। हमें समाज के बुजुर्गों, शुभचिंतकों, बुद्धजीवियों, तथा मार्गदर्शकों का विशेष सहयोग मिलता रहा है। मुझे इस चुनाव में आप लोगों ने मंत्री पद का दायित्व दिया है जिसे में पूरी जिम्मेदारी एवं निष्ठा से निभाने को तत्पर हूँ, पूर्व के वर्षों में भी में दो बार मंत्री पद का निर्वहन कर चुका हूँ। मेरे पूर्व कार्यकाल 2003 से 2006 तक तथा 2015 से 2018 को भी आप देख चुके हैं। गत वर्षों की भांति इस कार्यकाल को और अच्छा करने का प्रयास करूँगा। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा द्वारा प्रकाशित पत्रिका "वार्ष्णेय कल्यण" द्वारा समाज की एकता, अखंडता, सामाजिक समरसता को पत्रिका के वार्षिक प्रकाशनों द्वारा अनवरत मजबूत किया गया है। यह जान कर आपको अति प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष से वार्ष्णेय कल्याण पत्र का प्रकाशन E-पत्रिका के रूप में (डिजिटली) आरम्भ किया गया है। वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका का 30वां अंक "सानिध्य" विशेषांक के रूप में आपके मोबाइल में होगा। इस अंक में समाज के सम्मानित लेखकों, शुभचिंतकों, विद्वानों, बुद्धजीवियों तथा नवयुवा पीढ़ी से संकलित रचनायें तथा ज्ञानवर्धक सामग्री का भरपूर संकलन है इसकी गुणवत्ता का आंकलन आप स्वयं कर सकते हैं।

मुझे अपनी कार्यकारिणी, विशिष्ट सदस्य, क्षेत्र प्रमुखों, तथा विभिन्न नामित समितियों के सदस्य आदि का समाजोन्मुख कार्यों हेतु भरपूर सहयोग मिलता रहा है जिसके लिए में सभी का कृतज्ञता से आभारी हूँ। श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा का वार्षिकोत्सव गत वर्ष की भाँति सूर सदन आगरा में हो रहा है, जिसमें बच्चों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते हैं। बृद्धजन सम्मान, प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं का सम्मान किया जाता है। इस वर्ष से खेलकूद प्रतियोगिता आदि का आयोजन व अन्य आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। जो बच्चों की प्रतिभा को निखारने का काम करेंगे। इस कार्यक्रम की और अधिक शोभा बढ़ाने में हमारे देश के विभिन्न प्रांतों/विदेशों से आये अतिथिगणों का मंचासीन होते ही मंच की शोभा देखते ही बनती है। गत वर्षों में सभी कार्यक्रमों के पश्चात् सामूहिक भोज के साथ संपन्न होता है।

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा द्वारा महिलाओं को संगठित करने के उद्देश्य से एक संगठन श्री वार्ष्णेय महिला मंडल, आगरा का संचालन हो रहा है जो समय-समय पर उत्सवों पर कार्यक्रमों को आयोजित करती रहती है।

वार्ष्णेय परिवार कल्याण निधि वार्ष्णेय सभा द्वारा चलाई जा रही है जिसके द्वारा समाज के निर्धन विद्यार्थी, निर्धन विवाह योग्य कन्याओं व जरूरतमत लोगों की मदद की जाती है। यह कोष समाज के दानदाताओं द्वारा दानस्वरूप दी गई धनराशि से संचालित है। जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के जरूरतमंद सदस्यों की सहायता करना है।

इस वर्ष भी वार्ष्णेय सभा आगरा के प्रयास के द्वारा शास्त्रीपुरम स्थित पश्चिमपुरी चौराहा को नगर निगम के द्वारा अक्रूर चौक के नाम से घोषित किया जा चुका है जिसका सौन्द्रयीकरण भी नगर निगम के द्वारा हो रहा है जिस पर शीघ्र ही वार्ष्णेय सभा आगरा द्वारा श्री अक्रूर जी की मूर्ति का अनावरण किया जायेगा। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा के अंतर्गत दो ट्रस्ट संचालित हैं जिनमें श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन, अक्रूर मंदिर, जिसमें वर्ष भर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, जिसमें अभी तक लगभग 250 वर्ग फूट में पहले 2 मंजिल में 2 हॉल, उसके ऊपर 2 मंजिल में 6+6 कुल 12 कमरे प्रत्येक मंजिल पर बनाये गये हैं तथा श्री नत्थीलाल लाल वार्ष्णेय चेरीटेबल ट्रस्ट, अक्रूर वाटिका में है। जिसमें रिसेप्शन हॉल पर टिन शेड तथा एक हॉल का निर्माण कार्य प्रगति पर चल रहा है। इसमें आयकर विभाग द्वारा 12 A, तथा 80 G का सर्टिफिकेट आयकर विभाग द्वारा प्रदत्त किया गया है। समाज में कोई भी दानदाता इसमें दान देना चाहते हैं अपना दान देकर इसमें आयकर से छूट प्राप्त का लाभ ले सकते हैं। अंत में समाज के सभी लोगों को शुभकामनाएं देता हूँ व सभी से सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

विनोद कुमार गुप्ता मन्त्री,
श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

कलयुग में कल्कि अवतार पर विशेष

—मंगलसैन गुप्त

धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे—गीता

पावन गीता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने संदेश दिया है कि मेरे अवतार का प्रयोजन साधु-पुरुषों का उद्धार करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए है। मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ। सर्व साधारण के कल्याणार्थ धर्म के संरक्षक के रूप में मेरा अवतरण होता है। पूर्ण पुरुष, महायोगी भगवान श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण आज से 5235 वर्ष पूर्व ऐसी ही परिस्थितियों में धर्म की रक्षा करने हेतु आसुरी शक्तियों से बचाव तथा अन्याय का प्रतिकार लेने के लिए हुआ था। उस समय शक्तिशाली राजाओं का अत्याचार व अनीतिपूर्ण कुचाक्र चरम पर था। अत: द्वापर युग में पीड़ितों के आर्तनाद पर भगवान ने स्वयं अवतार लिया था। भगवान कृष्ण का चरित्र अद्‌भुत एवं अलौकिक रहा। वे महाविष्णु के आठवें अवतार के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा रचित गीता सर्वकालीन सामयिक प्रेरणास्पद एवं दिशा निर्देशक है, जो दिव्य विज्ञान तथा समस्त वैदिक ज्ञान का आधार है।

भारतीय इतिहास पुराण काल की कथा में चौबीस अवतारों का कथन है और उसमें केवल 'कल्कि अवतार' का अवतरण शेष है। कलियुग के अंतिम चरण में भगवान कल्कि का अवतार होना है। एक युग 4,32,000 वर्ष का होता है। कहते हैं अब तक कलियुग के लगभग 5000 वर्ष बीत चुके हैं। किन्तु कुछ विद्वान इस अवधि में सूर्य एवं चन्द्रग्रहण की आयु को छोड़कर कलियुग के अन्तिम चरण की गणना कर रहे हैं। कुछ विद्वान अभी तक कलियुग के प्रथम चरण की समाप्ति मानते हैं। इस अवधि में धर्म, सत्य, पवित्रता, क्षमा, आयु, बल और स्मरण शक्ति का ह्रास निरन्तर हो रहा है। मानव जाति का नैतिक पतन हो गया है। व्यावहारिक सत्य एवं निष्ठा समाप्त हो रही है। छल-कपटपूर्ण चालाक व्यक्ति ही व्यवहार कुशल माना जा रहा है। घोर दम्भी पाखण्डी व्यक्ति ही सत्पुरुष बने बैठे हैं। धर्म, माता-पिता और गुरु तथा वृद्ध जन निरादर और उपेक्षा के पात्र बन तिरस्कृत हैं। चारों वर्णों में जो शक्ति सम्पन्न होगा वही शासन करेगा। लोभी, लुटेरे, दुष्ट, निष्ठुर बढ़ रहे हैं। प्राणी धर्म की मर्यादा त्यागकर स्वच्छन्द विचरण में विश्वास करेगा। यह सब कलि का ही प्रभाव होगा कि धर्म, कर्म और नीति लेश मात्र भी नहीं बचेगी। सर्वत्र पाप, पीड़ा, दु:ख-दरिद्रय, क्लेश, अनीति, अनाचार और हाहाकार व्याप्त हो जायेगा।

महाभारत वन-पर्व के अनुसार उस समय 'सम्भल ग्राम' में विष्णुयशा नामक अत्यन्त पवित्र सदाचारी एवं श्रेष्ठ, सरल, उदार, भगवान के अत्यन्त अनुरागी भक्त के यहाँ समस्त गुणों से युक्त निखिल सृष्टि के सर्जक, पालक एवं संहारक परब्रह्म परमेश्वर भगवान 'कल्कि' के रूप में अवतरित होंगे, उनके रोम-रोम से अद्भुत तेजोमय किरणें छिटकती रहेंगी।

"विष्णु यशा के बालक के चिन्तन करते ही उसके पास इच्छानुसार वाहन, अस्त्र-शस्त्र, योद्धा और कवच उपस्थित हो जायेंगे। वह धर्मजयी चक्रवर्ती राजा होगा। वह उदार बुद्धि, तेजस्वी ब्राह्मण दु:ख से व्याप्त हुए इस जगत को आनंद प्रदान करेगा। कलियुग का अन्त करने के लिए ही उसका प्रादुर्भाव होगा।" —(महा०वन०190/94-96)

कल्कि भगवान को स्वयं शंकर जी शस्त्रास्त्र की शिक्षा देंगे और भगवान परशुराम उनके वेदोपदेष्टा होंगे। भगवान कल्कि दस्यु वध में सदा तत्पर रहेंगे। उनके कर कमलों से पृथ्वी के सम्पूर्ण दस्युओं का विनाश होगा और धर्म का उत्थान होगा।

"उनका यश तथा कर्म—सभी परम पावन होंगे। वे ब्रह्माजी की चलाई हुई मंगलमयी मर्यादाओं की स्थापना करके रमणीय वन में प्रवेश करेंगे। फिर इस जगत के निवासी मनुष्य उनके शील-स्वभाव का अनुकरण करेंगे।"

—(महा० वन० 191/2-3)

वर्तमान के घटनाक्रम को देखने से ज्ञात होता है कि अब वह समय आ गया है जब 'विनाशाय च दुष्कृताम्' धरती का भार हरण करने और नवयुग स्थापित करने कल्कि पुराण के अनुसार श्वेत अश्व पर बैठे कल्कि भगवान शीघ्र आ रहे हैं।

'प्रतीक्षा' 20 नटराजपुरम्
कमला नगर-आगरा-5

समाज सेवा

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक अपने समय के सर्वमान्य नेता थे। वे अपने युग के राजनीति के शिखर पुरुष थे। उन्होंने ही यह नारा दिया था, ''स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' उन्हीं दिनों तिलक जी से किसी ने पूछा - 'यदि इन कुछ वर्षों में स्वराज्य मिलगया तो आप भारत सरकार के किस पद को संभालना पंसद करेंगे? इस प्रश्न के पूछने वाले ने सोचा था कि तिलक महाराज उत्तर में अवश्य कही प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति बनन की इच्छा प्रकट करेंगे, लेकिन उसे तो लोकमान्य का उत्तर सुनकर बड़ी हैरानी हुई क्योंकि उन्होंने कहा-''मैं तो देश के स्वाधीन होने के पश्चात् स्कूल का शिक्षक होना अधिक पसन्द करूंगा।'' इस पर प्रश्नकर्ता ने जा नना चाहा, ''ऐसा क्यों कह रहे हैं, आप?'' तो उन्होंने उत्तर दिया, ''स्वाधीनता के पश्चात् देश को सबसे बड़ी जरूरत अच्छे नागरिक एवं उन्नत व्यक्तियों की होगी, जिसे शिक्षा और सम ाज सेवा के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।'' ऐसे थे महान विचारक और समाज सेवक लोकमान्य तिलक जी। वस्तुत: यही महानता की मर्यादा है। आज के राजनेताओं को तो देश लूटने से ही फुर्सत नहीं, समाज सेवा क्या करेंगे?

ईश्वरकृपा से सब संभव है

गुरुकृपा और निज पुरुषार्थ से संत एकनाथ को ब्रह्मोपलब्धि हुई थी। ब्रह्मोपलब्धि होने से वे यह सदैव अनुभव करते थे कि परब्रह्म किसी एक जगह में ही बँधा नहीं है। वह सर्वव्यापी है,सर्वज्ञ है और सर्वसाक्षी है। वह ब्रह्मांड के कण-कण में व्याप्त है। वह सबका है और सब उसके हैं।

इस प्रकार निजबोध व ब्रह्मोपलब्धि के फलस्वरूप वे संपूर्ण जगत् को ब्रह्मरूप ही देखते और जानते थे और सबके प्रति समदर्शी होकर तदनुकूल लोक-व्यवहार किया करते थे। उनकी समदर्शी दृष्टि व समदर्शी व्यवहार को लेकर कई रोचक व प्रेरक घटनाएँ हैं।

एक घटनाक्रम के अनुसार एक दिन संत एकनाथ के घर उनके पिता का श्राद्धकर्म संपन्न होने को था। श्राद्धकर्म को लेकर पूरी तैयारी की गई थी। विविध प्रकार के सुस्वादु, स्वादिष्ट व्यंजन बनाए गए थे। गाँव के सभी ब्राह्मणों को भोजन हेतु आमंत्रित किया गया था और संत एकनाथ आमंत्रित ब्राह्मणों की प्रतीक्षा में अपने दरवाजे पर खड़े थे। उसी समय चार-पाँच महार उनके दरवाजे की बगल से गुजर रहे थे।

उन्हें एकनाथ जी के घर से सुस्वादु व्यंजनों की गंध लगी। गंध पाकर वे लोग आपस में कहने लगे 'वाह! कैसी अच्छी गंध है। गंध ऐसी है कि भूख न हो, फिर भी भूख लग जाए। श्राद्ध को लेकर कितने अच्छे-अच्छे, भाँति-भाँति के व्यंजन बने होंगे, पर ऐसे सुस्वादु व्यंजन भला हम गरीबों के भाग्य में कहाँ ?ऐसे सुस्वादु व्यंजन तो ब्राह्मणों के भाग्य में ही हैं, जिन्हें हमेशा ऐसे व्यंजन खाने को मिलते हैं। हम गरीबों को सुस्वादु व्यंजनों की गंध भी मिल जाए तो बड़ी बात है। इससे ज्यादा हम लोगों को और भला क्या मिल सकता है?'

अपने द्वार पर खड़े संत एकनाथ ये सारी बातें सुन रहे थे। उन लोगों की बातें सुनकर समदर्शी संत एकनाथ की आँखें भर आईं। उनके हृदय में दया व करुणा के दिव्य भाव उमड़ आए। वे तो संपूर्ण जगत् को ही समदृष्टि से देखते थे। फिर उनके लिए मनुष्य-मनुष्य में भेद कैसा?

वे तो यह जानते-मानते और अनुभव करते थे कि सबमें भगवान का वास है। सब भगवान के हैं और भगवान सबमें हैं। वे यह जानते-मानते और अनुभव करते थे कि जितने शरीर हैं, वे सब हरिमंदिर हैं; क्योंकि सबमें वही सच्चिदानंद परब्रह्म श्रीहरि विराज रहे हैं। फिर मनुष्य-मनुष्य में भेद क्यों और कैसा?

अत: उन्होंने तुरंत उन महारों को अपने घर बुलाकर बड़े प्रेम व आदर के साथ बिठाया और अपनी धर्मपरायणा पत्नी गिरिजाबाई से कहा कि सारा श्राद्धीय अन्न व सुस्वादु व्यंजन इन्हें खिला दो। भला धर्मपरायणा गिरिजाबाई भी इस कार्य में कहाँ देर करने वाली थीं।

वे तुरंत ही भोजन परोसने की तैयारी में जुट गईं, बल्कि सहृदया गिरिजाबाई तो यह भी कहने लगीं कि घर में अन्न बहुत है, ढेर सारे सुस्वादु व्यंजन बने हैं—इसलिए इन सबके बाल-बच्चों और स्त्रियों को भी बुलाइए और सबको परोसकर खिलाया जाए। भगवान तो सर्वत्र हैं, सब में हैं, सभी प्राणियों में हैं। इसलिए आज इन्हें सुस्वादु व्यंजन खिलाकर तृप्त करने का बड़ा ही दिव्य अवसर है।

संत एकनाथ ने उन सबके लिए गिरिजाबाई के प्रेम को देखते हुए उन सबके बाल-बच्चों व स्त्रियों को भी अपने घर बुलवा लिया। सबको बड़े आदर से बिठाया गया। सबको विविध प्रकारके सुस्वादु व्यंजन परोसे गए। जो व्यंजन ब्राह्मणों के लिए बनाए गए थे, वे सभी उन लोगों को परोसे गए।

पति-पत्नी दोनों ने बड़े प्रेम से सबको खिलाया और ब्राह्मणों के लिए जो अक्षत-पुष्प, चंदन रखे गए थे, वे भी उन्हें अर्पित किए और उनका सत्कार किया। उन्हें खाते देख पति-पत्नी दोनों यह अनुभव कर रहे थे कि इन लोगों के रूप में साक्षात् श्रीहरि ही भोग ग्रहण कर रहे हैं और ऐसा अनुभव कर वे दोनों बड़े आह्लादित और हृदय से आनंदित भी हो रहे थे।

पति-पत्नी के ऐसे प्रेम को देखकर वे सभी लोग आनंद से भोजन ग्रहण कर रहे थे। जिस सुस्वादु भोजन की गंध भी उनके लिए दुर्लभ थी, वही व्यंजन उन सबको प्राप्त हुआ और उससे भी ऊपर संत एकनाथ और गिरिजाबाई के हार्दिक प्रेम से भरे शब्दों को सुनकर वे सभी अत्यंत प्रसन्न हुए।

भोजन के पश्चात् उन सबको उन्होंने पान व कुछ पैसे देकर विदा किया और तत्पश्चात् गिरिजाबाई ने घर-आँगन को धोकर स्वच्छ किया, सभी बरतनों को साफ किया और सारी सामग्री फिर से जुटाकर आमंत्रित ब्राह्मणों को खिलाने को फिर से रसोई तैयार की।

अपने पितरों के श्राद्ध-तर्पण के अवसर पर संत एकनाथ व उनकी पत्नी गिरिजाबाई ने बड़े प्रेम से ब्राह्मणों को खिलाने के लिए कई प्रकार के सुस्वादु व्यंजन तैयार किए थे, पर ब्राह्मणों से पूर्व उन व्यंजनों को महारों, गरीबों को परोस दिए जाने के कारण सभी ब्राह्मण नाराज हो गए और एकनाथ जी के यहाँ खाने से इनकार कर दिया।

ब्राह्मणों द्वारा भोजन ग्रहण नहीं किए जाने पर पितरों के लिए आयोजित श्राद्ध-तर्पण भला पूर्ण कैसे हो सकेगा? यह सोचकर संत एकनाथ व उनकी पत्नी गिरिजाबाई बहुत चिंतित हुए। उन्होंने ब्राह्मणों को मनाने का भरसक प्रयास किया, पर वे मानने को कतई तैयार न हुए।

ब्राह्मणों के लिए बिना व्यंजन भिखमंगों को खिलाना, यह ब्राह्मणों का घोर अपमान है और हमारे लिए भोजन उनके खाने के बाद बनाया गया। हम क्या जूठन खाएँगे? पहले वे खाएँ और बाद में हम खाएँगे? हम ऐसा अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकते-लगभग सभी ब्राह्मणों की ऐसी ही राय बनी हुई थी। यह स्थिति संत एकनाथ के लिए धर्मसंकट की स्थिति थी।

वे सोचने लगे अब हम करें तो करें क्या ?ब्राह्मण मानने को तैयार नहीं हैं। सभी ब्राह्मणों ने सामूहिक रूप से यह निर्णय लिया कि एकनाथ जी के यहाँ श्राद्धकर्म में कोई नहीं जाएगा, भोजन करने कोई नहीं जाएगा, ताकि इनके पितर नरक में पड़े रहें। एकनाथ जी के द्वार पर लट्ठधारी दो युवक खड़े कर दिए गए, जिससे कोई भी उनके घर भोजन करने को न जा सके।

जब एकनाथ समझ गए कि उनके घर ब्राह्मण भोजन ग्रहण नहीं करेंगे तब उन्होंने बड़े ही भक्तिभाव से अपने आराध्यदेव, अपने भगवान का स्मरण किया और उनसे श्राद्धकर्म पूर्ण करने की प्रार्थना की। उन्होंने आत्मप्रेरणा से अपने पितरों का आव्हन किया, ताकि वे स्वयं पधारकरण ब्राह्मणों के निमित्त बने भोजन को ग्रहण कर सकें।

संत एकनाथ जी ने अपनी आत्मशक्ति से अपने पितरों के साथ-साथ जो ब्राह्मण उनके घर नहीं आ रहे थे अपने पितरों का भी आव्हन किया। आश्चर्य की बात यह हुई कि उनके आव्हन से वहाँ सभी पितर प्रकट हो गए। गाँव के ब्राह्मणों के पितरों की पंक्ति भी उनके घर में भोजन करने को बैठी।

एकनाथ जी ने सबको नमन-वंदन किया। हस्तप्रक्षालन, आचमन करे जाने वाले श्लोकों से एकनाथ जी का आँगन गूँज उठा। जो दो युवक लट्ठ लेकर बाहर द्वार पर खड़े थे, वे एकनाथ जी के घर से आ रही आवाज को सुनकर चौंक पड़े।

उन्होंने सोचा, हमने तो किसी ब्राह्मण को अंदर जाने ही नहीं दिया, फिर यह आवाज कैसी ? दरवाजे की दरार से उन्होंने भीतर देखा तो वे दंग रह गए। अंदर तो पितरों की लंबी पंक्ति लगी थी और वे सभी भोजन कर रहे थे। जब उन्होंने ध्यान से देखा तो पता चला कि 'अरे ! यह क्या ?ये तो मेरे दादा हैं, परदादा हैं, पितामह हैं, जो यहाँ भोजन कर रहे हैं। ये सभी तो मर चुके हैं, फिर वे कैसे प्रकट हो भोजन कर रहे हैं।' दोनों गाँव के ब्राह्मणों को खबर करने भागे।

उन्होंने कहा—"हम सबके पितर पितरलोक से आकर एकनाथ जी के आँगन में भोजन पा रहे हैं।" गाँव के सभी लोग दौड़ते-भागते हुए एकनाथ जी के यहाँ पहुँचे और देखा सभी पितर भोजन पूरा करके वहाँ से विदा हो रहे हैं और एकनाथ जी उन्हें विदा कर रहे हैं, उन्हें श्रद्धाभाव से धन्यवाद दे रहे हैं।

गाँव के सभी ब्राह्मण देखते ही रह गए। वे सभी एकनाथ जी के समक्ष हाथ जोड़ क्षमा माँगते हुए बोले—"महाराज ! हमने आपको पहचाना नहीं। हमें माफ कर दीजिए।" सहृदय एकनाथ ने सबको सहर्ष माफ कर दिया।

सचमुच यदि हृदय में सच्ची भक्ति हो, परमात्मा के लिए प्रेम हो, मन निर्मल हो तो स्मरण करने मात्र से देवता प्रकट हो सकते हैं और आवाहन करने से पितर भी एकनाथ जैसे साधक, भक्त, संत के समक्ष प्रकट हो सकते हैं।

सोनिया वार्ष्णेय,
गम्भीर पुरा अलीगढ़

शिष्यों ने गुरु से प्रश्न किया—"गुरुदेव ! शुकदेव जी तो मुक्तात्मा थे, फिर राजा के यहाँ कथा कहने क्यों गए ?"

गुरु बोले—"वत्स ! जब शुकदेव परीक्षित के पास गए तो परीक्षित ने उनसे कथा कहने को नहीं कहा, उसने पूछा कि जिसका मरण समीप है, उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए और उसने पूछा कि मानव का कल्याण कैसे हो सकता है ?इसलिए शुकदेव बोले—पुत्र ! तुमने सबके कल्याण की कामना की है, इसलिए मैं तुम्हें भागवत की कथा सुनाऊँगा। वैसे भी जिसका मरण कल्याणकारी हो जाता है, उसका जीवन भी मंगलमय ही रहा होगा।"

ऐसा बताते हुए गुरु बोले—"सुपात्र को ही सद्ज्ञान मिलता है। राजा परीक्षित सुपात्र थे, इसलिए इस महान घटना के अधिकारी बने।"

स्वस्थ-नीरोग जीवन के व्यावहारिक सूत्र

स्वस्थ शरीर जीवन की सबसे बड़ी संपदा माना गया है एवं यह सारे सुखों का आधार है। जबकि एक रोगी शरीर एक अभिशाप से कम नहीं होता, जिसमें व्यक्ति घुट-घुटकर जीने के लिए बाध्य होता है, स्वयं दु:खी-परेशान रहता है और न चाहते हुए भी दूसरों के लिए बोझ बन जाता है।

साथ ही वह दूसरों की सेवा-सहायता लेने के लिए विवश होता है, जो एक स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए मरण के समान होता है। बीमारी के चलते आएदिन अस्पताल के चक्कर, रोग के उपचार में बढ़े-चढ़े खरचे, सब मिलाकर व्यक्ति एवं परिवार को आर्थिक रूप से भी निचोड़कर रख देते हैं।

स्वास्थ्य के संदर्भ में बहुत कुछ व्यक्ति के हाथ में होता है। समय रहते यदि सावधानी बरती जाए,तो बहुत हद तक इस दु:खद स्थिति से बचा जा सकता है।

अधिकांश रोग असंयमित आदतों के कारण होते हैं, शरीर के प्रति बरती गई लापरवाहियों एवं मनमाने आहार-विहार के कारण होते हैं, जिसमें नकारात्मक चिंतन एवं तनाव की भी अपनी भूमिका रहती है। व्यक्ति चाहे तो कुछ सर्वमान्य जीवन-सूत्रों का अनुसरण करते हुए एक स्वस्थ एवं नीरोग जीवन जी सकता है।

इसमें पहला सूत्र अपनी दिनचर्या में सोने व जागने के क्रम को ठीक करना तथा अपनी नींद पर ध्यान देना है। गहरी नींद एक अमृत रसायन का काम करती है। रात भर में दिन भर की थकान व टूटन के कारण क्षतिग्रस्त तन व मस्तिष्क की कोशिकाओं व स्नायु संस्थान को दुरुस्त कर अगले दिन के लिए तैयार करती है।

ब्राह्ममुहूर्त में सोकर उठना दूसरा स्वर्णिम सूत्र है। आज की बिगड़ी जीवनशैली व आधुनिकता के दौर में यदि ब्राह्ममुहूर्त में उठना संभव न हो तो सूर्योदय से पूर्व उठने का क्रम तो बनाया ही जा सकता है, जो प्रात: 6 बजे के आस-पस का होता है।

इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि सोने से 2-3 घंटे पूर्व मोबाइल का उपयोग बंद कर दें और प्रात: उठने से 3 घंटे तक इसे स्वयं से दूर ही रखें। इससे समय पर सोने का क्रम सरल हो जाएगा, पर्याप्त नींद संभव होगी तथा प्रात: उठकर महत्त्वपूर्ण कार्य निपटाने के साथ अनावश्यक तनाव से बचाव होगा और एक स्वस्थ दिनचर्या के साथ दिन का शुभारंभ होगा।

प्रात: उठते ही 2 गिलास कुनकुना पानी अवश्य पिएँ। इससे प्रात: पेट साफ होने में आसानी रहेगी। कब्ज की शिकायत करने वाले भी इस प्रयोग के अमोघ लाभ को अनुभव कर सकते हैं। यदि सीधा गरम पानी नहीं पी सकते हों, तो हलका-सा नमक इसमें डाल सकते हैं।

इसके साथ प्रात: पैदल टहलने की आदत डालें। हर आयु वर्ग का व्यक्ति इसे कर सकता है। बस, अपने आलस्य को त्यागने भर की आवश्यकता है।

नित्य 6000 से लेकर 10000 व इससे भी आगे 15000 कदम चलने का अभ्यास अपने समय व क्षमता के अनुरूप जोड़ सकते हैं। कुछ प्रत:, कुछ दोपहर, कुछ शाम को, तो कुछ भोजन के उपरांत रात को चहलकदमी कर सकते हैं और इससे प्रत्यक्ष लाभ को अनुभव कर सकते हैं।

इसके साथ अपनी स्थिति के अनुरूप नित्य कुछ व्यायाम का क्रम अवश्य जोड़ें, जो शरीर को स्वस्थ रखने में बहुत सहायता करता है। योगासन से लेकर ट्रेकिंग, प्राणायाम से लेकर अन्य सूक्ष्म व्यायाम किए जा सकते हैं। आहार को यथासंभव हलका व सुपाच्य रखें, तो सरलता से पचेगा, आँतों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालेगा।

आहार में फल-सब्जी ग्रहण करने को अधिक महत्त्व दें। यदि ये मौसमी हैं तो भरपूर पौष्टिकता सुनिश्चित होगी। चाय के स्वस्थ विकल्प के रूप में प्रज्ञापेय, ग्रीन टी, ब्लैक टी आदि को उपयोग कर सकते हैं। भोजन को शांत मन:स्थिति में खूब चबा-चबाकर खाएँ, ईश्वर को अर्पित करते हुए ग्रहण करेंगे तो यह भोग का रूप लेगा। आसानी से पचेगा और तन के साथ मन का भी पोषण करेगा। व्यक्ति को स्वस्थ तथा प्रसन्न रखेगा।

नित्य साफ हवा में कुछ देर भ्रमण के साथ प्राणायाम का अभ्यास करें। गहरे श्वास के साथ किया गया अभ्यास फेफड़ों को मजबूत बनाएगा जो सहज रूप में कई तरह के रोगों से इनका बचाव करेगा।

इसके साथ विचारों को सकारात्मक रखें, क्योंकि मानसिक संतुलन का स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसके लिए सकारात्मक लोगों का संग करें। मोबाइल की माया से सावधान रहें। स्वाध्याय की आदत डालें, जो सकारात्मक विचारों का प्रेरकस्त्रोत साबित होगा।

अपने बैठने, लेटने व सोने के तरीके का भी ध्यान रखें—विशेषकर जो लंबे समय तक बैठकर काम करते हों। कंप्यूटर पर लंबे समय तक बैठने वाले अपने बैठने के तरीके के साथ आँखों का भी विशेष ध्यान रखें। निर्मल शीतल जल के छींटे देने के साथ इनको थोड़ा विश्राम देते हुए इनका व्यायाम किया जा सकता है। मन:स्थिति को सकारात्मक व आशावादी बनाए रखें तथा प्रसन्नचित्त रहें।

यह ध्येयनिष्ठ जीवन के आधार पर ही संभव होता है। नित्य स्वयं को समय दें, अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग रहें, कर्त्तव्यपरायण जीवन जिएँ। यदि ऐसा संयमित, संतुलित, श्रमशील, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित जीवन संभव होगा तो स्वत: ही एक स्वस्थ, नीरोग जीवन की ठोस आधारशिला तैयार होगी।

कार्य की अधिकता व तनाव भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अत: कार्य के बीच में थोड़ा आराम लें। एक समय पर एक कार्य करें। साथ ही एक अच्छी आदत को अवश्य विकसित करें। यह तनावहरण प्रयोग साबित होगा। रोज कुछ नया सीखते रहें। नई पुस्तकें, नया स्थान, नए लोग, नया ज्ञान जीवन के उत्साह को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होंगे।

यदि शरीर में कहीं रोग पनप रहा हो,तो इसके उपचार में आलस्य-प्रमादजनित लापरवाही न बरतें। समय पर लिया गया उचित कदम स्वास्थ्य संबंधी भावी जटिलता व दुर्घटना से बचा सकता है।

आजकल जाँच के उन्नत उपकरण उपलब्ध हैं, जो प्रारंभिक अवस्था में ही पनप रहे रोगों का पता लगा लेते हैं, जिससे समय रहते सही उपचार किया जा सकता है। जितनी इस संदर्भ में लापरवाही बरतेंगे, उतना ही रोग फिर आगे चलकर जटिल होता जाता है और उसका उपचार भी उतना ही दुष्कर एवं जानलेवा हो सकता है।

अपने स्वास्थ्य संबंधी इन सरल सामान्य सूत्रों का जितना ध्यान रखेंगे, डॉक्टर व अस्पताल के चक्कर लगाने से उतना ही बचेंगे और एक स्वस्थ व नीरोग जीवन के अधिकारी होंगे। इसके आधार पर जीवन के सभी सुखों के साथ इसके उच्चतर आयाम को भी साध सकेंगे, आखिर **शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्**—अर्थात् स्वस्थ शरीर ही समस्त धर्मों का आधार है।

संकलन कर्ता: ई० अशोक कुमार गुप्ता,

वृन्दावन धाम कॉलोनी मथुरा रोड, अलीगढ़

भक्त की भक्ति से छूट जाता है संसार

जब भक्त का हृदय भगवत्प्रेम से सराबोर हो उठता है, तब भक्त की आध्यात्मिक आभा अनायास ही हर किसी को और विशेषकर साधकों को अपनी ओर आकर्षित करती है और उनके आभामंडल में प्रवेश करते ही हृदय में दैवी शीतलता और आनंद की अनुभूति होती है।

मध्यकाल में मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में एक छोटे से गाँव में जन्मे गणेशनाथ जी भी एक ऐसे ही भगवद्भक्त थे, जिनके सान्निध्य में हर किसी को शांति, शीतलता और आनंद की अनुभूति होती थी। पूर्वजन्म के संस्कार व माता-पिता से प्राप्त शिक्षाओं के कारण बचपन से ही उनका भगवत्प्रेम परिलक्षित होने लगा था।

उनके माता-पिता बचपन से ही उन्हें भगवत्प्रेम के प्रति प्रोत्साहित करते और गणेशनाथ भगवान का नाम ले-लेकर मानो आनंद में नाचने लगते। पिता उन्हें बचपन से भगवद्भक्ति के द्वारा मानव जीवन को सफल करने को प्रेरित करते। वे शास्त्रों-पुराणों में वर्णित भगवान व भक्तों से जुड़ी रोचक कहानियाँ गणेशनाथ को सुनाया करते और वे रुचिपूर्वक उन कथाओं को सुना करते।

रात में सोते समय उनकी माता भी उन्हें भगवान की रोचक कथाएँ, कहानियाँ सुनाया करतीं और बालक गणेशनाथ भगवान की कथाएँ सुनते-सुनते ही निद्रा में चले जाते। प्रात: जब उनके माता-पिता भगवद्उपासना करने बैठते, धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय करते तो बालक गणेशनाथ भी अपने माता-पिता के पास जाकर बैठते। इस प्रकार एक बड़े ही दिव्य आध्यात्मिक वातावरण में उनका पालन-पोषण हुआ।

भगवद्भजन, भगवत्प्रेम, वैराग्य आदि के संस्कार गणेशनाथ को अपने माता-पिता से बखूबी प्राप्त हुए। दैवी इच्छा कहें या कुछ और; गणेशनाथ की युवावस्था प्रारंभ होने से पूर्व ही उनके माता-पिता परलोकवासी हो गए। कहने को घर में गणेशनाथ अकेले रह गए, पर भगवत्प्रेम और वैराग्य के संस्कार जिसके साथ हों, भला वह अकेला कैसे हो सकता है?

इसलिए घर में अकेले होते हुए भी वे निर्भीक, निर्द्वंद्व थे। उनका हृदय हरिनाम रस पीने को अब और भी आकुल हो उठा। वे सत्संग और भजन के लिए उत्सुक हो उठे। फिर क्या था?वस्त्र के नाम पर उन्होंने बस एक लँगोटी पहन ली, फिर सरदी हो या गरमी या फिर बरसात हो, वे सदैव मात्र लँगोटी ही धारण किए रहते।

वे भगवान का नाम स्मरण करते, कीर्तन करते, पद गाते और भगवत्प्रेम में मतवाले होकर, आनंदमग्न होकर नृत्य करने लगते। भगवन्नामस्मरण, कीर्तन, भगवत्प्रेम के प्रभाव से उनके भीतर वैराग्य की भावना और भी बलवती होती गई। वे प्राय: दिन भर जंगल में जाकर एकांत में बैठकर उच्चस्वर से भगवन्नाम उच्चारण और कीर्तन करते और रात्रि को घर लौट आते।

रात को गाँव के लोगों को भगवत्कथा सुनाते और कीर्तन करते। वर्षों वे गाँव छोड़कर पण्ढरपुर चले गए और वहीं भगवद्स्मरण, कीर्तन, सत्संग आदि करने लगे। संयोगवश एक बार छत्रपति शिवाजी पण्ढरपुर पधारे। तब तक गणेशनाथ जी अपने भगवत्प्रेम, वैराग्य व संकीर्तन प्रेम के कारण दूर-दूर तक चर्चित हो चुके थे।

लोग दूर-दूर से उनके दर्शन व सत्संग को आते थे, अत: वहाँ पधारने पर शिवाजी महाराज भी उनका दर्शन करने आए। उस समय गणेशनाथ जी अपने हृदय में भगवान की मधुर-मनोहर छवि का ध्यान करते हुए, भगवन्नाम स्मरण और कीर्तन करते हुए नृत्य कर रहे थे।

नृत्य करते-करते बहुत रात बीत गई, पर भगवत्प्रेम में डूबे गणेशनाथ को दिन-रात क्या अपने शरीर की सुध-बुध ही कहाँ थी, शिवाजी भी उनके इस भगवत्प्रेम व भगवद्भाव को देखकर आह्लादित थे और उन्हें शांतभाव से देख रहे थे।

जब अचानक उनका कीर्तन समाप्त हुआ तो शिवाजी ने इनके चरणों में प्रणाम कर उनसे अपने राजशिविर में रात्रि-विश्राम करने की विनम्र प्रार्थना की।

भक्त गणेशनाथ बड़े संकोच में पड़ गए, उनके आग्रह को अस्वीकार भी करना चाहा, पर शिवाजी के बार-बार प्रेम-निवेदन करने पर अंतत: वे उनके आग्रह को स्वीकार कर उनके साथ चल दिए, परंतु वहाँ से चलते हुए बहुत से कंकड़ चुनकर उन्होंने अपने वस्त्र में बाँध लिए।

"इन कंकड़ों का क्या होगा?"—छत्रपति शिवाजी ने आश्चर्य से पूछा। तब गणेशनाथ बोले—"सुख-भोग और ऐश्वर्य के बीच रहते हुए भी ये कंकड़ ही मुझे भगवान का स्मरण दिलाएँगे।"

राजशिविर में गणेशनाथ के आदर-सत्कार की बहुविध व्यवस्था की गई। स्वयं शिवाजी ने सुगंधित जल से उनके चरण पखारे, इत्र लगाए, स्वर्णथाल में उन्हें विविध प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गए और उनके रात्रि-विश्राम के लिए स्वर्ण के पलंग पर कोमल गद्दे के ऊपर सुगंधित पुष्प बिछाए गए।

यह देखकर गणेशनाथ जी तो मानो सन्न रह गए। उन्हें सुख-भोग के ये सारे पदार्थ मानो जलती हुई अग्नि के समान प्रतीत हो रहे थे।

शिवाजी जैसे सत्पुरुष, राष्ट्रभक्त के आग्रह-प्रेम के कारण किसी प्रकार थोड़ा-सा कुछ खाकर वे विश्राम करने गए, पर सुकोमल शय्या पर शयन करने से पूर्व उन्होंने अपने साथ लाए हुए कंकड़ों को पुष्पों के ऊपर बिछाया एवं फिर उसी पर बैठ गए।

स्वयं को सुख-भोगों के बीच पाकर वे मन-ही-मन कहने लगे—"हे भगवान! हे पाण्डुरंग! हे मेरे स्वामी! अवश्य ही मेरे हृदय के किसी कोने में इन सुख-भोगों के प्रति कोई आसक्ति या इसे पाने की मेरी कोई सूक्ष्म लालसा रही होगी, तभी तो तुम मुझे यहाँ लाए हो। हे विट्ठल! मुझे ये भोग-पदार्थ, ये सुख-भोग, नरक की यंत्रणा जैसे जान पड़ते हैं। मुझे तो बस, आपसे एक ही आशा है और वह है—देना है तो दीजिए, जनम-जनम का साथ, जनम-जनम का निजप्रेम, भगवत्प्रेम, भगवद्स्मरण। इसके सिवा गणेशनाथ आपसे कुछ नहीं चाहता।"

इस प्रकार भगवद्स्मरण करते हुए ही रात बीती। प्रात: शिवाजी ने आकर उनके दर्शन किए। उन्हें प्रणाम किया और पूछा—"महाराज! आप क्या रात्रि-विश्राम सुखपूर्वक कर पाए या नहीं?"

तब गणेशनाथ जी बोले—"जो क्षण विट्ठल का नाम स्मरण करते हुए बीते, वही सफल है। आज की रात भगवद्स्मरण, हरिस्मरण करते हुए व्यतीत हुई। अत: वह निस्संदेह सफल हुई।"

भक्त गणेशनाथ के दिव्य भगवद्नाथ को सुनकर शिवाजी के नेत्रों से आँसू बहने लगे। उन्होंने यह महसूस किया कि उन्हें एक साधु को भौतिक सुख-भोग के बीच रात्रि विश्राम करने का आग्रह नहीं करना चाहिए था।

हालाँकि यह सच था कि शिवाजी ने यह सब एक संत के प्रति अपने प्रेम व सम्मान के कारण ही किया था। भक्त गणेशनाथ भी उनके हृदय की निर्मलता व प्रेम को भली-भाँति जानते थे। इसलिए तो उन्होंने न चाहते हुए भी शिवाजी के आग्रह को स्वीकार किया था। उन्होंने प्रेमभरी दृष्टि से शिवाजी को देखा और उन्हें आशीष दिया।

उक्त प्रसंग में उल्लेखनीय यह है कि लोक-ख्याति अथवा लोक-प्रतिष्ठा पाने की लालसा भी भगवन्मार्ग में एक बहुत बड़ा विघ्न है। गणेशनाथ जी जैसे परम वैरागी भक्त इन विघ्नों से निस्संदेह अछूते रहे, पर सामान्य साधक सुख-भोग पाने की लालसा के कारण साधना से विचलित होने लगते हैं।

लोक-प्रतिष्ठा मिलने पर साधक बड़ी ही शीघ्रता से मोह में पड़ता है और उसके मन में लोक-प्रतिष्ठा, लौकिक-सुखभोग पाने की लालसा और भी तीव्र होती जाती है और अंततः उसका पतन होता है। इसलिए साधकों को इन चीजों से बचे रहना चाहिए।

यदि कहीं लोक-प्रतिष्ठा मिलती भी है तो उसे उसके प्रति मोह नहीं करना चाहिए। इसलिए ऐसा कहा गया है कि साधक को मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को शूकर की विष्ठा समान मानकर उनसे दूर रहना चाहिए।

भक्त गणेशनाथ इन चीजों के प्रति सदैव सावधान रहते थे। पण्ढरपुर में उनकी जय-जयकार होने लगी थी। लोग उनके दर्शन व सत्संग को आने लगे थे। उनकी लोक-प्रतिष्ठा बढ़ने लगी थी, पर लोक-प्रतिष्ठा को उन्होंने अपने भगवन्मार्ग में कभी भी विघ्न-बाधा नहीं बनने दिया।

अपने प्रति लोगों के बढ़ते हुए प्रेम व सम्मान को वे मानसिक रूप से भगवान के चरणों में समर्पित कर उन चीजों से सदैव अछूते बने रहे। पर हाँ! सत्य यह भी है कि जब फूल खिलेंगे तो सुगंध तो फैलेगी ही। उससे आकर्षित होकर भगवान के प्रेमी भक्त गणेशनाथ जैसे भगवद्‌भक्त के प्रति आकर्षित होंगे ही।

इसलिए गणेशनाथ जी जंगल में एकांत में बैठे होते तब भी लोग उनके पास एकत्र होने लगते, उनके दर्शन करते, उनके साथ कीर्तन करते और आनंदमग्न हो जाते। अंततः गणेशनाथ जी के प्रेम ने विट्ठल भगवान को दर्शन देने को बाध्य कर दिया। उन्हें भगवान के दिव्यस्वरूप के दर्शन हुए। दर्शन पाने के बाद तो मानो गणेशनाथ जी हजारों लोगों से घिरे रहकर भी ब्राह्मी भावदशा में ही डूबे रहते। वे उठते-बैठते, खाते-पीते, हँसते-बोलते सदैव ब्रह्मभाव में ही होते।

संसार में होकर भी वे संसार से अछूते रहते। ब्राह्मी भावदशा में वे जिसे भी छू देते, वह वहीं उन्मत्त होकर नाचने लगता। उनके आध्यात्मिक आभामंडल में पहुँचकर, उनके पास पहुँचकर लोग परम आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति पाते, भगवान का नाम लेने लगते। सभी भक्तजन भक्त गणेशनाथ जी के सान्निध्य में भगवान के प्रेम में उन्मत्त होकर, उनके साथ-साथ कीर्तन करने को विवश हो जाते।

वास्तव में संत और भक्त ऐसे ही होते हैं जिनके सान्निध्य में पहुँचते ही मनुष्य को संसार रस फीका जान पड़ता है आर वह भगवत्प्रेम रस से सराबोर हो अपने जीवन को धन्य कर लेता है। वास्तव में बड़ी अद्‌भुत थी संत गणेशनाथ की भगवद्‌भक्ति।

—रीनू वार्ष्णेय, सिकन्दरा आगरा।

मोक्ष अर्थात् मुक्ति। कषाय-कल्मषों से मुक्ति, दोष-दुर्गणों से मुक्ति, भव-बंधनों से मुक्ति। यही भव-बंधन हैं, जो स्वतंत्र अस्तित्व से लेकर जन्मे मनुष्यों को लिप्साओं और कुत्साओं के रूप में अपने बंधनों में बाँधते हैं। यदि आत्मशोधनपूर्वक इन्हें हटाया जा सके, तो समझना चाहिए कि जीवित रहते हुए भी मोक्ष की प्राप्ति हो गई।

श्री अक्रूर जी, जीवन एवं वंशावली

महामाना श्री अक्रूर युग पुरुष थे। निर्विवाद रूप से वे भगवान श्री कृष्ण के समकालीन थे और वंशानुक्रम में श्री कृष्ण के चाचा जी लगते थे। श्री कृष्ण की भाँति ही, अक्रूर जी भी यदुकुल के 'वृष्णि-वंश' में उत्पन्न हुये थे एवं श्री श्वफल्क के यशस्वी पुत्र थे। अक्रूर जी का किसी भी ग्रंथ में यद्यपि 'वार्ष्णेय' विशेषण के साथ उल्लेख नहीं किया गया है, किन्तु वस्तुत: वे वृष्णि-वंश में पैदा होने के कारण वार्ष्णेय ही थे। श्री कृष्ण को अवश्य श्री मद्‌भागवत गीता में 'वार्ष्णेय' शब्द से सम्बोधित किया गया है। श्री अक्रूर के जीवन से सम्बन्धित कुछ तथ्य जो विभिन्न पुराणों एवं आदि ग्रंथों यथा 'महाभारत', गर्ग-संहिता, पद्‌म-पुराण, बह्मपुराण, भागवत-पुराण, हरिवंश पुराण, आदि के आधार पर कहे जा सकते हैं, वे निम्नवत् हैं—

(1) श्री अक्रूर जी, महाराज वृष्णि (क्रोष्टा) की चौथी पीड़ी में जन्मे श्री श्वफल्क के यशस्वी पुत्र थे। उनकी माता गांदिनी काशी-नरेश की पुत्री थी (गर्ग संहिता)। हरिवंश पुराण के अनुसार श्री अक्रूर जी के 15 भाई थे एवं 'सुचीरा' नाम की एक वीरांगना बहिन थी। सुचीरा का विवाह वासुदेव श्री कृष्ण के साथ हुआ था। सुचीरा साम्ब देश की रानी के रूप में प्रसिद्ध हैं। किन्तु श्री मद्‌भागवत् पुराण के अनुसार श्री अक्रूर के बारह भाई थे, जिनके नाम थे-आसंग, सारमेय, मृदुर, मृदुवित, गिरि, धर्मबद्ध, सुकर्मा, क्षेत्रोवेक्ष, अरिमर्दन, शत्रुध्न, गंधमाद और प्रतिवाहु। एक बहिन थी जिसका नाम सुचीरा था। ब्रह्म पुराण में भाईयों की संख्या चौदह बताई गई है, किन्तु बहिन एक ही थी, सुचीरा।

(2) इनका विवाह 'शैव्या रत्ना कुमारी' के साथ हुआ था तथा शैव्या कुमारी के गर्भ से श्री अक्रूर को ग्यारह महाबली पुत्र पैदा हुए।

(3) श्री अक्रूर का दूसरा विवाह महाराज अग्रसेन की पुत्री (कंस की बहिन) 'सुगात्री' से हुआ। सुगात्री से इनको दो पुत्र प्राप्त हुए-देववान और उपदेव (ब्रह्म-पुराण पृष्ठ 302)। हरिवंशपुराण में अग्रसेन की पुत्री जो अक्रूर को ब्याही थीं, उनका नाम सुतनु कहा गया है। वैसे सुगात्री एवं सुतनु का एक ही अर्थ होता है, 'अच्छे शरीर वाली'। हो सकता है उसे दोनों ही नामों से पुकारा जाता हो। भागवत् पुराण व महाभारत में सुतनु को आहुक की पुत्री कहा गया है, जिससे अक्रूर को दो पुत्र देवक और उपदेवक नाम के पैदा हुए।

(4) इसके अतिरिक्त काशीराजकुमारी के गर्भ से सत्यकेतु उत्पन्न हुए (हरिवंश पुराण) एवं अश्विनी नाम की भार्या से भी कई पुत्र उत्पन्न हुए (पद्‌मपुराण-सृष्टि खण्ड)।

(5) श्री अक्रूर कंस के बहनोई होने के साथ-साथ उसके मंत्री भी थे एवं कंस इनकी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता नीति-कुशलता एवं शूरवीरता के कारण इनका सम्मान करता था।

(6) श्री अक्रूर जी की बहिन सुचीरा का विवाह श्री कृष्ण के साथ हुआ था, अत: अक्रूर जी का श्री कृष्ण के साथ निकट का सम्बन्ध था। श्री कृष्ण की रानी सत्यभामा के कारण कृष्ण और अक्रूर में कुछ दूरियाँ बढ़ीं, जिसके कारण अक्रूर जी अपनी ननिहाल काशी चले गए थे और काशी में काफी समय तक वहाँ रहे।

श्री अक्रूर महान कूटनीतिज्ञ एवं वाक्पटु थे। अत: यादवों के बीच पड़ती फूट को संभालने के लिए श्री कृष्ण द्वारा श्री अक्रूर को अपनी ननिहाल से बुलाना पड़ा। वैसे अक्रूर जी मूल रूप से मथुरा के रहने वाले थे। श्री कृष्ण के द्वारिका चले जाने पर वे भी उनके साथ द्वारिका चले गए थे। श्री अक्रूर महान योद्धा थे। इनके साथ-साथ वे बेहद कुशल राजनीतिज्ञ एवं कुशल बुद्धि वाले थे। वे महान ईश्वर भक्त एवं दानवीर भी थे। काशी में रहकर उन्होंने अनेक यज्ञ किए एवं सम्पत्ति दान की। वे स्वयं एवं उनके पिता श्री श्वफल्क महान मौसम विज्ञानी भी थे। पिता-पुत्र दोनों ने अकाल के समय संकटग्रस्त लोगों को सहायता पहुँचा कर विपत्ति की महान घड़ी से बाहर निकालने का महान कार्य किया। उन्होंने भक्तिपूर्वक श्री कृष्ण का हर क्षण और हर स्थिति में साथ दिया, चाहे वह संकट की घड़ी हो या प्रसन्नता के क्षण।

श्री अक्रूर वृष्णि-वीरों के सेनापति थे (महाभारत आदिपर्वतांर्गत हरणा हरण पर्व) किन्तु महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण की आज्ञा से द्वारिका में ही रहे, युद्ध नहीं लड़े।

वंश परिचय

आर्यावर्त में आदिकाल से और मूल रूप से दो वंशों का वर्चस्व था। पहला सूर्य वंश और दूसरा चन्द्र वंश। इन्हीं वंशों के अन्तर्गत इनकी शाखा-प्रशाखाओं का आविर्भाव हुआ और वंशानुक्रम में आगे चल कर चन्द्र वंश की शाखा में महाराज 'यदु' का प्रादुर्भाव हुआ। इन्हीं श्री यदु के नाम पर 'यदुवंश' प्रभावी हुआ। महाराज यदु अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रतापी शासक थे। इनके वंशधर 'यादव' कहलाते थे। यादव क्षत्रियों के कुल में आगे चलकर कई वंशों के उपकुल प्रभावी हुए जिनमें महाराज 'वृष्णि' का भी एक प्रभावशाली वंश था, जिनके वंशज 'वार्ष्णेय' कहलाए। इसी वंश में श्री श्वफल्क के यशस्वी पुत्र के रूप में श्री अक्रूर का जन्म हुआ। भगवान श्री कृष्ण का जन्म भी इसी 'वृष्णि-वंश' में हुआ था।

विभिन्न पुराणों और ग्रंन्थों में 'यादुवंश' का वर्णन मिलता है। इनमें नृसिंह पुराण, ब्रह्म-पुराण, अग्नि-पुराण, विष्णु-पुराण, वायु पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, लिंग पुराण, वाराह पुराण, स्कन्ध पुराण, कूर्मपुराण, मत्स्य पुराण, गरुण पुराण, श्रीमद भागवत पुराण, महाभारत, गर्ग संहिता, शिल्प संहिता आदि प्रमुख हैं। किन्तु इन सब में एकरूपता कहीं भी नहीं मिलती। नामों में, पीढ़ियों में कुछ न कुछ अंतर है। इतने मतभिन्नता एवं विभेद हैं कि साधारण बुद्धि वाला तो क्या अच्छे-अच्छे विद्वान, विशेषज्ञ और पांडित्य प्रवीण लोग भी दिग्भ्रमित होने लगते हैं।

वस्तुत: हम यहाँ इन वंशावलियों में उलझना भी नहीं चाहते। हमारा उद्देश्य मूल रूप से श्री अक्रूर वंशानुक्रम एवं 'वृष्णि-वंश' के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है।

श्रीमद्भागवत् पुराण को सनातनी भागवत् धर्मी हिन्दुओं में ज्यादा मान्यता प्राप्त है तथा इसे विश्वसनीय एवं लोकप्रिय माना जाता है। इसके आधार पर जो वंशानुक्रम सामने आता है, उसका संक्षेप में वह अंश जो श्री अक्रूर जी से सम्बन्धित है, कुछ इस प्रकार है—

वृष्णि (क्रोष्टा)

चित्ररथ	युधाजित
विदूरथ	वृष्णि
शूर	श्वफल्क
वसुदेव	अक्रूर
श्रीकृष्ण	

उक्त वंशावली जो संक्षिप्त एवं सारांश रूप में ली गई है, से पूर्णतया स्पष्ट है कि श्री वृष्णि जो क्रोष्टा भी कहलाते थे, से ही इस वंश का नाम 'वृष्णि-वंश' कहलाया और इसके वंशधर 'वार्ष्णेय'। श्री अक्रूर एवं श्री कृष्ण इस वंश के कुलदीपक थे और वंशानुक्रम से जैसा कि स्पष्ट है, श्री अक्रूर भगवान श्री कृष्ण के चाचा जी थे।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि विभिन्न पुराणों, संहिताओं आदि में वर्णित यदु-वंशावली में विभेद एवं विरूपता की स्थिति है। इसे देखते हुए इसके मंथन के बाद कुछ विवेक सम्मत बनाने का प्रयास किया गया है। यह वंशानुक्रम कुछ इस प्रकार हो सकता है—

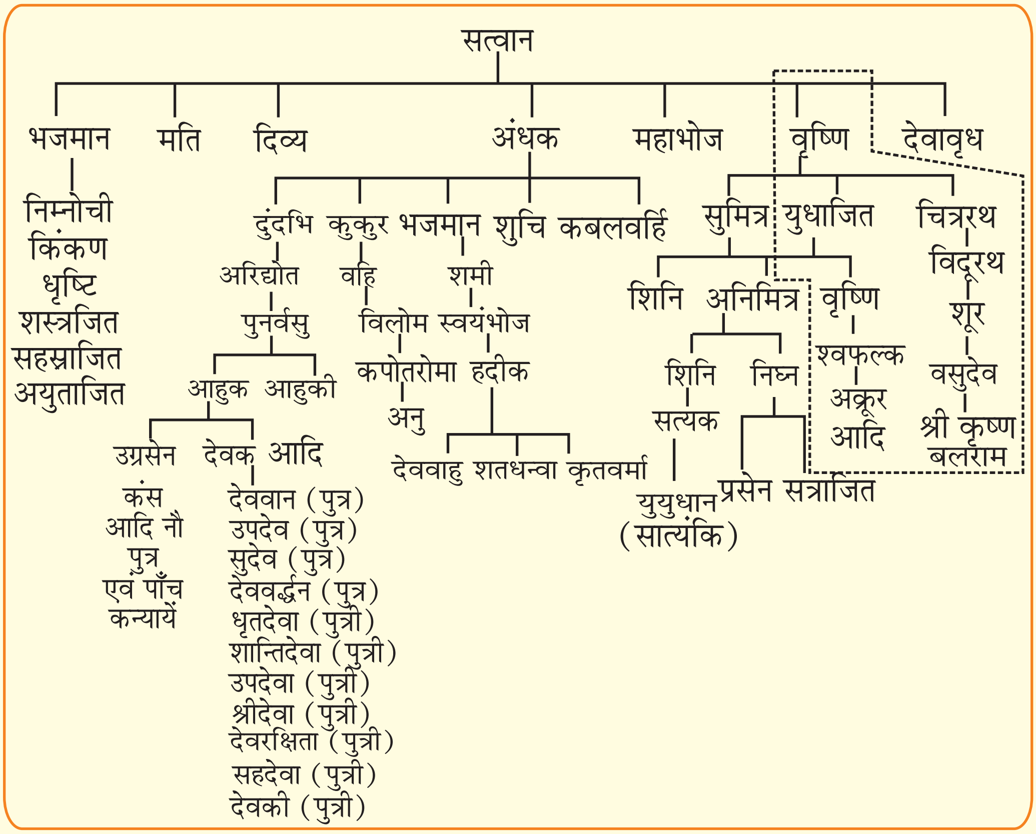

इसमें वृष्णि-वंश का वंशानुक्रम वही है जो पहले अंकित किया जा चुका है। अस्तु, हम कह सकते हैं कि वृष्णि-वंश अभ्युदय श्री वृष्णि (क्रोष्टा) से ही हुआ, जिसके अनुसार श्री कृष्ण और अक्रूर दोनों ही वृष्णि वंशज थे, 'वार्ष्णेय' थे एवं वंशानुक्रम में अक्रूर जी, श्री कृष्ण के चाचा थे।

महाभारत युद्ध के बाद श्री कृष्णावतार का पर्याप्त उद्देश्य पूर्ण हो चुका था। श्री कृष्ण स्वयं दुष्टों एवं अत्याचारियों का विनाश कर चुके थे एवं महाभारत युद्ध में अठारह अक्षौरिणी सेना का विनाश एवं दुर्घर्ष योद्धाओं की मृत्यु से पृथ्वी का पर्याप्त भार कम हो चुका था। श्री कृष्ण के स्वलोक गमन की वेला आ चुकी थी। उन्होंने यादवों को भी आपस में लड़ाकर 'मौसुल' युद्ध में समापन करा दिया। श्री 'अक्रूर जी' भी इसी 'मौसुल युद्ध' में परलोक गामी हुए और अंत में श्री कृष्ण भी एक बहेलिए के तीर को माध्यम बनाकर स्वयं निजधाम पधार गए।

संकलनकर्ता

कुलदीप वार्ष्णेय

सम्पादक, श्री वार्ष्णेय सभा आगरा।

दैनिक जीवन में ईश्वरीय उपस्थिति के संकेत

कई लोग **सान्निध्य** का अनुभव अलग-अलग तरीकों से करते हैं। यहाँ कुछ सामान्य संकेत दिए गए हैं जो बताते हैं कि व्यक्ति को दिव्य उपस्थिति का अनुभव होने लगा है:

1. आंतरिक शांति और आनंद
- कठिन परिस्थितियों में भी शांति और खुशी की गहरी भावना।
- प्रार्थना या ध्यान के बाद हल्कापन और चिंताओं से मुक्त महसूस करना।

2. अचानक अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन
- कठिन प्रश्नों के उत्तर अप्रत्याशित तरीके से प्राप्त करना।
- एक आंतरिक आवाज या अंतर्ज्ञान आपको मार्गदर्शन करता हुआ महसूस करना।

3. समकालिनताएं और दिव्य संकेत
- अपने विश्वास से संबंधित दोहराई जाने वाली संख्याएं (111, 777) या प्रतीक देखना।
- पुस्तकों, गीतों या वार्तालापों में आध्यात्मिक संदेश पाना।
- ऐसे सपने जो गहरे और सार्थक लगते हैं।

4. सुरक्षित और निगरानी में महसूस करना
- दुर्घटनाओं या खतरों से चमत्कारिक ढंग से बचना।
- संकट के समय में किसी की मजबूत उपस्थिति का एहसास होना।

5. अध्यात्म के प्रति आकर्षण
- आध्यात्मिक ग्रंथों, शिक्षाओं और ध्यान में बढ़ती रुचि।
- कीर्तन, भजन और सत्संग जैसी भक्ति गतिविधियों में आनंद का अनुभव करना।

सानिध्य का अनुभव करने में ध्यान और भक्ति की भूमिका

सानिध्य की साधना के लिए व्यक्ति को ऐसे अभ्यासों में संलग्न होना चहिए जो आध्यात्मिक जागरूकता और दिव्य ऊर्जा के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाते हों।

1. ध्यान: अपने भीतर के दिव्य से जुड़ना
- मौन ध्यान का अभ्यास करने से मन शांत होता है और ह्रदय ईश्वरीय उपस्थिति के लिए खुलता है।
- मंत्र जप (जैसे, "ओम नम: शिवाय", "राम राम") से ऐसे कंपन उत्पन्न होते हैं जो आध्यात्मिक ऊर्जा को आकर्षित करते हैं।
- प्रकाश या दिव्य रूपों का दर्शन दिव्य उपस्थिति के अनुभव को बढ़ाता है।

2. भक्ति: ईश्वर के साथ संबंध बनाना
- दैनिक प्रार्थना, भजन और पवित्र ग्रंथों का पाठ आध्यात्मिक जागरूकता को गहरा करता है।
- ईश्वर को फूल, जल और भोजन (प्रसाद) अर्पित करने से संबंध मजबूत होता है।
- चिंताओं को त्यागकर ईश्वरीय इच्छा पर भरोसा करने से सुरक्षा और शांति की भावना आती है।

पवित्र स्थान और ऊर्जा केंद्र (मंदिर, पवित्र नदियाँ)

कुछ स्थानों को दिव्य उपस्थिति को बढ़ाने के लिए जाना जाता है, जिससे साधकों के लिए सान्निध्य का अनुभव करना आसन हो जाता है।

शादी के बाद सात जन्मों के बन्धन का रहस्य

कहते हैं कि शादी के बाद 'सात जन्मों का साथ होता है' तो विशेष रूप से इस के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई इसलिए गोत्र का अध्ययन किया और जो जानकारी मिली एवं हमें समझ आई उसकी विस्तृत जानकारी सांझा कर रहे हैं।

1. हम पुरुष प्रधान प्रणाली का समर्थन नहीं कर रहे हैं पर Scientific Research के द्वारा Genetic Information पर आधारित तथ्य लिखे हैं। कृपया अन्यथा न लें।
2. आजकल तो गर्भ (Womb or Uterus) में ही कुछ genes के removal या treatment के द्वारा genetic diseases समाप्त करने के लिए research चल रही है।
3. एक ही गोत्र के वर व वधू आपस में शादी नहीं करते हैं। 'दरअसल इसके पीछे वैज्ञानिक और धार्मिक दोनों कारण हैं। अगर दो लोग एक ही गोत्र के हैं तो इसका मतलब है कि वह एक ही पूर्वज के वंशज हैं और समगोत्री (endogamy) या एक ही गोत्र में शादी करने से genes की निकटता के कारण उस कुल के आनुवंशिक (genetic) दोष, बीमारी बच्चों यानि कि अगली पीढ़ी (next generation) में हस्तांतरित (transfer) होने का खतरा बढ़ सकता है जैसे कि according to Mendel's law of inheritance, proposed by Gregor Mendel, describe how traits are passed from parents to offsprings.
4. गोत्र प्रणाली में X और Y गुणसूत्रों (Chromosome) की महत्वपूर्ण भूमिका है। खासकर पुरुष वंश में। X गुणसूत्र महिला गुण और Y गुणसूत्र पुरुष गुण निर्धारित (determined) करता है। चूँकि Y गुणसूत्र केवल पुरुषों में पाया जाता है और यह पिता से पुत्र को मिलता है। इसलिए गोत्र प्रणाली पुरुष वर्ग का प्रतिनिधित्व (Represent) करती है। महिलाएँ XX गुणसूत्रों के साथ पैदा होती हैं जबकि पुरुष XY गुणसूत्रों के साथ। पुत्री में एक X गुणसूत्र पिता से तथा दूसरा X गुणसूत्र माता से आता है। इन दोनों गुणसूत्रों का संयोग DNA के आदान-प्रदान (crossover) के द्वारा होता है। पुत्र में Y गुणसूत्र पिता से ही आना संभव है और XY संयुक्त होने से असमानता होने के कारण इन दोनों गुणसूत्रों का पूर्ण क्रॉसओवर नहीं बल्कि 5% तक ही crossover होता है और 95% Y गुणसूत्र ज्यों का त्यों (intact) ही बना रहता है।
5. Y गुणसूत्र के विषय में यह निश्चित है कि यह पुत्र में केवल पिता से आता है क्योंकि माता में यह होता ही नहीं है। पुत्री में 50% गुणसूत्र माता का और 50% पिता से आता है। फिर यदि पुत्री की भी पुत्री हुई तो वह डीएनए (DNA) 50% का 50% ही रह जाएगा (25%)। और फिर उसके भी पुत्री हुई तो उसमें 25% से भी आधा रह जाएगा। इस तरह सातवीं पीढ़ी में पुत्री जन्म में यह परसेंट घटकर 1% रह जाएगा। अर्थात एक पति-पत्नी के गुणों से युक्त DNA सातवीं पीढ़ी तक पुन: पुन: जन्म लेकर सातवीं पीढ़ी तक ही रहता है। और यही है सात जन्मों के बन्धन का रहस्य।
6. कन्या दान का मतलब गोत्र दान है। यदि संतान पुत्र है तो पुत्र का गुणसूत्र पिता के गुणसूत्रों का 95% गुणों को अनुवांशिक में ग्रहण करता है इसलिए पुत्र को ही वंश का वाहक माना जाता है। इसका कारण पुरुष प्रधान समाज अथवा पितृसत्तात्मक व्यवस्था नहीं है बल्कि हमारे जन्म लेने की प्रक्रिया है। यह परंपरा हजारों लाखों साल से चल रही है। मतलब हमारे पूर्वज मुनि इंसानी शरीर में गुणसूत्रों के विभक्तीकरण को समझ गए थे।

प्रो. डॉ. प्रभा किरण गुप्ता (वार्ष्णेय)
पुणे (महाराष्ट्र)

मंगल शब्द ही शुभ है तो अमंगल कैसे

सर्वप्रथम ज्योतिष में मंगल ग्रह साहस, पराक्रम, ऊर्जा, रक्त, रोग प्रतिरोधक क्षमता, आदि का कारक ग्रह है। यह शरीर की सुरक्षा करता है परन्तु जन्मपत्री में यदि नीच राशि में या कमजोर है तो रक्त सम्बन्धी समस्याएँ, उच्च रक्त-चाप, बुखार, माँसपेशियों की समस्या एवं दुर्घटनाओं का कारण होता है। शुभ स्थिति–जब मंगल शुभ होता है तो व्यक्ति में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होती है और व्यक्ति साहसी होता है। ऊर्जावान भी होता है। जातक निडर, पराक्रमी और उसकी नेतृत्व की क्षमता बहुत अच्छी होती है। ऐसा व्यक्ति सभी लोगों को अपने साथ लेकर चलता है।

मंगल के नकारात्मक प्रभाव की विवेचना करें तो मंगल के अशुभ प्रभाव से जातक भय के साए में बना रहता है और एक अनजाना भय हमेशा बना रहता है। आत्मविश्वास समाप्त होने लगता है, मन में संदेह और शंका बनी रहती है। अशुभ प्रभाव होने से अहंकार और कठोर वाणी भी बोलने लगते हैं।

अब हम देखेंगे वैवाहिक जीवन पर मंगल का शुभ प्रभाव होने से जातक का जीवन खुशहाल रहता है। जीवन साथी का पूरा सहयोग मिलता है। घर परिवार में परस्पर प्रेम व्यवहार बना रहता है। सुख शांति बनी रहती है।

मंगल भावनाओं का भी स्वामी है, वैवाहिक जीवन की हर भावना को प्रभावित करता है। विवाह के समय मंगल दोष को देखना इसलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अग्नि का कारक ग्रह है, यदि लड़का/लड़की प्रबल मंगली है तो कुंडली के सुख को नष्ट कर देगा। दोनों में सकारात्मक प्रभाव या विचारधारा नहीं रहेगी। फिर यह मंगल संकट का कारण या मृत्यु का भी कारण हो सकता है। यदि कोई मांगलिक है तो उसका विवाह मांगलिक से ही करना चाहिये।

मंगल अग्नि का कारक, क्रूर, पापी ग्रह है। यदि जन्मकुंडली में 1, 4, 7, 8, 12 भावों में स्थित हो तो मंगली और शनि राहु की युति में हो तो प्रबल मंगली दोष बनाते हैं।

मंगल सूर्य से अस्त हो या उस पर बृहस्पति का शुभ प्रभाव हो तो यह दोष काफी हद तक कम हो जाता है।

कुंडली में मंगल दोष न हो परन्तु वैवाहिक जीवन पर प्रभाव आता हो या मंगल, राहु, शनि युति में हो तो वैवाहिक जीवन कभी ऐसा लगता है कि टूट जायेगा, कभी सही रहेगा। कभी-कभी पति-पत्नी में मारपीट या Voilance (हिंसा) भी होता है।

शुभता–ज्योतिष में, डॉक्टर बनने के लिये गुरु, मंगल, सूर्य और शनि ग्रहों का शक्तिशाली होना आवश्यक है। बृहस्पति ज्ञान और जीवन की रक्षा के लिये, सूर्य औषधि और आरोग्यता के लिये, मंगल सर्जरी के लिये, शनि तकनीकी ज्ञान के लिये, अनुशासन के लिये महत्वपूर्ण हैं। चन्द्रमा थोड़ा कमजोर हो तो डॉक्टर के लिये अच्छा है। जिससे भावनात्मक लगाव कम हो और रोगी का उपचार अच्छी तरह कर सके।

1. मंगल को अच्छा करने के लिये सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।
2. यदि कोई एक मंगली है तो विवाह से पूर्व कुम्भ विवाह कराएँ।
3. मंगल ग्रह की शान्ति कराएँ।
4. मंगलवार के दिन उपवास करें तथा लाल वस्तुएँ दान करें।

ज्योतिषाचार्य डॉ. पूनम वार्ष्णेय
मो. नं. 9219152610
फ्लैट नं. 101, विनायक अपार्ट.
विजय नगर, आगरा

अच्युत वाणी की कुछ सूक्तियाँ

पद्मनाभ भगवान के श्रीमुख से निःसृत वाणी—गीता

1. गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है। श्रीकृष्ण कालीन महर्षि वेद व्यास ने श्रुत ज्ञान की परम्परा को लेखन से जोड़ते हुए गीता जैसे ग्रन्थ में पूर्व संचित भौतिक एवं आध्यत्मिक ज्ञान-राशि को संकलित किया है।
2. गीता ही एकमात्र शास्त्र है जिसमें बताया है कि आत्मा के सिवाय कुछ भी शाश्वत नहीं है।
3. ओउम् अक्षय परमात्मा का नाम है। इसका जप और मनन करके पूर्ण श्रद्धा से परमदेव को अपने हृदय में धारण करें।
4. ईश्वरीय साधना, ईश्वर तक की दूरी तय करना, यह केवल गीता में ही संगोपांग क्रमबद्ध है जिससे सुख-शांति तो मिलती ही है, यह अक्षय अनामय पद भी देती है।
5. भगवान कृष्ण कहते हैं कि सभी मानव ईश्वर की सन्तान हैं, सुख रहित क्षण भंगुर किन्तु दुर्लभ मानव तन को पाकर मेरा भजन करें अर्थात् भजन का अधिकार मनुष्यधारी को है।
6. मुझे भजकर लोग स्वर्ग तक की कामना करते हैं, मैं उन्हें देता हूँ अर्थात् सबकुछ एक परमात्मा से सुलभ है।
7. ईश्वर की प्रत्यक्ष जानकारी ही ज्ञान है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी है, अज्ञान है।
8. ईश्वर सभी भूत प्राणियों के हृदय में रहता है। सम्पूर्ण भाव से उस एक परमात्मा की शरण में जाओ जिसकी कृपा से परम शांति, शाश्वत परमधाम मिलेगा।
9. यज्ञ जिस आचरण से पूर्ण होता है उस आचरण का नाम कर्म है। कर्म माने आराधना एवं चिन्तन। योग साधना पद्धति का नाम यज्ञ है।
10. विकर्म का अर्थ विकल्पशून्य कर्म है। आत्म-स्थित, आत्मतृप्त महापुरुषों को न तो कर्म करने से कोई लाभ है और न छोड़ने से कोई हानि ही है। फिर भी अनुसरण करने वालों के लिए कर्म करते हैं जो विकल्प शून्य है, विशुद्ध है। और यही कर्म विकर्म कहलाता है।
11. योगेश्वर श्रीकृष्ण की यह वाणी स्वयं में पूर्ण शास्त्र है। इसे तत्व से जानकर मनुष्य पूर्ण ज्ञाता तथा कृतार्थ होता है।
12. एक भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म का मूल है। उस अविनाशी ब्रह्म का, अमृत का शाश्वत धर्म का और अखंड एक रस आनन्द का ईश्वर ही आश्रय है अर्थात् ईश्वर सद्गुरु ही इन सबका आश्रय है।

   विश्व के सारे ग्रन्थों की सत्य धारा गीता में समाहित है।

प्रस्तुति

मंगलसेन गुप्त

20 नटराजपुरम् आगरा-5

बंद करो खर्चीली शादी

स्रष्टा की रचित इस सृष्टि में जब-जब असंतुलन पैदा होता है, तब-तब अधर्म के नाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए विधाता एक ऐसे वातवरण को निर्मित करते हैं-जिसमें जाग्रत आत्माएँ, संघर्ष व सृजन के माध्यम से सामयिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने के लिए आगे आती हैं। इन दिनों भी कुछ ऐसा ही घट रहा है। अदृश्य व परोक्ष जगत् में उमड़ता उत्साह, देवशक्तियों का एकत्रीकरण-कुछ ऐसे संकेत हैं, जो इन्हीं ऐतिहासिक गतिविधियों के क्रियान्वयन की ओर इशारा करते हैं।

सृजन का एक सहयोगी पक्ष संघर्ष है। पुराना, यदि अवांछित है तो उसको हटाने के बाद ही सृजन कार्य संभव हो सकता है। टूटे को हटाया न जाए, तो क्या नूतन निर्माण संभव हो सकता है? वर्तमान में भी कुछ ऐसे ही प्रयासों को सामूहिक रूप से करने की आवश्यकता है, ताकि नवनिर्माण हेतु अपेक्षित वातावरण के निर्माण में यथेष्ट सहयोग मिल सके।

इनमें से एक है—खरचीली शादियों को रोकना, और इनका स्वरूप संघर्षात्मक है और दूसरा है—वृक्षों को लगाना, जिसका स्वरूप सृजनात्मक है। दोनों प्रयास एक-दूसरे से भिन्न दिखते हुए भी—एक दूसरे के पूरक हैं। भगवान परशुराम ने अपने जीवन का एक भाग दुर्बुद्धियों के उन्मूलन में लगाया तो दूसरा हिस्सा हरीतिमा संवर्द्धन को समर्पित किया। आज गायत्री परिजनों को भी भगवान परशुराम के उस सत्प्रयास को पुनः साकार करने का बीड़ा अपने संकल्प से अभिमंत्रित एवं पवित्र हाथों में लेना है। आज ऐसा कौन होगा, जिसे खरचीली शादियों से पनपने वाले सामाजिक पतन का भान न हो ? कौन नहीं जानता कि खरचीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं ?जब राष्ट्र की आधे से ज्यादा आबादी, एक वक्त के भोजन के लिए तरस रही हो तो ऐसे में शादियों पर लाखों-करोड़ों खरच करने वाले अहंकार से भरे पिशाच ही कहे जा सकते हैं।

कन्या पक्ष इन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विवश है। दूसरा पक्ष दर्प, अहंकार से भरे व्यक्तियों का है। यह देखकर कहीं से ऐसा नहीं लगता कि मानवता का सम्मान शेष रह गया है, बल्कि ऐसा लगता है कि कोई मानवीय प्रेत, मनुष्य का आवरण ओढ़कर यह उन्मादी कुकृत्य करने पर आमाद हो गया है।

आज जब हमारे इस राष्ट्र की एक-एक पाई, विकास में लगाने की आवश्यकता है, तब हमारी एक-तिहाई आमदनी इस बे-सिर, पैर के उन्माद को पूरा करने में चली जाती है तो भविष्य की सोचकर चिंता होती है। यदि लोगों के गाढ़े परिश्रम की कमाई इस तरह के भौंड़े प्रदर्शन में नष्ट होती रहेगी तो हम उन सभ्य देशों की बिरादरी में कैसे बैठ सकेंगे, जहाँ शादी तो एक सामान्य उत्सव होती है, पर व्यक्ति के परिश्रम से उपार्जित धन उनके व राष्ट्र के विकास में उपयोगी सिद्ध होता है।

आज गायत्री परिवार के सदस्यों की संख्या कुछ करोड़ के करीब है। हम सबको यह प्रतिज्ञा करनी चहिए कि हम अपने लड़के-लड़कियों की शादी बिना दहेज व भौंड़े प्रदर्शन के करें, न वर पक्ष वाले दहेज माँगें और न वधू पक्ष वाले बरात की धूम-धाम की माँग करें। प्रज्ञा परिवार में तो ये परंपरा निश्चित रूप से चलनी चाहिए।

दूसरा अभियान हरीतिमा संवर्द्धन का है। आज वायु प्रदूषण जहर की तरह से फैल गया है। मृदा का क्षरण रोकने से लेकर धरती को खाद प्रदान करने तक तथा वर्षा का संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षों की आवश्यकता होती है। जलाने के लिए लकड़ी, फर्नीचर के लिए लकड़ी और निर्माण के लिए भी लकड़ी की आवश्यकता होती है। पशुओं के लिए चारा और जीव-जंतुओं के लिए छाया भी वहीं से उपलब्ध होती है। इसलिए प्रज्ञा परिजनों को वृक्ष लगाने के महान अभियान को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। गायत्री परिवार की प्रत्येक आत्मा-जाग्रत आत्मा है-हमें इन दोनों आंदोलनों को सफल बनाने के लिए तुरंत ही प्रयासों को प्रारंभ कर देना चहिए।

सृजन व संघर्ष, दोनों मिलकर ही अधर्म का उन्मूलन व धर्म की स्थापना के ईश्वरीय प्रयोजन को पूरा करते हैं—प्रत्येक प्रज्ञा परिजन को उन्हें व्यापक बनाने के लिए प्राणपण से जुटना व युगधर्म का पालन करना चहिए।

—गीता वार्ष्णेय

अतरोली

एक बात संत नामदेव घर लौटे तो उनके पैरों में कटने का निशान था, जिससे खून बह रहा था। उनकी माँ ने उनसे पूछा कि उन्हें चोट कैसे लगी तो वे बोले—"माँ! मुझे यह चोट मेरी कुल्हाडी से लगी।"

माँ को लगा कि शायद उन्हें यह चोट भूलवश लग गई होगी, पर ज्यादा पूछने पर पता चला कि नामदेव ने जान-बूझकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी का प्रहार किया था। यह सुनकर माँ को बड़ा क्रोध आया और वे नामदेव को भला-बुरा कहने लगीं।

तब नामदेव बोले—"क्रोध न कर माँ! मैं तो केवल यह देखना चाहता था कि जब इस कुल्हाड़ी से हम पेड़ों पर प्रहार करते हैं तो उन्हें भी हमारी तरह दर्द होता है अथवा नहीं।" ऐसे कोमल स्वभाव के थे—संत नामदेव।

इनसान को गुलाम बनाता सोशल मीडिया

सोशल मीडिया आज जनजीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। क्या बच्चे और क्या बूढ़े, युवा-प्रौढ़ तथा स्त्री-पुरुष, सभी इसमें दिन का पर्याप्त समय बिताते देखे जा सकते हैं। यह सत्य है कि पहले जहाँ लोगों से जुड़ना कठिन होता था तो वहीं आज एक क्लिक के साथ हजारों लोगों से एक साथ जुड़ना संभव हो गया है।

इस माने में सोशल मीडिया का नाम सार्थक दिखता है, लेकिन साथ ही अधिकांश उपभोक्ता, जो इसकी लत के शिकार हो रहे हैं, वे स्वयं के साथ परिवार-समाज से भी कटते जा रहे हैं। ऐसे में सोशल मीडिया के चलते लोग असामाजिक अधिक होते जा रहे हैं। साथ ही वे नाना प्रकार के मनोविकारों के शिकार हो रहे हैं तथा परिवार व समाज के लिए चिंता का विषय बनते जा रहे हैं।

आज हम निस्संदेह रूप में कंप्यूटर और स्मार्टफोन के युग में जी रहे हैं, कृत्रिम बुद्धि ने इसमें नए आयाम जोड़ दिए हैं। जीवन के ये सब अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं। जीवन को सरल बनाने में इनके महत्त्व को देखते हुए हम इनके महिमामंडन में भी पीछे नहीं रहते, लेकिन इनकी लत ने इनसान को गुलाम भी बना दिया है।

सोशल मीडिया पर घंटों स्क्रॉल करते बीत जाना, बार-बार मोबाइल को चेक करना, मोबाइल के बिना बेचैनी अनुभव करना—ये सभी लक्षण मोबाइल की लत के हैं, जो हमारी कार्य की उत्पादकता को तो प्रभावित कर रहे हैं, साथ ही हमारे आपसी संबंधों पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। इनसे मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। सोशल मीडिया के साथ एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़, जलन, स्वयं पर आत्मविश्वास खोना, बेचैनी, तनाव और अवसाद जैसी समस्याएँ भी आम होती जा रही हैं।

कुछ दशक पूर्व विश्व जहाँ व्यापक विनाश के हथियारों की चुनौती से जूझ रहा था तो वहीं आज सोशल मीडिया ध्यान भटकाने वाला एक घातक हथियार बन चुका है। सोशल मीडिया से जुड़े एक घटनाक्रम में सुनवाई करते हुए, पिछले दिनों मुंबई हाईकोर्ट की गोवा पीठ के न्यायाधीश महोदय ने कहा—"सोशल मीडिया बड़े पैमाने पर ध्यान

भटकाने का घातक हथियार बन चुका है। चिंता का विषय है कि इससे निपटने के लिए अभी तक कोई ठोस प्रयास नहीं हुए हैं। इसमें भ्रामक सूचनाओं की भरमार है तथा इनसे बचने के उपाय खोजने की आवश्यकता है। उन्होंने यहाँ तक कहा कि गलत जानकारी से बेहतर है कि भ्रामक समाचारों को न देखकर या न सुनकर, मुद्दों से अनजान ही रहा जाए।"

वे आगे बोले कि सोशल मीडिया एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में हमें अपनी सोचने की क्षमता को कमजोर नहीं करना चाहिए, अन्यथा एक इनसान और एक मशीन के बीच कोई विशेष अंतर नहीं रह जाएगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अपनी विशेषताएँ हो सकती हैं, लेकिन देश-दुनिया में इससे दु:खद कुछ नहीं होगा कि हम अपनी सोचने की क्षमता, बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता तक को किसी मशीन या कंप्यूटर एल्गोरिथम के हवाले कर दें।

इसी दौरान अमेरिका का घटनाक्रम सोशल मीडिया के गंभीर खतरों की चिंता को स्पष्ट करता है—जहाँ इसकी लत के चलते बच्चों का जीवन बरबाद हो रहा है। यहाँ तक कि बड़े भी इससे नहीं बच पा रहे, जबकि बच्चों पर इसका प्रभाव अधिक खतरनाक स्तर तक पहुँच चुका है।

इस कारण अमेरिका के 50 में से 41 राज्यों ने अपने बच्चों को सोशल मीडिया की लत से बचाने के लिए फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सअप की मालिकाना कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म्स के विरुद्ध केस दर्ज कर दिया है। आरोप हैं कि मेटा ने जान बूझकर ऐसे फीचर्स तैयार किए हैं, जो बच्चों व किशोरों को इसकी लत लगा रहे हैं। बड़े भी इससे बच नहीं पा रहे हैं। मेटा उनकी कमजोरी का अपने मुनाफे के लिए फायदा उठा रही है।

किशोरों की मस्तिष्कीय या मानसिक संरचना ऐसी होती है कि वे सामाजिक तौर पर जुड़े रहना चाहते हैं। सोशल मीडिया इसका अवसर देता है। यहाँ न केवल संपर्क, बल्कि लाइक्स व प्रतिक्रियाएँ भी मिलती हैं। मनोचिकित्सक डेविड ग्रीनफील्ड, मेटा जैसी कंपनियों की शक्तिशाली तकनीक, इंरटमिटनरी-इन्फोर्समेंट का जिक्र करते हुए कहते हैं कि यह उपभोक्ताओं को बताती है कि पोस्ट किए गए कमेंट्स, तस्वीरों, वीडियो के लिए उन्हें दूसरे लोगों से लाइक्स व प्रतिक्रियाएँ मिलेंगी, जो उनका इनाम होंगी, लेकिन यह कब मिलेगा—यह तय नहीं होता।

यह इनाम का लालच ही उनको ऐसी लत लगाता है। यह कुछ-कुछ जुआघर में लगी मशीनों जैसा है, जिनमें रंग-बिरंगी लाइटें होती हैं, संगीत बजता है और कुछ पाने की संभावना अर्थात् इनाम का लालच होता है। यह तकनीक उपभोक्ताओं को सोशल मीडिया से चिपकाए रहती है। इससे बड़े तक नहीं बच पाते, जबकि बच्चों व किशोरों की स्थिति अधिक जोखिम में है।

इस तरह इंटरनेट सामग्री मादक पदार्थ जैसी है। कई मामलों में सोशल मीडिया व इंटरनेट के कारण बच्चों की पढ़ाई, स्कूल, नींद तक प्रभावित हो रहे हैं।

सोशल मीडिया पर कुछ लोग दूसरों के अधिक फॉलोअर्स और अपनी पोस्ट पर कम कमेंट्स और लाइक्स के चलते अवसादग्रस्त हो रहे हैं। अनिद्रा से लेकर सरदरद के शिकार हो रहे हैं।

लगातार मोबाइल की स्क्रीन पर टकटकी लगाकर देखने से अनेकों को सरदर्द से लेकर थकान की समस्या घर कर

रही है। थोड़ी देर तक मोबाइल देखने पर इनकी आँखों में पानी आने लगता है। आश्चर्य नहीं कि आज कम आयु में चश्मे लग रहे हैं। लगातार घंटों गलत ढंग से बैठने पर शरीर का संतुलन भी बिगड़ जाता है, जिसके चलते गरदन और कमर दर्द की समस्याएँ आम होती जा रही हैं।

सोशल मीडिया की इस लत से बाहर निकलने के लिए पहले यह अनुभव आवश्यक है कि यह जीवन की एक समस्या बन चुका है तथा इससे बाहर निकलना है। मालिक की तरह इसका उपयोग करना है, न कि गुलाम की तरह। साथ ही सबसे पहले उन कारणों पर ध्यान दें, जिनके कारण आपको बार-बार मोबाइल को छूने की तलब उठती है। इसके साथ सोशल मीडिया के उपयोग का समय निर्धारित करें कि किस समय व कितनी देर इसका उपयोग करना है।

इससे इसकी लत पर नियंत्रण करने में काफी सीमा तक सहायता मिलेगी। इससे अपने कार्यों में मन को एकाग्र करना सरल होगा। सोते समय मोबाइल को पास न रखें। इससे एक तो आप स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली इसकी हानिकारक किरणों से बचेंगे, साथ ही इससे सोशल मीडिया का सीमित उपयोग संभव हो पाएगा। ऐसे में प्रातः उठने पर मोबाइल से दिन के शुरुआत की आदत भी नहीं पनपेगी।

इसके साथ अपनी पसंद के कार्यों में स्वयं को व्यस्त रखें। अपने आत्मीय मित्रों व रिश्तेदारों से सोशल मीडिया के बजाय व्यक्तिगत रूप से मिलें और सदा याद रखें कि आप सोशल मीडिया या मोबाइल के गुलाम नहीं हैं, आपके जीवन की सुख-शांति को छीनने का इसको कोई अधिकार नहीं है तथा आपको मालिक की तरह इसका उपयोग करना है।

संगीता वार्ष्णेय

सोरों

देवगुरु आचार्य बृहस्पति के पुत्र कच को ब्रह्मसाक्षात्कार करने की इच्छा हुई। इसके लिए वह वन में जाकर तप करने लगा। वर्षों बीत गए। एक दिन आचार्य उसे देखने वन में गए। वहाँ उन्होंने देखा कि कच बहुत ही कम आहार लेता था।

बृहस्पति ने उससे पूछा—"पुत्र! तुमने तप करके क्या पाया?" कच बोला—"पिताजी! मैंने सारे सुखों का त्याग कर दिया है, फिर भी मुझे ब्रह्मसाक्षात्कार नहीं हुआ।"

इस पर बृहस्पति ने कहा—"पुत्र! सर्वत्याग करने से तप सफल होगा।" अब कच ने सभी वस्त्रों व भोजन का पूर्ण त्याग कर दिया और कड़ी तपस्या में जुट गया।

कुछ वर्षों पश्चात् बृहस्पति उससे मिलने पहुँचे। पूछने पर इस बार भी कच ने पहले वाला ही उत्तर दिया। इस पर आचार्य बृहस्पति ने उसे समझाते हुए कहा—"पुत्र! सर्वत्याग का अर्थ न तो वस्त्र उतार देना है और न ही आहार छोड़ देना है। तुम शारीरिक तप तो कर रहे हो, परंतु आंतरिक तप अभी भी नहीं हो पा रहा है। सर्वत्याग का अर्थ अपने अहंकार को त्याग देना है। तुम्हें ब्रह्म को पाने के लिए अहं को त्यागना पड़ेगा। वर्तमान में तुम्हें अपने जिस त्याग पर अभिमान है और जिस इंद्रियदमन को तुम तप समझ रहे हो, वही तुम्हारी साधना की सफलता में अब बाधा बन रहा है।"

कच को उनका कहा समझ में आ गया और वह अहंकार त्यागकर भक्तिभाव से साधना में रत हो गया। ऐसा करते ही उसे ब्रह्मसाक्षात्कार हो गया।

सकारात्मक सोच से मिलती है सफलता

मनुष्य के जीवन की सच्चाई यह है कि इसमें हमेशा, हर कदम पर चुनौतियाँ खड़ी मिलती हैं। चुनौतियाँ कभी हमारे सामने होती हैं तो कभी, हम उनके सामने। अंतर मात्र इस बात का है कि कब हम सकारात्मक होते हैं और कब नकारात्मक। जीवन विद्या के मर्मज्ञों का अनुभव है कि हम जब सकारात्मक होते हैं तो हमारी ऊर्जा के समस्त आंतरिक स्रोतों में स्वत: स्पंदन आरंभ हो जाता है और धीरे-धीरे सारे ऊर्जाकेंद्र जाग्रत होने लगते हैं व उनमें अंतर्निहित शक्तियों का ऊर्ध्वगमन होने लगता है।

जीवन की सकारात्मकता थोड़े समय में ही हमारे भीतर स्फूर्ति और ताजगी का एहसास कराने लगती है। हमारा मनोबल-आत्मबल-संकल्पबल बढ़ने लगता है। ऐसी स्थिति में हम एक वीर योद्धा की भाँति चुनौतियों का सामना कर पाते हैं और उन पर विजय प्राप्त करना ही एकमात्र उद्देश्य हो जाता है। इसमें विजय सुनिश्चित होती है; क्योंकि इस तरह की सफलता के बीज हमारी सकारात्मकता से उत्पन्न होते हैं।

हमारी सकारात्मकता अथवा नकारात्मकता में ही सफलता और असफलता के बीज मौजूद होते हैं। सकारात्मकता हमारी सफलता को सुनिश्चित करती है और नकारात्मकता हमारी असफलता को सुनिश्चित कर देती है।

सकारात्मकता की सबसे बड़ी खूबी यही है कि कठिन-से-कठिन परिस्थितियाँ भी हम पर हावी नहीं हो पातीं। अंतर्मन कभी संघर्षों-चुनौतियों-समस्याओं के समक्ष भयभीत नहीं होता—घबराता नहीं। किसी कार्य अथवा लक्ष्य में यदि असफलता मिल भी जाए तो सकारात्मकता व्यक्ति के लिए यह असफलता भी एक ऐसी सीढ़ी या सोपान बन जाती है जो उसे और अधिक साहस और ऊर्जा से भर देती है।

सकारात्मकता की स्थिति में व्यक्ति, मार्ग की प्रत्येक अड़चनों-बाधाओं को अपनी शक्ति-सामर्थ्य और असफलता की प्राप्ति का माध्यम बना लेता है। विपरीतताओं-चुनौतियों से वह कभी डरता नहीं, वरन मजबूती से उनका सामना करता है। ऐसे में उसके व्यक्तित्व की सारी खूबियाँ धीरे-धीरे प्रकट होने लगती हैं।

जीवन की प्रकृति का एक सामान्य नियम यह है कि जब आप किसी चुनौती को स्वीकार करते हैं और उस पर विजय प्राप्त करते हैं तो उपहारस्वरूप एक नई क्षमता की उपलब्धि होती है। क्षमता और सामर्थ्य का अपरिमित भंडार तो सभी में अंतर्निहित होता है परंतु एक सकारात्मक व्यक्ति के व्यक्तित्व में ही भीतर की क्षमताएँ और संभावनाएँ निखरकर आती हैं।

जीवन की प्रत्येक चुनौती, हरेक संघर्ष हमारी क्षमताओं-संभावनाओं को उभारने-निखारने का अवसर होता है, लेकिन इन अवसरों का लाभ व्यक्ति की सकारात्मक प्रवृत्ति से ही संभव हो पाता है। नकारात्मक व्यक्ति चुनौतियों-संघर्षों से भयभीत हो भाग खड़ा होता है, इसलिए उसके लिए व्यक्तित्व को क्षमतावान बनाने वाले अवसरों के दरवाजे सदैव बंद ही रहते हैं।

किसी व्यक्ति के जीवन में असफल हो जाने के पीछे का यही मूल कारण है। असफलता का तात्पर्य ही है कहीं-न-कहीं व्यक्तित्व की शक्ति-सामर्थ्य का अवरुद्ध हो जाना, क्षय हो जाना। यहाँ यह समझ लेना जरूरी है कि नकारात्मक चिंतन और नकारात्मक भावनाएँ हमारी क्षमताओं के विकास में भारी बाधाएँ पैदा करते हैं।

व्यक्ति स्वयं के प्रति परिस्थितियों के प्रति जहाँ-जहाँ नकारात्मक होता है, वहीं-वहीं असफल भी होता है। सफलता का मार्ग इसके विपरीत होता है। सफलता का आकलन दो ही दृष्टि से किया जाता है, एक व्यक्तित्व विकास के रूप में और दूसरा उपलब्धियों के रूप में। जीवन में इन दोनों मानदंडों को पूरा करने की एकमात्र शर्त है—व्यक्ति का हर दृष्टिकोण में सकारात्मक बने रहना।

सकारात्मकता के कारण ही जीवन की प्रत्येक चुनौती, हर संघर्ष का परिणाम जीत होती है। हरेक प्रयास और पुरुषार्थ की दिशा सही होती है। व्यक्तित्व विकसित और क्षमतावान बनने लगता है। सकारात्मकता की नींव पर ऐसे अनगिनत चमत्कार जीवन के धरातल पर प्रकट होने लगते हैं। जीवन के सूक्ष्म विज्ञान को हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि बखूबी समझते थे, इसलिए उन्होंने मनुष्य जीवन के प्रत्येक आयामों में सकारात्मकता बनाए रखने वाली प्रक्रियाओं-प्रेरणाओं को समाहित किया।

जप, तप, ध्यान, योग, स्वाध्याय, साधना, उपासना, भजन, कीर्तन जैसी अनेकों तकनीकों को दैनिक जीवनचर्या से जोड़कर ही हमारे ऋषियों ने आदर्श जीवनपद्धति का निर्माण किया। इसमें ऐसे जीवन सूत्र मौजूद हैं, जो व्यक्ति को कठिन-से-कठिन परिस्थितियों-चुनौतियों और संघर्षों के बीच भी सकारात्मक बनाए रखते हैं, परंतु दुर्भाग्य से मनुष्य ऐसी आदर्श जीवनपद्धति और जीवनसूत्रों को नजरअंदाजकर आधुनिक भोगवादी और भौतिकवादी जीवनशैली को अपनाकर स्वयं ही नकारात्मकता उत्पन्न करने वाले कारकों से जुड़ जाता है।

जीवन में सफलता और सुख, शांति, प्रसन्नता की प्राप्ति में सकारात्मकता की ही मुख्य भूमिका होती है और सकारात्मकता को सतत बनाए रखने के लिए एक खास जीवन-दृष्टि और जीवनपद्धति की। हमारी देव संस्कृति की विरासत में ये दोनों मौजूद हैं। आवश्यकता है सिर्फ इन्हें जीवन में उतारने और साकार करने की। स्वार्थ, अहं और भोग में लिप्त जीवन जल्द ही नकारात्मकता से भर जाता है और अंततः अनेकों समस्याओं व दु:खों का पर्याय बन जाता है।

नकारात्मकता से युक्त जीवन एक अभिशाप की तरह हो जाता है। ऐसे अभिशाप की स्थिति से बचने का उपाय यही है कि जीवन को सार्थक उद्देश्य और आदर्श जीवनपद्धति के अनुशासन में जिया जाए। सजगतापूर्वक स्वयं भी पड़ताल की जाए कि व्यक्तित्व के किसी भी स्तर पर, किसी भी रूप में नकारात्मकता तो नहीं पनप रही है? मनोभावों में हीन भावना, निराशा, ईर्ष्या, द्वेष, असंतुष्टि, भय, शंका, अपमानित समझना, तुलना करना, कमियाँ खोजते रहना, बुराई-निंदा की प्रवृत्ति जैसे अनेक लक्षण हैं, जिनसे भीतर की नकारात्मकता का पता चलता है। इससे बचने का सरलतम उपाय है जीवन में सकारात्मकता का अवलंबन करना।

परमपूज्य गुरुदेव का कथन है कि मन:स्थिति ही परिस्थितियों का निर्माण करती है, अत: सर्वप्रथम मन:स्थिति को सकारात्मक बनाने का उपाय करना चाहिए। यह उपाय नियमित, उपासना, ध्यान, योग, जप, स्वाध्याय आदि किसी भी रूप में हो सकता है। स्वयं के प्रति जागरूकता बनाए रखने के लिए आत्मबोध और तत्त्वबोध की साधना सर्वोत्तम जीवन सूत्र हैं।

इसके साथ ही कुछ विशेष बातों का अभ्यास अपनी सकारात्मकता को स्थायित्व प्रदान करने में सहायक बनता है, जैसे—दूसरों को प्रोत्साहित करना, स्वयं व दूसरों की कमियों को स्वीकार करते हुए अच्छाइयों पर ध्यान केंद्रित करना, स्वयं को गलतियों के लिए माफ करना, किसी अन्य से अपनी तुलना न करना, अपनी सामर्थ्य एवं क्षमताओं पर विश्वास करना, नकारात्मक लोगों व परिवेश से दूरी बनाए रखना, व्यवहार एवं चिंतन में उदारता एवं सहिष्णुता को बनाए रखना, समस्याओं-चुनौतियों के समक्ष पूर्ण आत्मविश्वास के साथ खड़े रहना, दूसरों के सहयोग एवं सेवा के अवसर को सौभाग्य समझना, अपने निर्धारित कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार बने रहना, बोलने में सदैव सकारात्मक व अच्छे शब्दों का चयन करना, जीवन में घटने वाली अच्छी बातों-अनुभवों के लिए स्वयं और ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करना आदि।

एक बात और जो हमें यहाँ समझ लेनी चाहिए, वह यह कि सकारात्मकता का होना एक अच्छे एवं आदर्श व्यक्तित्व की विशेषता है, परंतु यह कोई जादुई या चमत्कारिक क्षमता नहीं है कि इसके होने से जीवन में परेशानियों-कठिनाइयों, संघर्षों का आना बंद हो जाएगा और सारी परिस्थितियाँ एवं लोग हमारे अनुकूल हो जाएँगे। ऐसा कदापि नहीं होता। परेशानियाँ, चुनौतियाँ, संघर्ष सब कुछ जीवन के उतार-चढ़ाव के रूप में आते रहेंगे। बस, सकारात्मक बने रहने से यह होगा कि ये सब हमारी क्षमताओं और सामर्थ्य को बढ़ाने वाले अवसरों-सोपानों में परिवर्तित होते जाएँगे और जीवन निरंतर प्रखरता, उत्कृष्टता और सार्थकता की दिशा में आगे बढ़ता जाएगा।

राम अवतार गुप्ता,
दिल्ली

आदर्श की पराकाष्ठा भगवान राम

जन्मभूमि अयोध्या में सदियों की प्रतीक्षा के बाद राम भगवान की स्थापना के साथ जैसे एक अँधेरे युग का समापन हुआ और एक नए युग का शुभारंभ हो गया। राष्ट्र की आत्मा जैसे सदियों की तमस् निद्रा के पश्चात् जागा उठी, जिसकी चेतना से पूरे राष्ट्र एवं विश्व में फैले भारतवंशियों तथा सनातन धर्मावलंबियों के बीच एक सांस्कृतिक-आध्यात्मिक चेतनता का संचार हुआ।

निश्चित रूप से ये पल सबके लिए गौरव के, जश्न के, उत्सव के रहे। 22 जनवरी 2024 इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण-अक्षरों में अंकित दिवस हो गया। असंख्य रामभक्तों का तप-त्याग, बलिदान, सेवा एवं भक्ति का भाव इसके साथ जैसे फलित हो उठा।

भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा मात्र एक मंदिर के निर्माण का कार्य नहीं था, यह राष्ट्रीय चेतना के जागरण का महापर्व जैसा रहा, जिसमें शहर, कस्बों से लेकर गाँव के हर घर, मुहल्ले एवं महानगरों में उत्सव का वातावरण दिखा।

जगह-जगह भजन-कीर्तन, जयकारों की गूँज के साथ लोगों की आँखें नम थीं। लगा जैसे घर-घर में राम आ गए। जैसी प्रसन्नता भगवान राम के वनवास के पश्चात् अयोध्या वापस लौट आने पर हुई थी, कुछ ऐसा ही दृश्य इस बार दिख रहा था। पूरा देश दीपों की असंख्य कतारों के साथ जगमगा रहा था। हर घर में दिए जले और हर मन-मंदिर इनके आलोक से प्रकाशित था। निस्संदेह रूप में भगवान श्रीराम राष्ट्रीय जीवन में इस कदर घुले-मिले हैं, कि इनके बिना राष्ट्रीय जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पूर्व हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण—राम सबको जोड़ने वाले सांस्कृतिक-आध्यात्मिक सेतु हैं। जीवन के प्रारंभ से अंत तक और मध्य से सभी चरण रामनाम के साथ ही पूर्ण होते हैं। अभिवादन में राम-राम, कार्य के प्रारंभ व अंत में जय श्रीराम तथा जीवन के अंतिम समय रामनाम सत्य जैसे उद्‌बोधन इसके जीवंत उदाहरण हैं।

जीवन में अनिर्णय के पलों में रामनाम ही तारक मंत्र के रूप में काम आता है, जब गोस्वामी तुलसीदास जी के ये शब्द सहज ही गूँज उठते हैं—

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा॥

वस्तुत: श्रीराम राष्ट्र के हृदय में बसे हुए हैं। स्वयं भगवान शिव भी राम की आराधना करते हैं। वास्तव में दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। राम के ईश्वर शिव हैं तो शिव भी राम की ही माला जपते रहते हैं।

यही संबंध शिव के अंशावतार हनुमान जी का है, जो सतत रामनाम को जपते रहते हैं और भगवान राम भी उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञ भाव से भरे हैं। भगवान राम हनुमान जी के आदर्श हैं, इष्ट हैं, आराध्य हैं। वीर बजरंगी हनुमान जी की महिमा राम रसायन के बिना अधूरी है। मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में भगवान श्रीराम वास्तव में देश के आदर्श हैं।

एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई, एक आदर्श शिष्य, एक आदर्श पति, एक आदर्श शासक, एक आदर्श तपस्वी, एक आदर्श इनसान—सभी भूमिकाओं में आदर्श की पराकाष्ठा श्रीराम में देखने को मिलती है।

उनका जीवन सत्य, सदाचार, मर्यादा, करुणा, दया और धर्म से ओत-प्रोत है। धैर्य और सहनशीलता की तो उनमें पराकाष्ठा है। हर वर्ग और जाति के लोगों के साथ भगवान राम की मित्रता की मिसाल जुड़ी हुई है चाहे वे निषादराज हों या विभीषण, केवट हों या सुग्रीव। मानव से लेकर दानव एवं पशु-पक्षी सभी उनकी आत्मीयता के स्पर्श से कृतकृत्य होते हैं। आश्चर्य नहीं कि अध्यात्म पथ के पथिकों के भी भगवान श्रीराम आदर्श हैं।

सर्वप्रथम वे हनुमान जी के आराध्य, इष्ट, भगवान हैं। सगुण तथा निर्गुण दोनों रूपों में असंख्य भक्तों को तारने वाले श्रीराम ही रहे हैं। रामनाम ने कितनों को भवसागर से पार उतारा है। सबसे बलशाली भक्त हनुमान के साथ लक्ष्मण, सुग्रीव, शबरी से लेकर कबीर, तुलसी, गाँधी जी आदि राम के नाम की महिमा का ही विस्तार हैं।

यही नहीं रावण भी अंतिम समय में राम का नाम पुकारकर अपना लोक-परलोक सुधारता है। रामनाम के प्रभाव से तो पत्थर भी तैरने लगते हैं। वाल्मीकि रामायण में जहाँ उनके जीवन का जीवंत चित्रण होता है, वहीं तुलसीदासकृत रामचरितमानस में जन-जन के बीच भगवान राम के भक्तिमयी आदर्श की प्रतिष्ठापना होती है, जिसकी चौपाइयों का मंत्रवत् प्रयोग किया जाता है।

वस्तुत: श्रीराम विविध रूपों में मानने वालों को मंत्रमुग्ध करते हैं।

एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट-घट में लेटा।
एक राम है जगत् पसारा,
एक राम है जगत् से न्यारा॥

अर्थात् मनुष्य के रूप में राम दशरथ के घर पैदा होते हैं। एक राम हर प्राणी के अंदर आत्मा के रूप में विद्यमान हैं। एक राम संपूर्ण जगत् में व्याप्त हैं और एक राम सकल जग से अलग हैं अर्थात् समस्त ब्रह्मांड के रचयिता, पालनकर्त्ता और संहारकर्त्ता हैं। इस तरह मानव से लेकर ईश्वर-ब्रह्म तक रामनाम की महिमा व्यापती है।

आश्चर्य नहीं कि एक आदर्श समाज एवं राष्ट्र की परिकल्पना भगवान राम के नाम से जुड़कर सहज ही रामराज्य के रूप में सामने आती है। जिस यूटोपिया की, आदर्श राज्य की बात की जाती है, रामराज्य उसका प्रतीक है। ऐसा राज्य-जहाँ कोई कष्ट, अभाव, अन्याय से दु:खी-पीड़ित नहीं होगा, प्रताड़ित नहीं होगा। जहाँ सबकी आधारभूत आवश्यकताएँ पूर्ण होंगी। सबके साथ एक जैसा व्यवहार होगा। किसी के साथ अन्याय नहीं होगा, भेदभाव नहीं होगा। सबके अधिकारों की रक्षा होगी और सबको आगे बढ़ने के समान अवसर मिलेंगे। सब मिल-जुलकर रहेंगे। स्व-स्फूर्त, नैतिकता और आत्मानुशासन के दायरे में जीवन का यापन करेंगे।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य की कल्पना करते हुए राजा के लिए कुछ गुणों का उल्लेख किया है, यथा—शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट नीति पर चलना, धर्मशील होना, प्रजापालक होना, सज्जन एवं उदार होना, स्वभाव से दृढ़ होना, दानशील होना आदि। श्रीराम में आदर्श राजा के ये सभी गुण विद्यमान हैं। उनको अपनी प्रजा प्राणें से भी अधिक प्रिय है। प्रियजन, पुरजन, गुरुजन सबके प्रति राम का व्यवहार आदर्श एवं धर्म के अनुकूल है।

ऐसे रामराज्य में किसी प्रकार की विषमता टिक नहीं सकती और सभी प्रकार के दु:खों से प्रजा को त्राण मिल जाता है। यह रामराज्य की एक आदर्श परिकल्पना है, जिसकी आज महती आवश्यकता है।

वस्तुत: ऐसा रामराज्य अवश्य आएगा, जब भगवान श्रीराम हर हृदय में वास करेंगे। जन-जन के मन में विद्यमान दुर्वासना मिटेगी, श्रेष्ठ भाव जाग्रत होंगे, जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा होगी। व्यक्ति के अंत:करण में यह परिवर्तन होते ही स्वत: ही ये संस्कार परिवार में निस्सृत होंगे, समाज में विस्तारित होंगे, जिसका सम्मिलित परिणाम राष्ट्रीय जीवन में एकता, समता, ममता और शुचिता से युक्त रामराज्य सतयुग के रूप में उभरेगा। इसी के साथ पूरे विश्व में सुख-शांति, सद्भाव-सौहार्द और खुशहाली का नया अध्याय जुड़ेगा।

चन्द्रप्रकाश वार्ष्णेय अलीगढ़

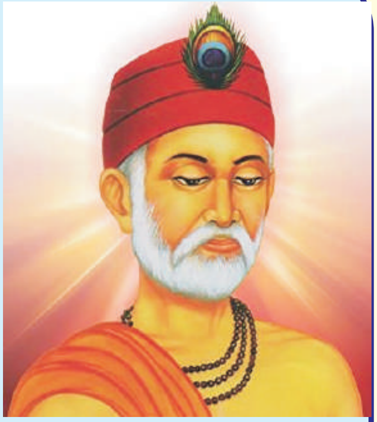

एक व्यक्ति संत कबीर के पा पहुँचा और उनसे प्रश्न करने लगा—"सुखी दांपत्य जीवन का क्या रहस्य है?" कबीर बोले—"अभी थोड़े समय में समझाता हूँ।" कुछ समय पश्चात् कबीर ने अपनी पत्नी को आवाज लगाई—"यहाँ बड़ा अँधेरा है, जरा दीपक तो रख जाओ।" उनकी पत्नी आईं और एक दीपक चौखट पर रख गईं। उस आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कमरे में काफी प्रकाश होते हुए भी कबीर ने पत्नी को बुलाया और वो भी बिना प्रतिवाद के दीपक रखकर चली गईं।

थोड़ी देर में उनकी पत्नी दोनों के लिए भोजन रख गईं। जब दोनों ने खाना आरंभ किया तो संत कबीर की पत्नी ने आकर पूछा—"खाने में कुछ कम तो नहीं है।" कबीर ने उत्तर दिया—"बिलकुल नहीं! खाना बेहद स्वादिष्ट बना है।" उस आदमी को अचरज हुआ कि सब्जी में नमक कम होते हुए भी कबीर ने भोजन की प्रशंसा की।

अब संत कबीर उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए बोले—"अब समझ में आया कि सुखी दांपत्य जीवन का क्या रहस्य है?इसको पाने का एक ही सरल मार्ग है कि हम एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाना सीखें। एक-दूसरे की कमियाँ निकालकर उनको नीचा दिखाने के बजाय यदि हम उनके गुणों को प्रश्रय दें तो गृहस्थ एक तपोवन बन जाए।"

वार्षिक सदस्य 2024 (भूल-सुधार)

1. कपिल गुप्ता	स्व. प्रशांत कुमार गुप्ता	17/205, छिली ईंट रोड, आगरा	8755866667
2. नितिन गुप्ता	स्व. प्रशांत कुमार गुप्ता	17/205, छिली ईंट रोड, आगरा	8077165902

भारतीय ज्योतिष शास्त्र का आधुनिक संन्दर्भ में अनुप्रयोग

मधुमेह के ज्योतिषीय लक्षण—वैदिक ज्योतिष में मेडिकल ज्योतिष का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गुरु वृहस्पति को मानव शरीर में लीवर का कारक माना गया है। शुक्र ग्रह को 'अग्न्याशय' का कारक माना जाता है। मधुमेह रोग ज्ञात करने के लिये गुरु, शुक्र पंचम भाव तथा षष्ठ भाव का अध्ययन करते हैं।

1. जन्म पत्रिका में गुरु वृहस्पति 6,8,12 वें भाव में हों या नीच राशि मकर में हों तो डायबिटीज या मधुमेह की संभावना होती है।
2. शुक्र ग्रह षष्ठ भाव में, द्वादश में वृहस्पति हो तो मधुमेह होता है।
3. वृहस्पति ग्रह शनि एवं राहु के प्रभाव में हो, एक ही नवांश में भी हो।
4. जन्मकुण्डली में गुरु अस्त हो राहु/केतु के अंशों पर हो।
5. शुक्र अष्टम भाव में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो भी मधुमेह होता है।
6. कुण्डली में चन्द्रमा नीच या अशुभ राशि में स्थित है और गुरु भी शुभ नहीं है तो तनाव के कारण मधुमेह होता है।

ज्योतिष में शुक्र और चन्द्रमा को जल तत्व और रसायन का कारक ग्रह माना जाता है। गुरु वृहस्पति को पाचन तंत्र का कारक मानते हैं। यदि शरीर में इंसुलिन की कमी हो जाती है, तो ग्लूकोज का पाचन ठीक प्रकार नहीं होता, अतः मधुमेह रोग होने की सम्भावना बन जाती है।

मणिपुर चक्र शरीर का ऊर्जा केन्द्र है जो नाभि के पास स्थित है। इसके असंतुलन से पाचन संबंधी समस्याएँ क्रोध, प्रेरणा की कमी एवं मानसिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

भगवान शिव जी के मंत्रों का जाप, गुरुवार को पीली वस्तुओं का दान एवं शुक्रवार के दिन सफेद वस्तुओं का दान अवश्य करना चाहिये। पुखराज और हीरा रत्न धारण नहीं करना चाहिये।

ज्योतिषाचार्य डॉ. पूनम वार्ष्णेय
मो. नं. 9219152610
फ्लैट नं. 101, विनायक अपार्ट.
विजय नगर, आगरा

सामान्य ज्ञान

1. फरवरी, मार्च एवं नवम्बर प्रत्येक वर्ष एक ही दिन प्रारम्भ होते हैं।
2. सदैव एक अक्टूबर को वही दिन होगा, जो पहली अप्रैल का होगा।
3. सदैव एक जुलाई को वही दिन होगा जो एक अप्रैल को होगा।
4. इसी तरह पहली दिसम्बर को वही दिन होगा, जो एक सितम्बर को होगा।
5. मई, जून एवं अगस्त सदैव अलग-अलग दिन से प्रारम्भ होते हैं।
6. कोई भी शताब्दी इतवार, बुध और शुक्रवार से आरम्भ नहीं होती।
7. कोई भी जन्त्री बीस साल बाद उसी रूप में उपयोग हो सकती है। दिन, तारीख और महीना में कोई अन्तर नहीं आयेगा।

नुपुर

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि.) का वार्षिकोत्सव 2024 धूमधाम में सम्पन्न

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि) के तत्वाधान में दिनांक 10 नवम्बर 2024 को स्थानीय सूरसदन, संजय प्लेस, आगरा के सभागार में समाज का वार्षिकोत्सव अपराह्न 02 बजे से सम्पन्न हुआ। जिसमें वार्ष्णेय सभा, आगरा के द्वारा समाज के बच्चों का संस्कृतिक कार्यक्रम, वृद्धजन सम्मान, खेलकूद प्रतियोगिता वार्ष्णेय कल्याण के 'मांगिलकोत्सव विशेषांक' के 29 वे अंक का लोकार्पण, प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान, अंत में सामूहिक भोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री केशव कुमार चौधरी, अपर पुलिस, आयुक्त, आगरा, दीप प्रज्जवलकर्ता श्री सर्वेश चंद्रा केडारा एक्सिम (इंडिया) प्रा.लि. दिल्ली, उद्घाटनकर्ता श्री अनिल कुमार वार्ष्णेय, सी-एँफ माइसेम सीमेंट, आगरा, वार्ष्णेय कल्याण के 29वें अंक का विमोचन श्री शैलेश वार्ष्णेय जी, डायरेक्टर, मैग्नम फुटवियर प्रा. लि., आगरा द्वारा किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन श्री राकेश कुमार वार्ष्णेय, चेयरमेन मुरलीकृष्ण चिकोरी प्राइवेट लिमिटेड एटा, के द्वारा किया गया।

पुरस्कार वितरणकर्ता ई. विनय कुमार वार्ष्णेय, सेंट्रल साइंटिफिक इंस्टूमेंट्स आगरा, के द्वारा पुरुस्कार वितरण किया गया। हमारे अतिविशिष्ट अतिथि ई. एन सी गुप्ता सेवानिवृत्त एसडीओ विद्युत विभाग आगरा, श्री प्रहलाद चंद्र गुप्ता उद्योगपति आगरा, राजीव आंधीवाल, उद्योगपति, दिल्ली, अनिल कुमार गुप्ता, चेयरमैन, माँ कामाख्या प्रॉपर्टीज, वृन्दावन, विशिष्ट अतिथि इं. एच. एस. वार्ष्णेय सेवानिवृत्त एसडीओ विद्युत विभाग, श्री सुनील कुमार वार्ष्णेय अलीगढ़ हाथरस गुड्स केरियर आगरा, श्री मुनेन्द्र कुमार वार्ष्णेय, दीप पब्लिकेशन, आगरा, पवन वार्ष्णेय (टिल्लू बाबा) उद्योगपति, आगरा, स्वागताध्यक्ष आगरा, डॉ. अशांक वार्ष्णेय, डायरेक्टर वार्ष्णेय पॉलिपैक प्राइवेट लिमिटेड आगरा रहे।

अतिथियों ने एक सुर में कहा कि समाज का अगर उत्थान करना है तो हमें एकजुट रहना होगा। समाज जितना संगठित होगा समाज उतना ही सशक्त होगा।

मिस उमा वार्ष्णेय, उप निरीक्षक, साइबर क्राइम, आगरा, ने समाज को साइबर क्राइम/ डिजिटल अरेस्ट से बचने के बारे में जानकारी दी।

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा शहर में एकमात्र ऐसी संस्था है जिसके अंतर्गत समाज का प्रत्येक व्यक्ति आत्मिक रूप से जुड़ा हुआ है। जिसके अंतर्गत दो ट्रस्ट श्री वार्ष्णेय धर्मार्थ सेवा सदन (अक्रूर मंदिर), शास्त्रीपुरम, दूसरा श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चैरिटेबल ट्रस्ट सौंठ की मंडी (अक्रूर वाटिका) आगरा, वार्ष्णेय कल्याण पत्रिका का वार्षिक प्रकाशन 28 वर्षों से निरंतर प्रकाशित होता चला आ रहा है इस वर्ष 29वां अंक मांगिलकोत्सव विषेषांक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। जिसका सफल प्रकाशन प्रधान सम्पादक श्री दिनेश चन्द्र गुप्ता (पत्रकार) जी ने अपनी टीम द्वारा किया गया। वार्ष्णेय महिला मंडल जो कि समाज की महिलाओं को एक सूत्र में जोड़े हुए है। वार्ष्णेय कल्याण निधि के द्वारा समाज के निर्धन व्यक्तियों की सहायता हेतु उपलब्ध कराई जाती है। विधि प्रकोष्ठ के द्वारा समाज में हुए पारिवारिक विवाद को इस प्रकोष्ठ के माध्यम से निस्तारण किया जाता है।

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा, जो कि निरंतर अपने प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है इसी क्रम में दिनांक 10 नवम्बर

को हुए वृद्धजन कार्यक्रम 75 वर्ष से अधिक उम्र के 20 वृद्धजनों का सम्मान किया गया, तथा श्री रतन कुमार वार्ष्णेय जी के नेतृत्व में समाज के 55 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का मंच के माध्यम से सम्मान किया गया। समाज के बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिए मंच के माध्यम से 70 बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी जिसका नेतृत्व संजय वार्ष्णेय, श्रीमती कशिश गुप्ता, श्रीमती डिम्पल वार्ष्णेय के द्वारा कराया गया, दिनांक 13 अक्टूबर 2024 को अक्रूर वाटिका, सोंठ की मंडी, आगरा पर श्री भानूप्रकाश वार्ष्णेय के नेत्रत्व में बच्चों एवं महिलाओं की खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें समाज के 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया गया।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ. अशोक वार्ष्णेय एवं सभा के मंत्री ई. सुरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन सभा के अध्यक्ष श्री दाऊदयाल गुप्ता के द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद कुमार गुप्ता, सह मंत्री सुनील कुमार वार्ष्णेय, कोषाध्यक्ष आर.बी. गुप्ता, ऑडिटर लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय, कोठारी योगेश कुमार वार्ष्णेय, कार्यकारिणी सदस्य हेमंत वार्ष्णेय, संजय वार्ष्णेय, दीपक कुमार वार्ष्णेय, मदन मोहन वार्ष्णेय, पंकज गुप्ता, रतन कुमार वार्ष्णेय, और मनोज कुमार गुप्ता आदि का सहयोग लिया जा रहा है तथा दिनेश चंद गुप्ता 'पत्रकार', वीरेश वार्ष्णेय, शरद वार्ष्णेय, संजीव बाबू गुप्ता, तुषार वार्ष्णेय, सुमित वार्ष्णेय, राकेश चंद गुप्ता पत्रकार, वीरेश वार्ष्णेय, शरद वार्ष्णेय, Adv योगेन्द्र वार्ष्णेय, महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मन्जू वार्ष्णेय, मंत्री श्रीमती रेनू गुप्ता, रजनी वार्ष्णेय, रीना गुप्ता, रीनू वार्ष्णेय, मोहिनी वार्ष्णेय, डिंपल वार्ष्णेय, बविता वार्ष्णेय, तथा समाज के अनेक गणमान्य बन्धु एवम् महिलायें उपस्थित रही तथा विभिन्न समितियों के माध्यम से भी इस वार्षिकोत्सव को भव्यता प्रदान की गई है जिसके लिए सभी धन्यवाद के पात्र है।

भानू प्रकाश वार्ष्णेय, मीडिया प्रभारी
श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा

महिला मण्डल की चुनाव रिपोर्ट

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा रजि. के अंतर्गत संचालित महिला मंडल का चुनाव सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार दिनांक 26-10-2025 दिन रविवार को श्री अक्रूर वाटिका, सोंठ की मंडी, आगरा-मथुरा रोड, (मानसिक चिकित्सालय के सामने) आगरा पर सम्पन्न हुआ। चुनाव अधिकारी—ई. विनय कुमार वार्ष्णेय 5/99, आगरा-मथुरा रोड, बिल्लोचपूरा, आगरा, श्री अनिल कुमार वार्ष्णेय, 87, राहुल ग्रीन, दयालबाग, आगरा थे। चुनाव प्रक्रिया के पश्चात् निम्न परिणाम प्रस्तुत हैं—श्रीमती मंजू वार्ष्णेय (अध्यक्ष), श्रीमती रजनी वार्ष्णेय (वरिष्ठ उपाध्यक्ष) श्रीमती रश्मि वार्ष्णेय (कनिष्ठ उपाध्यक्ष) श्रीमती रीनू वार्ष्णेय (मंत्री), श्रीमती सीमा वार्ष्णेय (कोषाध्यक्ष), श्रीमती सरिता वार्ष्णेय (सहमंत्री), श्रीमती मेघा वार्ष्णेय (संगठन मंत्री), श्रीमती नीतू गुप्ता (प्रचार मंत्री), एवं कार्यकारिणी सदस्य निम्न चुने गए—श्रीमती अंजना वार्ष्णेय, श्रीमती मोहिनी वार्ष्णेय, श्रीमती सुनीता अत्रि, श्रीमती रीना गुप्ता, श्रीमती सीमा गुप्ता, श्रीमती कुमकुम गुप्ता, श्रीमती डिम्पल वार्ष्णेय। परिणाम की घोषणा एवं चयनित पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण उपरोक्त चुनाव अधिकारियों द्वारा पूर्ण कराया गया।

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा का होली मिलन समारोह धूम-धाम से सम्पन्न

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह स्थान—अक्रूर वाटिका (श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चैरिटेबल ट्रस्ट), सौंठ की मंडी, आगरा पर 9 मार्च को सम्पन्न हुआ, होली मिलन अत्यंत रोमांचकारी मनोरंजक एवं मंगलमय रहा। समाज के पूर्ण सहयोग हेतु सभी सदस्यों एवं महिलाओं एवं बच्चों को सभा की तरफ से हृदय से व्यक्त करते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत ई. विनय कुमार वार्ष्णेय, ई एन.सी.गुप्ता, डॉ अशोक वार्ष्णेय (पॉलीपैक) ने अक्रूरजी पर माल्यार्पण एवं सभा के अध्यक्ष श्री दाऊदयाल गुप्ता ने दीप प्रज्वलित करके किया। होली के अवसर पर हास-परिहास, अबीर गुलाल, चंदन होली, गीत, महिलाओं एवं पुरुषों के डान्स एवं कशिश गुप्ता ने समाज के बच्चों की प्रस्तुति करवाकर कार्यक्रम में समा बांध दिया। वृन्दावन से आई रासमण्डली ग्रुप ने अपनी शानदार झाँकी प्रस्तुति कर समा बांध दिया। गणेश वंदना, मयूर नृत्य, शिव पार्वती झाँकी एव लट्ठमार होली, फूलों की होली ने सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया।

समाज के सभी सदस्यों को होली के उत्सव का अनुभव कराते हुए सभी सदस्यों को मोहित किया।

सभी सदस्यों ने ठंडाई एवं स्वादिष्ट व्यंजनों का भरपूर आनंद लिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री ई. सुरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय ने किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अशोक वार्ष्णेय (होम्यो) ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया।

पुनः एक बार सभी सम्मानित बंधुओं का हृदय से आभार जिन्होंने होली मिलन समारोह में अपनी भागीदारी करके कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। आशा करते हैं कि आगामी कार्यक्रमों में भी श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा को आप सबका इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा। होली मिलन समारोह में विनोद कुमार गुप्ता, प्रहलाद चन्द्र गुप्ता, सुनील कुमार वार्ष्णेय, आर. बी. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय, योगेश वार्ष्णेय, संजय वार्ष्णेय, हेमंत वार्ष्णेय, दीपक वार्ष्णेय, मदनमोहन वार्ष्णेय, पंकज गुप्ता, मनोज गुप्ता , संजीव बाबू गुप्ता, ई. योगेश गुप्ता, महेश चन्द्र वार्ष्णेय, अनिल कुमार वार्ष्णेय (खाद वाले), गिरिराज किशोर गुप्ता, नेमीचन्द्र वार्ष्णेय, डॉ. राजेश गुप्ता, डॉ एस. सी. गुप्ता, सुनील कुमार, राकेश चन्द्र, कालीचरण गुप्ता, यशपाल गुप्ता, कुंज बिहारी गुप्ता, ब्रजेश वार्ष्णेय, भुवनेंद्र वार्ष्णेय, अनुराग किशोर वार्ष्णेय, हरि शंकर वार्ष्णेय, शरद वार्ष्णेय, विनय कुमार वार्ष्णेय, मुकुल गुप्ता राज बहादुर गुप्ता, चंद्रकुमार, राजेंद्र कुमार, अनिल गुप्ता पवन कुमार राजीव गुप्ता अभिषेक गुप्ता, सुमित गुप्ता, डॉ पवन गुप्ता, जितेन्द्र कुमार, सुधीर आनंद पंकज गुप्ता, कुलदीप गुप्ता, भारत वार्ष्णेय, सचिन गुप्ता, भानु प्रकाश वार्ष्णेय, नरेश वार्ष्णेय, विजय वार्ष्णेय, गिरीश वार्ष्णेय, राजीव गुप्ता, अमित गुप्ता, मनोज गुप्ता, जगदीश प्रसाद, विजय गुप्ता एवं महिला मण्डल से मंजू वार्ष्णेय, रीनू वार्ष्णेय, कुमकुम वार्ष्णेय, रजनी गुप्ता, ऊषा गुप्ता, सरिता गुप्ता, मोहिनी वार्ष्णेय, बबीता वार्ष्णेय अपनी पूरी टीम के साथ अनीता गुप्ता, डॉ. नीना गुप्ता, हंसा वार्ष्णेय, रुचि वार्ष्णेय ने महिलाओं के साथ मिलकर विभिन्न वेश-वूशा में नृत्य किया जिसका सभी ने आनंद उठाया एवं अन्य गणमान्य बंधुओं ने अपनी सहभागिता की। होली की शुभकामनाओं सहित।

ई० सुरेंद्र कुमार वार्ष्णेय
मंत्री
श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (राजि.)

PERSONAL DETAILS

वधु चाहिए

Name : Shivam Varshney
Date of Birth : August 8, 1997
Height : 6 Feet
Place of Birth : Agra
Birth Time : 6:48 AM
Caste/Gotra : Baniya/Kashyap (Non- Manglik)
Occupation : Senior Project Engineer
Company : Socomec Group (French MNC), Gurugram
Education : B.Tech. (Mechanical) (GLA University)

FAMILY DETAILS

Father's Name: Mr. Vinod Kumar Gupta, Businessman
. (Shree Krishna Oriental Rugs)
Contact Number : 9412167408
Mother's Name : Mrs. Rajni Varshney, Home maker (M.A ; B.Ed)
Contact Number : 7505371872
Residential Address : 7, Sheetla Dham Colony, Dayal Bagh, Agra

वधु चाहिए

नाम	**शिवम गुप्ता**
लम्बाई	5'10" रंग गोरा तथा स्लिम
शिक्षा	B.Tech.
सर्विस	सीनियर एनालिस्ट MNC गुरुग्राम
आयु	35 वर्ष
पिता	श्री वी. के. वार्ष्णेय
माता	श्रीमती नीलम वार्ष्णेय
भाई	नहीं
बहिन	दो (विवाहित)
अन्य	स्वयं का फ्लैट
युवती	सर्विस शुदा अन्य वैश्य भी मान्य
सम्पर्क सूत्र	मो. 9478087167, 9417185167 (चंडीगढ़, ट्राईसिटी) 9456803311 (आगरा)

चि. शुभम् वार्ष्णेय पुत्र श्रीमती ललितेश वार्ष्णेय एवं विनोद कुमार वार्ष्णेय 33/6, शक्ति नगर, बल्केश्वर चौराहा, आगरा का विवाह **सौ. का. सोनाली वार्ष्णेय** सुपुत्री श्रीमती संध्या वार्ष्णेय एवं श्री नीरज वार्ष्णेय 9 दिसम्बर, 2024 को अग्रवन, वाटरवर्क्स चौराहा, आगरा पर हुआ। *वार्ष्णेय सभा, आगरा आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।*

स्मृति शेष . . .

अंजुलि भर श्रृद्धा-सुमन

स्व० श्रीमती सरोज देवी वार्ष्णेय पत्नी स्व० श्री उमा शंकर वार्ष्णेय का दिनांक 14.12.2024 को 7 बजे सहावर में निधन हो गया। आप श्री पवन कुमार वार्ष्णेय (टिल्लू बाबा) सहावर वालों की माताजी थीं, आप बहुत ही सरल एवं मृदुभाषी तथा धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। आपने अपने पीछे भरा-पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

स्व० श्री महेश चंद गुप्ता (Advocate) जी का निधन 18 जनवरी, 2025 को 71A, न्यू शाहगंज, आगरा में हो गया। आप बहुत ही सौम्य एवं सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। आपने अपने पीछे भरा-पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

स्व० श्री वीरेन्द्र पाल गुप्ता (सेवानिवृत मैनेजर, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया) का स्वर्गवास दिनांक 13 जुलाई 2025 को अपने निवास कर्मयोगी, कमला नगर, आगरा पर हो गया है। आप सहज एवं सौम्य एवं सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे।आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

स्व. श्री देव शंकर वार्ष्णेय पुत्र स्व. श्री नारायण दास वार्ष्णेय निवासी कटरा वजीर खां, रामबाग, आगरा का निधन दिनांक 10 अगस्त, 2025 को सुबह 6 बजे हो गया है। आप बहुत ही सौम्य एवं सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवदेना व्यक्त करती है।

स्व. श्री हरिदर्शन वार्ष्णेय उर्फ शालू निवासी कटरा वजीर खाँ, आगरा का निधन लम्बी बीमारी के बाद दिनांक 21 अगस्त, 2025 हो गया है। आप बहुत ही सौम्य एवं सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवदेना व्यक्त करती है।

स्व. श्रीमती सत्यवती देवी वार्ष्णेय पत्नी स्व० श्री मोरमुकुट वार्ष्णेय, डबल हाथरस वाले का निधन 16-12-2024 को बारह पूरा, बेलनगंज, आगरा पर हो गया है। आप बहुत ही सरल एवं मृदुभाषी तथा धार्मिक प्रवर्ति की महिला थीं। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

स्व. श्रीमती आशा रानी का स्वर्गवास दिनांक 1 नवम्बर, 2025 दिन शनिवार को हो गया। आप बहुत ही सरल एवं मृदुभाषी तथा धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

श्रीमती कुसुम लता गुप्ता पत्नी स्व. श्री वीरेन्द्र पाल गुप्ता का निधन 06-12-2025 को K-44 कर्मयोगी एन्कलेव कमलानगर, आगरा को हो गया है। आप मृदुभाषी सरल स्वभाव की महिला थीं। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शेक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

श्री केदार नाथ गुप्ता (अचार वाले) का स्वर्गवास 07/12/2025 को 54, नटराज पुरम, कमला नगर, आगरा पर हो गया। आप बहुत ही सरल एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

श्री जितेन्द्र कुमार जी (यूनाइटेड इण्डिया इन्श्योरेन्स) पुत्र स्व. श्री मा. श्यामकृष्ण वार्ष्णेय निवासी अलीगढ़ का स्वर्गवास 07/12/2025 को हो गया है। आप बहुत ही सरल एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आप ई. सुरेंद्र वार्ष्णेय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा के बड़े भाई थे। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

स्व० अशोक कुमार वार्ष्णेय पुत्र स्व० हजारी प्रसाद वार्ष्णेय निवासी सी–63 ट्रांस यमुना कॉलोनी, आगरा का स्वर्गवास आक्सीजन लेवल कम हो जाने के कारण तथा फेफड़ों में संक्रमण हो जाने के कारण हो गया। आपने दो पुत्र पंकज, गौरव व एक पुत्री को रोते बिलखते छोड़ा है। आप बहुत ही सरल एवं मृदुभाषी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के थे। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संवेदना व्यक्ति करती है।

स्व० चित्रा गुप्ता पत्नी स्व० घनेन्द्र कुमार गुप्ता निवासी 49, पुनीत विहार, डॉक्टर मारिया स्कूल के सामने, पश्चिमपुरी, आगरा का स्वर्गवास दिनांक 14 दिसम्बर, 2025 को हो गया। आप बहुत ही सरल एवं मृदुभाषी तथा धार्मिक प्रवर्ति की महिला थीं। आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार को रोते बिलखते छोड़ा है। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा शोक संतृप्त परिवार को गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है।

जातीय प्रतिभा

आगरा नगर के लिए गौरव का क्षण आया है जब सहसवान विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के पूर्व प्रत्याशी **आशुतोष वार्ष्णेय उर्फ भोला** के युवा पुत्र **कार्तिकेय वार्ष्णेय** का चयन **उत्तर प्रदेश की अंडर-19 टीम** में हुआ है। कार्तिकेय की इस उपलब्धि से पूरे आगरा शहर में हर्ष की लहर दौड़ गई है।

कार्तिकेय वार्ष्णेय एक प्रतिभाशाली **स्पिन गेंदबाज** हैं, जो पिछले चार वर्षों से **बोर्ड ट्रॉफी** में उत्तर प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। क्रिकेट के क्षेत्र में उन्होंने लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपनी पहचान बनाई है।

उन्होंने नोएडा के प्रसिद्ध कोच **अफजल** के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपनी मेहनत तथा लगन से राज्य स्तर पर पहचान बनाई। हाल ही में खेले गए **विजय मर्चेंट ट्रॉफी** में कार्तिकेय ने शानदार गेंदबाजी करते हुए **पूरे टूर्नामेंट में 32 विकेट** लेकर कीर्तिमान स्थापित किया और टीम को कई मैचों में जीत दिलाई। उनके इस प्रदर्शन ने चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें उत्तर प्रदेश अंडर-19 टीम में स्थान मिला है। इस उपलब्धि पर नगर के खेलप्रेमियों, शिक्षकों और राजनीतिक व सामाजिक संगठनों ने कार्तिकेय और उनके परिवार को बधाई दी है।

कार्तिकेय के पिता आशुतोष वार्ष्णेय ने इस अवसर पर कहा—"यह हमारे परिवार ही नहीं, पूरे आगरा के लिए गर्व का क्षण है। कार्तिकेय ने अपनी मेहनत और लगन से यह मुकाम हासिल किया है। हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में वह राज्य ही नहीं, देश का नाम भी रोशन करेगा।"

कार्तिकेय ने कहा कि उनका सपना **भारतीय क्रिकेट टीम** के लिए खेलने का है और इसके लिए वो निरंतर अभ्यासरत हैं। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि०) आपकी उच्चतम सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करती है।

कु० तनीषा गुप्ता सुपुत्री ई. मनोज कुमार निवासी आगरा-अलीगढ़ रोड, अलीगढ़ ने MBBS-AIMS से गोल्ड मैडल प्राप्त किया। वर्ष 2025 में NEET PMG में 557 रैंक और PG-INI-CET में 1072 वी रैंक पाकर MD में प्रवेश प्राप्त कर वार्ष्णेय समाज का गौरव बढ़ाया। डा. तनिषा गुप्ता दयाल बाग निवासी ई. के. सी. गुप्ता जी की धेवती हैं।

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि०) आपकी उच्चतम सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करती है।

नगर के प्रमुख कारोबारी, नेशनल चैम्बर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष और आगरा क्लब के पूर्व निदेशक प्रदीप कुमार वार्ष्णेय के ज्येष्ठ पुत्र **आशीष वार्ष्णेय** ने अमेरिका में उपलब्धि हासिल की है। आशीष को अमेरिका की प्रमुख कंपनी एवरकोर के हेल्थकेयर

टेक्नोलॉजी पर केंद्रित हेल्थकेयर इन्वेस्टमेंट बैंकिंग समूह में वरिष्ठ प्रबंध निदेशक बनाया गया है। उनका कार्य न्यूयॉर्क में रहेगा।

उनकी नियुक्ति को अमेरिकी समाचार पत्रों में भी प्रमुखता से स्थान दिया गया। समाचार पत्र द बिजनेस वायर ने लिखा–अमेरिकी निवेश बैंकिंग के सह–प्रमुख नवीन नटराज ने कहा, "हम आशीष का एवरकोर में स्वागत करते हुए बेहद उत्साहित हैं। स्वास्थ्य सेवा तकनीक में उनकी गहरी विशेषज्ञता इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में हमारी स्वास्थ्य सेवा सलाहकार क्षमताओं को और मजबूत करेगी।"

नई जिम्मेदारी मिलने पर आशीष वार्ष्णेय ने कहा, "मुझे ऐसे समय में एवरकोर में शामिल होकर खुशी हो रही है जब स्वास्थ्य सेवा में डिजिटल परिवर्तन बड़े पैमाने पर विकास के अवसर पैदा कर रहा है। मैं स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र में अपने ग्राहकों के लिए प्रभावशाली परिणाम तैयार करके इस क्षेत्र में एवरकोर के निरंतर नेतृत्व में योगदान देने के लिए उत्सुक हूँ।"

आशीष वार्ष्णेय को लगभग दो दशकों का स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकी निवेश बैंकिंग अनुभव है। हाल ही में, उन्होंने ट्रिपल–ट्री कंपनी में प्रबंध निदेशक के रूप में कार्य किया।

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि०) आपकी उच्चतम सफलता हेतु हार्दिक शुभकामना एवं बधाई प्रेषित करती है।

शम्भू कुंज निवासी श्री प्रेम शंकर गुप्ता जी पुत्र श्री अमित गुप्ता जी के पुत्र **अथर्व गुप्ता** ने इस वर्ष सी ए इंटरमीडिएट परीक्षा में 481 अंक पाकर देशव्यापी रैंकिंग में 13वां स्थान प्राप्त किया। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा अथर्व गुप्ता की सफलता पर हार्दिक स्वागत एवं सम्मान करती है। आशा करती है कि भविष्य में ऐसे ही सफलता की और अग्रसर हो। ऐसी हमारी कामना है।

वर चाहिए

Shiya Varshney

Date of Birth	:	08-08-1999, 5 : 25 A.M.
Place of Birth	:	Kasganj
Complexion	:	Fair
Height	:	5' 2"
Qualificaiton	:	Bachelor of Dental Surgery K. D. Dental College, Mathura

FAMILY DETAILS

Father's Name	:	Dr. Prabhat Varshney Business, MD Sethji Group, Patiyali, Kasganj
Mother's Name	:	Smt. Geeta Varshney
Siblings	:	1. Dr. Shivam Varshney, B.D.S. (Married) 2. Sri Satyam Varshney (Married)
CONTACT	:	8868068067, 7827073191, 9719601111
Address	:	Moh. Bakkalan, Patiyali, Kasganj

श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चेरिटेबिल ट्रस्ट (अक्रूर वाटिका), आगरा

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि.) आगरा की कई संस्था सुचारु रूप से संचालित की जा रही हैं। उनमें से एक संस्था श्री नत्थीलाल वार्ष्णेय चैरिटेबली ट्रस्ट द्वारा अक्रूर वाटिका का सफल संचालन किया जा रहा है। यह आगरा शहर के मध्य मथुरा रोड, सोंठ की मंडी पर स्थित है। इस वाटिका में विवाह, जन्मदिन तथा अन्य मांगलिक कार्यक्रम बहुत ही सुलभ दरों पर समाज के लिए किया जाता है। वाटिका में होम्योपैथिक के चिकित्सालय का संचालन डा० अशोक वार्ष्णेय द्वारा भी संचालन किया जा रहा है। जिससे समाज तथा आस-पास के निवासी लाभार्थित हो रहे हैं। इस वाटिका को अधिक से अधिक सौन्दर्यीकरण का प्रयास किया जा रहा है। एक हाल निर्माणाधीन है। स्टेज हेतु 30× 50 का टीन सेड निर्माण किया जा चुका है।

वार्ष्णेय समाज के बन्धुओं से निवेदन है कि आप अपने मांगलिक-कार्य वाटिका में कराएँ। जिससे वाटिका को अर्थिक आय हो सके, तथा वाटिका को विभिन्न अवसरों पर आप दान देकर पूण्य लाभ कमाएँ। इसके उत्थान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

विनय कुमार वार्ष्णेय (सरंक्षक) **डॉ. अशोक वार्ष्णेय** (अध्यक्ष) **विनोद कुमार गुप्ता** (कोषाध्यक्ष) **ई. डी.सी वार्ष्णेय** (सचिव)

विधि प्रकोष्ठ, श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

सभा के द्वारा समाज के वैवाहिक विवाद एवं अन्य विवादों को पारस्परिक बातचीत से तय करने के उद्देश्य से विधि प्रकोष्ठ कार्यरत है, इसमें कानूनी सलाह निःशुल्क दी जाती है तथा यह प्रयास किया जाता है कि विवाद न्यायालय में ना जाए समाज के स्तर से ही निवटाया जाये।

ई. विनय कुमार वार्ष्णेय (चेयरमेन)
मो. 9412721271, 9319105144

महेश चन्द वार्ष्णेय (खाद वाले)
मो. 9412723301
(सदस्य)

अनिल कुमार वार्ष्णेय
मो. 8146623400
(सदस्य)

श्री वार्ष्णेय परिवार कल्याण निधि

अन्तर्गत-श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

श्री वार्ष्णेय परिवार कल्याण निधि समाज के निर्धन/जरूरतमंद परिवारों की कन्याओं का विवाह, छात्र/छात्राओं की शिक्षा, पुस्तकों व निराश्रित महिलाओं के जीविकोपार्जन में सहयोग करती है।

इस वर्ष निर्धन कन्या के विवाह व जरूरतमंद छात्रा की शिक्षा हेतु सहयोग किया गया।

अतः समाज के निर्धन वर्ग के सहयोग हेतु मुक्त हस्त से सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

आप अपनी सहयोग राशि निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

नाम — श्री वार्ष्णेय परिवार कल्याण कल्याण निधि
बैंक — पंजाब नेशनल बैंक, कारगिल, आगरा
IFS Code : PUNB0089910 **A/c. No. :** 1639000100107693

प्रहलाद चन्द्र गुप्ता (चेयरमैन)
17/39, माईथान, आगरा मो. 9412064812

अक्रूर वाटिका में खेलकूद प्रतियोगिता एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि.) के तत्वाधान में अक्रूर वाटिका, सोंठ की मंडी में खेलकूद प्रतियोगिता एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों ने प्रतिभाग लिया। जिसका संचालन सभा के मंत्री विनोद कुमार गुप्ता एवं कार्यक्रम संयोजक संजीव बाबू गुप्ता के संयोजन में हुआ जिसकी अध्यक्षता दाऊदयाल गुप्ता (अध्यक्ष) द्वारा की गई। समाज के विभिन्न क्षेत्र से आये सामाजिक बंधुओं ने उसमें बड़-चढ़ कर भाग लिया। **खेलकूद प्रभारी** ई. सुरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय एवं भानु प्रकाश वार्ष्णेय जी ने उसका संचालन किया। जिसमें सहयोग संजय वार्ष्णेय, दीपक वार्ष्णेय, कालीचरण गुप्ता, रजनी वार्ष्णेय, सीमा वार्ष्णेय, डिम्पल वार्ष्णेय, रीनू वार्ष्णेय ने किया। उसका उद्घाटन ई. विनय कुमार वार्ष्णेय जी ने अक्रूर जी के चित्र पर मल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन करके किया। इस प्रतियोगिता में 50 से अधिक बच्चों ने भाग लिया।

आर. बी. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय, कुलदीप वार्ष्णेय, अमित गुप्ता एवं पंकज वार्ष्णेय आदि उपस्थित रहे।

–कृष्ण मोहन गुप्ता

मीडिया प्रभारी, श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

श्री वार्ष्णेय धमार्थ सेवा सदन (रजि.)

लखनपुर, शास्त्रीपुरम्, आगरा

जैसा कि सभी बन्धुओं के संज्ञान में है कि आगरा में श्री अक्रूर वाटिका के अतिरिक्त, वार्ष्णेय समाज का एक और भवन 175 फुट, लखनपुर, शास्त्रीपुरम्, सिकन्दरा, आगरा में निर्माणाधीन है। प्रस्ताव के अनुसार उक्त प्रांगण में श्री अक्रूर जी मन्दिर के साथ, कार्यालय भवन, कार्यालय भवन के ऊपर एक कमरा, सीढ़ियाँ, टायलेट का निर्माण पूर्व में ही पूर्ण हो चुका है। वर्तमान में परिसर के पिछले भाग में एक चार मंजिले भवन का निर्माण प्रगति में है। जिसमें बेसमेन्ट व भूतल पर एक एक हाल तथा प्रथम व द्वितीय तल पर 6-6 कुल 12 कमरों (अटैच्ड टायलेट) का निर्माण हो चुका है। प्लास्टर का कार्य भी लगभग पूर्ण है। वर्तमान में छत पर मडकस्का का कार्य चल रहा है फिनिशिंग कार्य अभी शेष है जिसे आज सभी महानुभावों के सहयोग से शीघ्र ही पूर्ण कराकर भवन को फंक्सनल किया जायेगा।

श्री अक्रूर जी मन्दिर में प्रात: व सांयकाल नियमित रूप से पूजा आर्चना विधिवत रूप से की जा रही है। जिस हेतु एक विद्वान पण्डित जी मन्दिर परिसर में ही निवास करते हैं। उसके साथ-साथ मन्दिर में मुख्य हिन्दू पर्वों पर समारोहपूर्वक धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। गोवर्धन पूजा, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि महत्वपूर्ण त्योहारों को बड़े हर्ष, उल्लास और समारोहपूर्वक मनाया जाता है। सावन मास के सभी सोमवारों को भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक/दुग्धाभिषेक किया गया। जिसके लिए स्वजातीय बन्धुओं द्वारा स्वेच्छा से अपना सोमवार चयनकर दुग्धाभिषेक किया गया।

श्री वार्ष्णेय धमार्थ सेवा सदन, आगरा के वार्ष्णेय बन्धुओं के लिए निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् एक भव्य धरोहर होगी। अत: सभी स्वजातीय बन्धुओं से करबद्ध प्रार्थना है कि उक्त भवन के निर्माण कार्य के पूर्ण करने हेतु एक ओर आपके आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है, वहीं निर्माण कार्य/संचालन हेतु आपके सुझावों और मार्गदर्शक की महती आवश्यकता है। जय अक्रूर भगवान।

ई. एन. सी. गुप्ता
अध्यक्ष, श्री वार्ष्णेय धमार्थ सेवा सदन

ई. पी. एस. गुप्ता
सचिव, श्री वार्ष्णेय धमार्थ सेवा सदन

वार्ष्णेय सभा, आगरा समाचार

श्री वार्ष्णेय सभा (रजि.) आगरा द्वारा पंचदिवसीय पावन पर्व की श्रृंखला में प्रत्येक वर्षो की भाँति इस वर्ष भी श्री अक्रूर मंदिर लखनपुर, शास्त्रीपुरम आगरा में गोवर्धन पूजा का आयोजन कल दिनांक 22 अक्टूबर 2025 दोपहर 1 बजे से सांय 5 बजे के मध्य आयोजित किया गया। गोवर्धन पूजा के उपरान्त अन्नकूट प्रसाद का भोग लगा। सभी वार्ष्णेय बन्धुओं ने आयोजित कार्यक्रम में सपरिवार एकजुटता से उपस्थित होकर पुण्यलाभ अर्जित कर अन्नकूट प्रसाद ग्रहण किया।

आप सबको अवगत कराते हुए हर्ष हो रहा है की श्री वार्ष्णेय सभा की कार्यकारिणी ने जो निर्णय लिया था कि अक्रूर चौक पर अक्रूर जी की मूर्ति जो मंदिर पर है वह स्थापित की जाए। आप सभी को जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि हमारे अक्रूर महारज जी की मूर्ति जयपुर में बनकर तैयार हो गई है। शीघ्र ही यह मूर्ति अक्रूर चौक पर स्थापित होगी। अभी प्लेटफार्म को बनाने में कुछ समय लग रहा है, जैसे ही प्लेटफार्म तैयार हो जाएगा आप सभी को सूचित कर दिय जाएगा।

श्री वार्ष्णेय महिला मंडल आगरा ने अपना हरियाली तीन का कार्यक्रम 29.7.2025 को होटल टेम्प्टेशन कमला नगर पर धूमधाम से मनाया जिसमें समाज की लगभग 100 महिलाओं ने अपनी भागीदारी की विभिन्न गेम्स, तंबोला, डांस, तीज क्वीन आदि में विजयी को पुरस्कार दिए गए। जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती हंसा वार्ष्णेय पत्नी ई. विनय कुमार वार्ष्णेय ने अक्रूर जी पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर एवं डा नीना गुप्ता ने कार्यक्रम का उद्घाटन करके कार्यक्रम की शुरुआत करी। मुख्य अतिथि ने सभी महला सदस्या जिन्होंने कार्यक्रम में भागीदारी करी सभी को उपहार दिया एवं धन्यवाद दिया। सभी ने स्वादिष्ट चाय पकोड़े एवं भोजन का आनंद लिया। महिला मंडल की पूरी कार्यकारिणी ने अच्छा आयोजन किया जिसके लिए उनको बधाई।

अखिल भारतीय श्री वैश्य बारहसैनी महिला महासभा के मुरादाबाद में 13 जुलाई 2025 को हुए अधिवेशन में आगरा निवासी श्रीमती अनीता गुप्ता को 3 वर्ष (2025.2028) के लिए उप प्रधान और श्रीमती मधु गुप्ता को संगठन मंत्री के पद पर मनोनीत किया गया है। उक्त अधिवेशन में आगरा से श्री कुंज बिहारी गुप्ता, श्री सुनील कुमार वार्ष्णेय एवं श्री अनुराग किशोर के साथ-साथ पूरे भारत में आये वार्ष्णेय समाज के गणमान्य सदस्य मौजूद रहे। श्री वार्ष्णेय सभा आगरा आप दोनों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित करता है।

श्री अक्रूर मन्दिर संचालन हेतु मासिक अनुदान की विनम्र अपील

श्री अक्रूर जी महाराज की जय

प्रिय बन्धुवर,

नमस्कार। आपको सूचित किया जाता है कि अक्रूरमन्दिर सेवा के रु 200/ माह के माननीय सदस्य है जो सज्जन मंदिर सेवा के सदस्य नहीं बने है। वे माननीय सदस्य बने और मासिक सेवा PAYTM (पेटीयम) No. 9368002223 पर भेजने का कष्ट करें, साथ ही स्कीनशॉट इसी नं. पर भेज दें। जिससे कि मन्दिर की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे। इस सहयोग के लिए बहुत-बहुत आभार।

निवेदक

दाऊदयाल गुप्ता — **कालीचरन गुप्ता**

(चैयर मैन) — **(प्रबन्धक)**

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि.)

अध्यक्ष एवं मन्त्री की कार्य-अवधि

अध्यक्ष

1.	श्री तुलसीदास गुप्ता	07-08-91 से 12-09-93 तक
2.	श्री रमेश चन्द्र वार्ष्णेय	12-09-93 से
3.	श्री नैमी चन्द्र वार्ष्णेय	(कार्यवाहक मध्य अवधि)
4.	श्री के. जी. वार्ष्णेय	26-01-96 से
5.	श्री रमेश चन्द्र वार्ष्णेय	कार्यवाहक 98-99
6.	श्री मंगलसैन गुप्त	26-01-99 से 26-01-03 तक
7.	ई. सुभाषचन्द्र वार्ष्णेय	26-01-03 से 19-07-09 तक
8.	डॉ. अशोक वार्ष्णेय	19-07-09 से 10-05-15 तक
9.	इं. डी. सी. वार्ष्णेय	10-05-15 से 4-8-18 तक
10.	श्री दिनेश चन्द गुप्ता (अमरभोला)	05-08-18 से 19-9-20 तक
11.	श्री विनोद कुमार गुप्ता (कार्यवाहक)	20-09-20 से 15-8-22 तक
12.	श्री दाऊदयाल गुप्ता	15-08-22 से निरन्तर

मन्त्री

1.	श्री नैमीचन्द्र वार्ष्णेय	07-08-91 से 12-09-93 तक
2.	डॉ. अशोक वार्ष्णेय	12-09-93 से 26-01-96 तक
3.	श्री दाऊदयाल गुप्ता	26-01-96 से 26-01-99 तक
4.	श्री दिनेशचन्द्र (अमरभोला)	26-01-99 से 16-05-02 तक
	(इन्होंने 16-05-2000 को अपना कार्यभार विनोद कुमार गुप्ता सहमंत्री को सौंपा)	
5.	श्री दाऊदयाल गुप्ता (कार्यवाहक)	07-07-02 से 26-01-03 तक
6.	श्री विनोदकुमार गुप्ता	26-01-03 से 20-08-06 तक
7.	श्री दाऊदयाल गुप्ता	20-08-06 से 19-07-09 तक
8.	श्री दाऊदयाल गुप्ता	19-07-09 से 10-05-15 तक
9.	श्री विनोद कुमार गुप्ता	10-05-15 से 04-08-18 तक
10.	श्री दाऊ दयाल गुप्ता	05-08-18 से 15-08-22 तक
11.	ई. सुरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय	15-08-2022 से 5-10-2025 तक
12.	श्री विनोद कुमार गुप्ता	5-10-2025 से निरन्तर

‘वार्ष्णेय कल्याण’ के प्रधान सम्पादक / व्यवस्था प्रमुख

		प्रधान सम्पादक	व्यवस्था प्रमुख
1. प्रवेशांक	1994	श्री मंगलसैन गुप्त	ई. एन.सी. गुप्ता
2.	1995	श्री यशपाल गुप्त	श्री दाऊदयाल गुप्ता
3.	1996	इं. डी.सी. वार्ष्णेय	श्री मोहनलाल गुप्ता ‘बाबा’
4.	1997	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री दिनेश चन्द्र अमरभोला
5.	1998	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’	श्री नरेन्द्र कान्त वार्ष्णेय
6.	1999	श्री रतन कुमार वार्ष्णेय	इं. एच.एस. वार्ष्णेय
7.	2000	श्री रतन कुमार वार्ष्णेय	श्री दाऊदयाल गुप्ता
8.	2001	श्री रतन कुमार वार्ष्णेय	श्री दाऊदयाल गुप्ता
9. ‘संस्कृति’ विशेषांक	2002	श्री रतन कुमार वार्ष्णेय	डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय
10. ‘सद्भावना’ विशेषांक	2003	श्री मंगलसैन गुप्त	डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय
11. ‘उत्कर्ष’ विशेषांक	2004	श्री मंगलसैन गुप्त	सुनील कुमार वार्ष्णेय
12. ‘अध्यात्म’ विशेषांक	2005	श्री मंगलसैन गुप्त	ई. एन.सी. गुप्ता
13. ‘संस्कार’ विशेषांक	2006	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
14. ‘सत्संग’ विशेषांक	2007	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
15. ‘योग साधना’ विशेषांक	2008	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
16. ‘नारी एवं संस्कृति’ विशेषांक	2009	डॉ राजबहादुर गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
17. ‘आस्था’ विशेषांक	2010	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
18. ‘नैतिकता’ विशेषांक	2011	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री नरेन्द्र कांत वार्ष्णेय
19. ‘सम्वेदना’ विशेषांक	2012	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री विनोद कुमार गुप्ता
20. ‘मर्यादा’ विशेषांक	2013	श्री संजीव बाबू गुप्ता	श्री दिनेश चन्द ‘अमरभोला’
21. ‘पर्व एवं संस्कृति’ विशेषांक	2014	श्री संजीव बाबू गुप्ता	श्री दिनेश चन्द ‘अमरभोला’
22. ‘सदाचरण’ विशेषांक	2015	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री संजीव बाबू गुप्ता
23. ‘समरसता’ विशेषांक	2016	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’
24. ‘स्वाभिमान’ विशेषांक	2017	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’
25. ‘मानवता’ विशेषांक	2018	श्री मंगलसैन गुप्त	श्री संजीव बाबू गुप्ता
26. ‘आरोग्य’ विशेषांक	2019	श्री विनोद कुमार गुप्ता ‘पत्रकार’	श्री गौरव वार्ष्णेय
27. ‘श्री अक्रूरजी’ विशेषांक	2022	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’	श्री विनोद कुमार गुप्ता
28. ‘आदर्श परिवार’ विशेषांक	2023	श्री विनोद कुमार गुप्ता	श्री लक्ष्मी नारायन वार्ष्णेय
29. ‘मांगलिकोत्सव’ विशेषांक	2024	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’	श्री अनुराग किशोर वार्ष्णेय
30. ‘सानिध्य’ विशेषांक	2025	श्री दिनेश चन्द गुप्ता ‘पत्रकार’	———

हम आभारी हैं ...

❖ उन सम्मानित महानुभावों के जिन्होंने 'वार्ष्णेय कल्याण' के 'सानिध्य' विशेषांक के लिए अपने सन्देश एवं शुभकामनायें भेजी हैं।

❖ उन विज्ञापनदाताओं के जिन्होंने इस विशेषांक हेतु विज्ञापन उपलब्ध करा कर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान किया है।

❖ उन लेखकों व रचनाकारों के जिन्होंने अपनी रचना या अन्य सामग्री उपलब्ध कराकर ई-पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग दिया तथा इस अंक को भव्यता प्रदान की।

❖ अपने उन सदस्यों के जिन्होंने अपने सुझाव एवं मार्गदर्शन देकर प्रकाशन में योगदान दिया।

❖ उन समस्त शुभचिन्तकों एवं सदस्यों के जिन्होंने अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से इस प्रकाशन में भाग लिया है।

हम क्षमा चाहते हैं ...

❖ उन सभी रचनाकारों से जिनकी रचनाओं का हम स्थानाभाव के कारण प्रकाशन नहीं करा पाए।

❖ उन लेखकों व रचनाकारों से जिनकी प्रकाशन सामग्री में सम्पादन की दृष्टि से हमें कुछ संशोधन करने पड़े हैं।

❖ सभी पाठकों से प्रकाशन एवं मुद्रण में सभी प्रकार की त्रुटियों के लिए।

हम आशा करते हैं ...

❖ **वार्ष्णेय कल्याण** एवं **वार्षिकोत्सव** की सफलता हेतु हमें जो भी आशीर्वचन एवं आत्मिक सहयोग मिला है वह सदा मिलता रहेगा। भविष्य में भी सभी से सभी प्रकार के आर्थिक एवं शारीरिक सहयोग सदाशयता एव उदारता से मिलते रहेंगे।

विशेष ...

❖ इस विशेषांक में छपे लेख/कवितायें आदि में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं जिनके लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं। आवश्यक नहीं कि सम्पादक मण्डल के विचारों से मेल खायें।

❖ इस पत्रिका में प्रकाशित अविवाहित बच्चों के विवरण संकलन के आधार पर हैं तथा पाठकों को सन्दर्भ की सुविधा प्रदान करने के लिए है। प्रकाशित सूचना का सत्यापन पाठक स्वयं करें। सम्पादक मण्डल का दायित्व नहीं है।

❖ आगरा जनपद में आवासित सभी बन्धुओं से अनुरोध है कि श्री वार्ष्णेय सभा के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य बनें। आपके पते, फोन नं. या अन्य कोई बदलाव हो तो अध्यक्ष/मंत्री अथवाा सभा कार्यालय पर अपना परिवर्तन नोट करायें।

❖ श्री वार्ष्णेस सभा आगरा को विभिन्न पारिवारिक उत्सवों पर दान देना न भूलें।

❖ आगरा महानगर में निर्माणाधीन धर्मार्थ सेवा सदन व श्री अक्रूर वाटिका ट्रस्ट में मुक्त हस्त से दान देकर कल्याण के भागी बनें।

❖ पत्रिका से सम्बन्धित किसी वाद विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र आगरा होगा।

श्री वार्ष्णेय सभा, आगरा (रजि.)

हमारे नए आजीवन सदस्य

शशांक गुप्ता
S/o विनोद कुमार गुप्ता
म.न., B-8, गिर्राज वाटिका,
सेन्ट स्टीफन स्कूल के पास,
कालिन्दी विहार, आगरा-6
9537726686

रिषभ गुप्ता
1154, से-7 आ.वि.
सिकन्दरा, आगरा
9358784894

अमित कुमार गुप्ता
MIG 297, से.5 आ. वि. का.
सिकन्दरा, आगरा
7409110999

डॉ. शिवम वार्ष्णेय
306, तुलसी मीनार अपार्ट
पश्चिमपुरी, शास्त्रीपुरम, आगरा
7827073191

पंकज वार्ष्णेय
S/o अशोक कुमार
C-163, TYC, आगरा
9058826822

गौरव वार्ष्णेय
S/o अशोक कुमार
C-592, TYC, आगरा
9027305214

मयंक गुप्ता
102, बाकेविहारी धाम
शाहगंज, आगरा
7302002492

कपिल वार्ष्णेय
S/o हरीशंकर वार्ष्णेय
14 रोशन बिहार, आगरा
9412375203

नितिन गुप्ता
C-114, A Block,
संस्कृति अपार्टमेन्ट, हरीश नगर,
सिकन्दरा, आगरा
9520000093

ऋषभ वार्ष्णेय
फ्लैट नं. 109, कैमेलिया,
गार्डेनिया पुष्पांजलि, आ.वि. का.
सिकन्दरा, आगरा-7
8992954570

कुलदीप वार्ष्णेय
70, हरीश नगर
अमल गार्डन सि० वो० रोड, आगरा
9756200955

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि०)

विवाह योग्य लडकों की सूची, 'आगरा'

क्र. संख्या	लड़के/लड़की का नाम	पिता का विवरण		लड़के का विवरण					
		पिता का नाम, पता	मोबइल नं.	शिक्षा	जन्म तिथि/आयु समय	कद	रंग	मंगली सादा	व्यवसाय/आय
1.	सौरव वार्ष्णेय	आनन्द कुमार वार्ष्णेय	7351331122	B.Com	3.6.1992	5'3"	साफ	सादा	श्री सियाराम मूल कैफे हाथरस रोड TYC
2.	यश वार्ष्णेय	राकेश कुमार गुप्ता	8923496939	MBA	18-10-1996	5'10"	साफ	सादा	Real Estate Business
3.	साहिल वार्ष्णेय	मोहन स्वरूप वार्ष्णेय	9411410899	B.Tech	25-10-2004	5'3'	साफ	सादा	अध्ययनरत
4.	पवन वार्ष्णेय	स्व० रामबाबू गुप्ता	8954016985	B.Com	12-1-1990	5'2"	साफ	सादा	Accountant लाइनर शूज शास्त्रीपुरम आगरा
5.	तुषार वार्ष्णेय	सुमत बिहारी वैश्य	9457654600	MSC(CS)	01-12-1997	5'6"	साफ	सादा	Software Engineer Neo soft put ltd Noida
6.	मयंक वार्ष्णेय	प्रमोद वार्ष्णेय	9319137612	B.Tech	10-5-2003	5'8"	साफ	सादा	सॉप्टवेयर इंजीनियर सर्विस, संजय प्लेस आगरा
7.	रवि वार्ष्णेय	देव कुमार वार्ष्णेय	9259036681	High School	17-04-1993	5'5"	साफ	सादा	महिला गृह उद्योग रामनगर रामबाग आगरा
8.	आयुष वार्ष्णेय	नरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय	9412810808	ITI Diploma	8.10.1998	5'2"	साफ	सादा	सर्विस भूडिजाइनिंग नोएडा Gully Lab Innovation Pvt. Ltd.
9.	मोनू वार्ष्णेय	विजय कुमार वार्ष्णेय	9457484853	स्नातक	26वर्ष	5'2"	साफ	सादा	थोक विक्रेता पेढ़ा एवं अन्य एजेन्सी
10.	काव्य वार्ष्णेय	विकास वार्ष्णेय (रिंकू)	8057258772	B.Com	25 वर्ष	5'8"	साफ	सादा	Ground water Survay cousul tancy में सर्विस सिकंदरा
11.	अमन वार्ष्णेय	दिलीप कुमार वार्ष्णेय	9760910100	B.Com ITI	26वर्ष	5'3"	साफ	सादा	Novalty (GFE point Aman food products)
12.	लखन वार्ष्णेय	मनोज कुमार (वार्ष्णेय)	8279797594	MCA	25 वर्ष	5'5"	साफ	सादा	Manoj Enterprisises Battery House
13.	मनीष गुप्ता	स्व० मदन लाल गुप्ता	9368774550	BA.LLB. M.B.A. Pursuing	28.11.1999	5'9"	साफ	मांगलिक	एकाउटेन्ट 5 lac
14.	मंयक गुप्ता	स्व. श्री एम. एस. गुप्ता	7302002492	Mtech	04.02.1992	5'8"	गोरा	सादा	Share Trading/ 6 Lakh Annual
15.	सौरभ गुप्ता	श्री गिरीश कुमार गुप्ता	9411923124	I.I.T. Electronics	12.10.1998	5'10"	गोरा	सादा	4 Lakh Annual

16.	अनुज गुप्ता	श्री गिरीश कुमार गुप्ता	9412301157	B.Tech C.S.	26.10.2000	5'9"	गोरा	सादा	Xebia/11 Lpa
17.	हिमाशु गुप्ता	श्री सुशील कुमार वार्ष्णेय	9760680827	Btech	01.03.2001	5'7"	गोरा	सादा	Qualtech co. 8 L/Annual
18.	अर्चित वार्ष्णेय	श्री प्रमोद कुमार वार्ष्णेय	9410251265	MBA	12.08.1997	6'00"	गोरा	सादा	Gurugram 8 L/Annual
19.	शिवम वार्ष्णेय	श्री प्रमोद कुमार वार्ष्णेय	9760680827	MBA	05.03.2000	6"	गोरा	सादा	नोएडा 12 L/Annual
20.	रवि वार्ष्णेय	विनोद वार्ष्णेय	9997229370	Inter	24 वर्ष	5'6"	साफ	सादा	पानी प्लाण्ट
21.	हिमांशु वार्ष्णेय	भुवनेश गुप्ता	9058890818	Inter	24 वर्ष	5'5"	साफ	सादा	(अमूल दूध की एजेन्सी थोक विक्रेता किराना)
22.	मोहित वार्ष्णेय	किशोर वार्ष्णेय	9324531507 8452087018	B.Com	29 वर्ष	5'8"	साफ	आंशिक मंगली	मैनेजर OOR.Hotel Chain Mumbai
23.	इन्द्रेश वार्ष्णेय (प्रतीक)	मुकेश गुप्ता	9719398966	B.Com	29 वर्ष	6'	साफ	सादा	Job, Dhaniloan Finance Sanjay place
24.	तुषार वार्ष्णेय	संजय वार्ष्णेय	9412256705	Inter	24 वर्ष	5'5"	साफ	सादा	ट्रांसपोर्ट टैम्पो
25.	जतिन वार्ष्णेय	उमाशंकर वार्ष्णेय	9997353415	BA LLB	22 वर्ष	5'9"	साफ	सादा	राधे जनसेवा केन्द्र चन्दन नगर कालिन्दी बिहार
26.	योगेश वार्ष्णेय	रतन वार्ष्णेय	7906325634	MBA	25 वर्ष		साफ	सादा	बजाज फाइनेन्स
27.	भारत रतन वार्ष्णेय	सुनील कुमार वार्ष्णेय	9808818423	B.Tech MBA	22-8-1991 10:35AM	5'6"	गेहुँआ	सादा	प्रा० नौ० नोएडा
28.	अंकुर वार्ष्णेय	राजकुमार वार्ष्णेय	7302772632	MBA	27 6:10 AM	5'11"	गेहुआ	मंगली	सर्वेयर (आटो मोबाइल)
29.	दुर्गेश वार्ष्णेय	स्व. मुकुल वार्ष्णेय	8218200325	B.A.	27 10:07 PM	5'10"	गेहुआ	सादा	रिफाइनरी (कान्ट्रेक्ट)
30.	सूरज वार्ष्णेय	कालीचरन वार्ष्णेय	8445124268	MBA	26 12"05 AM	5'3"	गेहुआ	सादा	अतुल ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्री आगरा 35000/–
31.	कपिल गुप्ता	स्व० राजेश कुमार गुप्ता ओम विहार कमला नगर	9368476720	हाई स्कूल	28-6-1995	5'3"	गोरा	सादा	प्राइवेट नौकरी
32.	साकेत वार्ष्णेय	राजेश कुमार वार्ष्णेय	9997075369	M.B.A. PGDM	8-11-97	5'7"	गोरा	सादा	आदित्य विरला F550 ब्रांच मैनेजर कमला नगर
33.	चन्द्रमाहेन वार्ष्णेय	ओमवीर गुप्ता 10, गिरिश बिहार	9897264969	ग्रेजुएट B.Sc	22/12/96	5'9"	गोरा	सादा	Forn verificetion by Bank
34.	निपुण वार्ष्णेय	मृदुल वार्ष्णेय	9897264969	B-Tech (EEE)	27/10/92	5'8"	गोरा	सादा	Data Scientist IT. 26L per year

36.	कुशल वार्ष्णेय	मृदुल वार्ष्णेय 056 कर्मयोगी एन्केल्व नियर फुआरा मोडिन FF पब्लिक स्कूल कमला नगर	9897264969	B-Tech	28/1/1994	5'5"	गोरा	सादा	व्यवसाय
37.	चक्रेश वार्ष्णेय	स्व० महेश चन्द	9411203133	B.Tech Com.Sc	24-1-99	5'8"	साफ	मंगली	Airtel Gurugram 19 Lac per year
38.	टेकचन्द	स्व० लक्ष्मी दत्त	8742915723	MA	35 (तलाक शुदा)	5'3"	साफ	सादा मंगली	व्यवसाय
39.	मुकेश	त्रिलोक चन्द्र	9540148586	12th	27	5'5"	साफ	सादा	Manager चोला मण्डलम् फिरोजाबाद
40.	पुसकीन वार्ष्णेय	श्री देवेन्द्र कुमार वार्ष्णेय	7017858817	B.Sc	19/11/95	5'7"	साफ	सादा	Printing Press, आगरा
41.	वैभव वार्ष्णेय	श्री दीपक वार्ष्णेय 11/41 सीतानगर	6395918889	B.Sc	13/03/2006 11.55 AM	5'6"	साफ	सादा	अपना व्यापार
42.	राजन वार्ष्णेय	श्री दीपक वार्ष्णेय 11/41 सीतानगर	6395918889	B.Com	4/10/2005 10.35 AM	5'7"	साफ	सादा	सर्विस मुरादाबाद वार्षिक दस लाख

श्री वार्ष्णेय सभा आगरा (रजि०)

विवाह योग्य लडकियों की सूची, 'आगरा'

क्र. संख्या	लड़के/लड़की का नाम	पिता का विवरण		लड़के का विवरण					
		पिता का नाम, पता	मोबइल नं.	शिक्षा	जन्म तिथि/आयु समय	कद	रंग	मंगली सादा	व्यवसाय/आय
1.	खुशूबू वार्ष्णेय	मोहन स्वरूप वार्ष्णेय	9411410899	BBA	9.7.2006	5'	साफ	सादा	–
2.	मानसी वार्ष्णेय	दिलीप कुमार वार्ष्णेय	9760910100	M.Com BTC TET CTET	25-0-2000	5'2"	साफ	सादा	–
3.	कनिष्का वार्ष्णेय	रोहित वार्ष्णेय	8279797594	BA	20 वर्ष	5'6"	साफ	सादा	–
4.	गुंजन वार्ष्णेय	संजीव वार्ष्णेय	8630504416	BA	23 वर्ष	5'	साफ	सादा	–
5.	निधि गुप्ता	स्व. श्री एम. एस. गुप्ता	7302002492	M.Com B.Ed.	27.10.1988	5'5"	गोरा	सादा	Teaching 2.5 Lakh/Annual
6.	पूजा वार्ष्णेय	संजय वार्ष्णेय	9412256705	Inter	21 वर्ष	5'2"	साफ	सादा	
7.	कोमल वार्ष्णेय	रतन वार्ष्णेय	9808303226	Inter	20 वर्ष	5'4"	साफ	सादा	
8.	राज्ञी वार्ष्णेय	सुनील कुमार वार्ष्णेय	9808818423	B.Arch	16-11-98	5'3"	गेहुँआ	सादा	प्रा० नौ० आगरा
9.	नेहा वार्ष्णेय	देवेन्द्र गुप्ता	9457655052	B-Tech Com-Science	4-9-2001 12:40 PM	5'8"	गोरा	सादा	ASA Developer IBM Software
10.	पलक गुप्ता	वीरेश वार्ष्णेय	9457294270	M.Tech	14-3-2000 7:08 PM	5'1"	गोरा	आंशिक मंगली	HCL. JOB. NOIDA
11.	प्रतीक्षा गुप्ता	स्व० श्री भजन लाल गुप्ता F 646 कमला नगर आगरा	9457715908	B.Tech.	8-11-94	5'5"	गेहूआ	सादा	Software Eng.
12.	मोहनी गुप्ता	स्व० अरुण कांत गुप्ता 75/1 बल्केश्वर आगरा	7302736727	B.Com	8/9/2000	5'2"	गोरा	सादा	Teacher Private
13.	अनिका वार्ष्णेय	ओमवीर गुप्ता 10, गिरिश बिहार	9997111227	Interior Designer	24/1/2000	5'0"	गोरा	सादा	Drafting

क्र.सं	नाम लड़का / लड़की विवाह योग्य	पिता का नाम	पता	मोबाइल नंबर	शिक्षा	जन्मतिथि / आयु	समय	कद	रंग	मंगली / सादा	व्यवसाय / आय
1	रूचि वार्ष्णेय	श्री एस. जी. वार्ष्णेय (बसई वाले)	187-B गढ़ी मोहल्ला, कृष्णा डेरी के पास ओल्ड फरीदाबाद 121002	9717595557	बी.कॉम., एमबीए (अध्ययनरत)	20-04-1997	11:25 PM	5'2"	गोरा		असिस्टेंट मैनेजर, Genpact — 8.50 LPA
2	राजश्री वार्ष्णेय	श्री लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय	ह. न. 1 मोती स्ट्रीट, राधा कृष्ण मंदिर के पास चंदौसी संभल उ . प्र . 244412	9412805650	MBA, B.Com	04-11-1996	7:05 AM	5'2"	गोरा	सादा	HR Manager in Pylon Management Consuting Gurgaon — 10 LPA
3	डिंपल गुप्ता	श्री ओम कुमार गुप्ता	ह. न. 3275 जवाहर कॉलोनी N.I.T फरीदाबाद	9818339106	M.sc (Microbiology) from YMCA B.ed, CTET, REET	11-02-1998	3:00 PM	5'0"	गोरा		Teacher at KPS school, फरीदाबाद

4	शिवानी वार्ष्णेय	श्री दाऊदयाल वार्ष्णेय	विजयगढ़, अलीगढ	9811489968	B.Tech (C.S)	22-08-1994	2:05 PM	5'4"	गोरा		Working with GrayGraph Technologies Software Company (Noida)
5	याशिका वार्ष्णेय	श्री प्रभात रंजन वार्ष्णेय	प्रभात मेडिकल स्टोर कूपा गली के सामने जवाहर बाजार सादाबाद	9897447468	D.Pharmacy, M.Sc (Chemisty) B.Ed, CTET, MBA (Distance)	10-09-1997		5'5"	गोरा		Science Teacher In Girls Inter College
6	अनु श्री वार्ष्णेय	श्री ध्रुवेंद्र कुमार	42 रतनेश पुरम मेरिस रोड अलीगढ़	8439087437	B.tech & M.tech (Biotechnology)	14-07-1993		5'2"	गोरा		Freelancer Medical writer
7	आकांक्षा गुप्ता	श्री वी. के. गुप्ता	के . एम. 146 कवी नगर गाजियाबाद	9891645041	B.com, Company Secretaries and LL.B	04-05-1989	9:40 PM	5'2.5"	गोरा		Sr. Compliance Manager with Espire Group, New Delhi

8	जूही वार्ष्णेय	श्री दुष्यन्त कुमार वार्ष्णेय	बड़ा बाज़ार चंदौसी	7060100196	BBA & LL.B(Hons)	02-05-1997		5'0"	गोरा		
9	श्रद्धा गुप्ता	स्व . श्री विजय कुमार गुप्ता	महेंद्र नगर अलीगढ	9319120558	MCA from AMU	30-09-1993	7:57 AM	5'0"	गोरा	आंशिक मांगलिक	Sr. Software Developer in Global logic at Gurugram Incomer 7 Digist PA
10	Kunika Varshney	Shri Gopal Krishna Varshney	1628, A/B Barhpura Colony Mathura	8279806482	B.Sc , M.Sc, B.Ed, CTET & UPTET (Qulified) TGT Mathmatics	18-11-1997			गोरा	सादा	Teaching in Delhi public School Mathura
11	Garima Varshney	Shri Anurag Varshney	B-607, Green Park Apartment Etah Bye Pass Road Aligarh	9837374442	BBA, MBA	01-09-2001	3:07 PM	5'10"			Clear Water Analytics Noida

12	Bulbul Varshney	Shri Kripa Shanker Varshney	Bashundhara Etah	9027350714	B.Tech (Computer Science)	04-12-1998	7:15 PM	5'2"			Non Working
13	Priyanshi Varshney	Shri Pawan Varshney	D-230 Kamla Nagar Agra	7895775106	B.Tech	03-04-2000	4:54 AM	5'1"			Sr Software Engineer, Indraprastha Engineering college Ghaziabad
14	Jhalak Varshney	Shri Anurag Varshney	Punchvati", 31/177-D, Rajpur Bagia Shamshabad Road Agra	7906972756	MBA	03-11-1997	11:45 AM	5'4"		आंशिक मांगलिक	Chola Mandalam MS General Insurance co. ltd, New Delhi INR 9 LPA
15	Deepahikha Gupta	Shri Mahesh Kumar Gupta		9897910012	M.A, B.ed	16-07-1987	12:10 AM	5'2"			

16	Monika Varshney	Shri Prem Shankar Varshney	Near Lalwani Clinic Nidhauli Raod Etah 207001	8630983524	B.Sc & D.Pharma	02-09-1990	11:05 PM	4'9"			
17	Saijal Varshney	Shri Shailener Varshney	Krishnkunj Society Milon Vihar Delhi Road Moradabad 244001	9997612064	M.Com , MBA	07-06-2001	10:45 AM	5'1"			Working at Niva Bupa
18	Surabbhi Varshney	Shri JItendra Baboo Varshney	Hanuman Gali Sahpau	9759177943	M.A	20-02-1999		5'1"			

1	अभिषेक वार्ष्णेय	श्री एस. जी. वार्ष्णेय (बसई वाले)	187-B गढ़ी मोहल्ला, कृष्णा डेरी के पास ओल्ड फरीदाबाद 121002	9717595557	एम.कॉम., IPCC समूह-1 CA	09-04-1996	6:35 AM	5'8"	गोरा		Sr. Accounts Executive, JLL (MNC) Gurgaon — 8.50 LPA

2	गवेश गुप्ता	डॉ. (प्रोफ़ेसर) बी. डी. गुप्ता	133 ब्लॉक-B, श्याम नगर, बस स्टैंड के पास पलवल हरियाणा	8368736630	MBA (PGDM), B.Tech	06-01-1995		5'7"	-		Deputy Manager, HDFC bank Ltd, Sec 62 Noida — 15+ LPA
3	हर्ष वार्ष्णेय	श्री सुशील कुमार वार्ष्णेय	पंच नगरी गली नंबर 1 सराय हरनारायण, सासनी गेट अलीगढ़ 202001	8126347380	B.Sc, M.Sc (Geology), BTC, UPTET, PhD Pursuing from AMU	28-09-1994	6:14 PM	5'9"	-		Coaching Owner — 9+ LPA
4	हर्ष गुप्ता	श्री दीपेश कुमार गुप्ता	C-174 सेक्टर गामा-1, ग्रेटर नोएडा उ. प्र.	9654112627	B.Tech, M.Tech Pursuing	04-04-1998	8:00 PM	5'5"		सादा	Sr. Verification Engineer — Anolog Devices, Bagalore 35L + 12 L Stocks
5	प्रियांशु वार्ष्णेय	श्री लवनीश वार्ष्णेय	2/392 विष्णु पुरी, अलीगढ़	9359124050	B.Tech IIT Indore	11-06-1998	8:40 AM	6'0"	गोरा		Software Engineer Commvault Systems , Bangalore

6	कार्तिक वार्ष्णेय	श्री अरुण कुमार वार्ष्णेय	अहमदगढ़ शिकारपुर जिला बुलंदशहर उ . प्र. 203392	9719213760	MBA	30-12-1997	2:44 AM	5'4"			Salaried in Axis Bank as a Deputy Manager, INR 6.5 LPA
7	रवि वार्ष्णेय	श्री राजेन्द्र वार्ष्णेय	चर्च के पास कवी एक्सपेलर जलेसर एटा	9410439832	B.Tech.ITFrom IIIT Vadodara Gujrat	01-12-1997	11:15 PM	5'6"	गोरा		Software Engineer at IDFC First Bank Mumbai, 44 LPA
8	मृदुल वार्ष्णेय	श्री अनिल गुप्ता	ओम नगर चामुंडा कॉलोनी जैसिंघपुरा मथुरा 281003	9058599058	B.Tech Computer Science	08-04-1998	2:30 PM	5'9"	गेंहुआ	सादा	Software Engineer(Hogarth India, ex-TCS), 9.5 LPA
9	रजत गुप्ता	डॉ पंकज गुप्ता	श्री मातृछाया हॉस्पिटल, गोमती नगर , आगरा रोड, अलीगढ	9412329173	B.Tech अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी	24-11-1996		5'5"	गोरा	सादा	जूनियर एसोसिएट स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, चंदौसी

10	निशांत वार्ष्णेय	श्री प्रदीप कुमार गुप्ता	5 /275, गूलर रोड (इन्फ्रोन्ट ऑफ़ H P पेट्रोल पम्प अलीगढ	9219700466		31-08-1999	6:00 AM	5'9"			Scientific Officer, at NPCIL (Group-A) Gorakhpur (Haryana)
11	रवि कुमार वार्ष्णेय	श्री अनिल कुमार वार्ष्णेय	काली मंदिर के पास बहजोई संभल 244410	9368892277	Electrical Engineering Diploma (Polytechnic)	05-07-1995	4:57 AM	5'4"	गेंहुआ		Field Supervisor in Power Grid corporation india ltd (Govt. of India)
12	अंशुल वार्ष्णेय	श्री अनिल कुमार वार्ष्णेय	काली मंदिर के पास बहजोई संभल 244410	9368892277	वैज्ञानिक सहायक, भारी पानी संयत्र परमाणु ऊर्जा विभाग तूतीकोरिन तमिलनाडु	01-08-1998	3:35 PM	5'5"	गेंहुआ	सादा	B.Sc (ZBC)
13	दयानन्द वार्ष्णेय	श्री कौशल किशोर वार्ष्णेय	गली न. 2 बापू नगर बैंक कॉलोनी अलीगढ	9267651118	M.C.A	03-10-1990	10:20 AM	5'5"	गेंहुआ	आंशिक मांगलिक	डी . एम् . सी. बुक सेण्टर अचल ताल रोड अलीगढ

14	शशांक वार्ष्णेय	श्री प्रदीप कुमार गुप्ता	5/531A, आज़ाद नगर इंडस्ट्रियल एरिया , आईटीआई रोड अलीगढ	8791726540	B.com	19-10-1993	2:45 PM	5'6"	गेंहुआ		Nexa Noida
15	वीरेश गुप्ता	श्री राजेश गुप्ता	दिल्ली	8920320834	B.Tech with Honors in Computer science from IIT-Delhi	26-05-1998	10:45 AM	5'11"			Google, Bangalore, 7 figure p.a
16	सौरव गुप्ता	श्री शिव कुमार गुप्ता	खिरकी एक्सटेंशन मालवीय नगर नई दिल्ली - 17	9958180333	B.Tech Computer Science	03-11-1998		5'8"	गोरा		Lnkedin, Bangalore as software engineer. & 80+LPA+other benefits
17	प्रखर वार्ष्णेय	श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय	बी 102 गार्डिनिया स्क्वायर क्रासिंग रेपुब्लीक ग़ाज़ियाबाद	9958994134	Master in Journalism	20-12-1992	1:05 AM	5'7"			Self Empl Daily Diary Media and PR Agency 20+ LPA

18	हर्षित वार्ष्णेय	श्री विनोद कुमार	गोपालपुरा बाईपास जयपुर - 302015 राजस्थान	7042339986	B.Tech Elec. Engg. from IIT Mandi	16-07-1996	7:30 AM	5'9"			Scientist & Income 24 LPA
19	अक्षय वार्ष्णेय	श्री डी. के वार्ष्णेय	नगर पालिका कॉलोनी देवानंदपुर रतापुर रायबरेली 229001	9452901178	M.E., B.Tech CS	31-01-1993	8:55 AM	5'7"	गोरा		Lecturer(PGT-CS) Army Public School Lucknow Income 7.5 LPA
20	निशांत वार्ष्णेय	श्री हरेंद्र कुमार वार्ष्णेय	अशोक विहार नई दिल्ली	9871005209	B.Tech	26-07-1996	5:45 AM	5'7"	गोरा		Developer SAP labs, Income 26 LPA
21	ओजेश गुप्ता	श्री विनोद कुमार गुप्ता	माया स्टील फर्नीचर लक्समी नगर सासनी गेट अलीगढ़	9719421164	B.Tech	08-08-1996	6:50 AM	6'0"			Release Manager

22	गौरव वार्ष्णेय	स्व श्री अनिरुद्ध कुमार वार्ष्णेय	मुरादाबाद	7830470879	M.com, Advance diploma in computer	12-05-1988		5'2"			Business Income 8 lack PA
23	डॉ अनूप कुमार वार्ष्णेय	श्री मुकेश बाबू वार्ष्णेय	वसुंधरा एन्क्लेव फेज -1 गौशाला रोड संभल गेट चंदौसी	9456031284	M.B.B.S (K.G.M.U Lucknow)	08-02-1998		5'7"	गोरा		MS General surgeon (S.N. medical college Agra)
24	Piyush Varshney	Mr. Rajeev Varshney	Chitrakut Aprartment Adarsh Enclave Flat No. D4, Aya Nagar New Delhi	9319880200	MBA	20-11-1992		5'10"	गोरा		Team Lead in Thermo Fisher Scientific (Gurugram)
25	Varun Varshney	Shri Gopal Krishna Varshney	1628, A/B Barhpura Colony Mathura	8279806482	B.Tech in computer science	18-10-2000		5'10"	गोरा	सादा	TCS Bengalore Income INR 12 LPA

26	Yogendra Gupta	Shri Manmohan Gupta	Arvind Nagar Budh Bazar North East Delhi 110053	8451029077	B.Tech in computer science	10-10-1994	2:00 AM	5'11"		आंशिक मांगलिक	Sr. Software Eng. Finezza Technologies Pvt. Ltd, New Delhi Income 14+ LPA
27	Pramod Gupta	Shri Dinesh Kumar Gupta	BH 565 A East Shalimar Bagh Delhi-110088	9990379484	B.Tech in Machenical Engineering	23-10-1995	7:05 AM	5'6"	गोरा		Senior Quality Engineer at Allena Auto Group
28	Harsh Gupta	Shri Y.K. Gupta	ZF 14, Shiva Enclave Paschim Vihar New Delhi 110063	9899406641	B.Tech in computer science, MBA in Marketing	09-01-1993	2:00 AM	5'11"			Senior Manager, Max Life Insurance Gurgaon Package 24 LPA
29	Vaibhav Kumar Varshney	Shri Jetendra Kumar Varshney	Wazirganj Budaun	9359486490	B.Tech	07-09-1995		5'8"		सादा	As Manager at Hyundai Motor, Gurgaon

30	Nakul Varshney	Shri Subhash Varshney	Pratap Nagar Sector-19, Sanganer Jaipur, Rajasthan	9783635588	B.Tech Civil Hyderabad	25-06-1991	7:15 AM	5'7"			Sr Engineer, Girdhari Lal Construction Pvt Ltd. Hyderabad
31	Dr Kushagra Varshney	Shri Pankaj Varshney	H. No. 44, State Bank Colony, Near Jaipur House, Agra- 282002	9412591140	MS (ENT) from GIMS, (Batch – 2024), MBBS from S.N. Medical College, Agra (U.P.) (Batch	27-08-1997	5:35 AM	5'6"	गोरा		
32	Suyash Deep Gupta	Shri Rajeev Varshney	34/70, Hata Sawai Singh Chowk, Kanpur 208001	9125645411	B.Tech in computer science, MBA	26-09-1997	2:00 PM	5'9"	गोरा		Product Manager, Affinity Global Inc. Mumbai , Package 22 LPA
33	Shivam Gupta	Shri V.K. Varshney		9478087167	B.Tech	35 Year Old		5'10"	गोरा	सादा	Sr. Analyst MNC Gurgaon

34	Shivam Varshney	Shri Vinod Kumar Gupta	Dayal Bagh Agra	9412167408	B.Tech (GLA University)	08-08-1997	6:48 AM	6'00"			Senior Preject Engineer, Cocomec Group (French MNC, Gurugram)
35	Anushk Gupta	Mr. Virendra Kumar Gupta	Samad Road Centre Point Aligarh	9897529909	B. Tech (CSE)	07-07-1998		5'7"		सादा	System Administrator HSBC Technologies, Pune, Income 15 LPA
36	Manas Gupta	Trilok Mohan Gupta	K-45B, Lxmi Nagar Delhi 110092	9718850268	MBA	05-08-1997	9:55 AM	5'8"	गोरा	सादा	ICICI Bank, Gurugram
37	Vipin Varshney	Shri Mathura Prasad Varshney	Mohalla Brahmanpuri Mendu Hathra	9897348066	Intermediate	22-05-1993		5'1"			Vipin Footwears & radymade Guarments

38	Atishay Varshney	Shri Ashok Kumar Varshney	65, Aishwarya Villa Purana Dakkhana Road, Naya Bazar Bahjoi (Sambhal) UP 244410	8445610846	B.Sc (honours) Coputer Science from DU	18-09-1993	3:20 PM	5'8"			Senior Consultant at Deloitte US_INDIA Gurugram, INC 30 Lac + PA
39	ER Harendra Gupta (Lucky)	Shri Padam Chandra Gupta	Vill-Paickwara , Post Gangchouli Dist Hathras 204101	9760909066	Diploma (Electrical) B.sc I.T.I (electronics)	07-11-1993	12:15 PM	5'5"	गोरा	सादा	Electrical Engineering (DLF Exp. Greens M1A Manesar Gurgaon
40	Kunal Varshney	Mr. Yogesh Varshney	9/40, vishan Chand Yogesh Kumar (Boore Wale) Opp. Barahseni Dharamshala, Kanwari Ganj, Aligarh	9358252858	MBA (Business Analytics)	12-01-1998	11:55 AM	5'5"			Operations Analyst Publicis Group (Gurugram)
41	Mayank Varshney	Mr. Virender Varshney	Vill Rajpura Sambhal District Uttar Pradesh	NA	B.Com, Certified Financial Planner	04-01-1997	7:05 AM	5'7"			Bluestone Wealth Mattes Pvt. Ltd Income Appx.9 LPA

42	Ravi Varshney	Mr. Rajendra Kumar	Saray Khanam,Jain Mandir Gali Jalesar 207302	9410439832	B.Tech IT from IIIT Vadodara	01-12-1997	11:15 PM	5'6"			Software Engineer at IDFC First Bank Mumbai
43	Ashish Varshney	Mr. Ajay Varshney	Bulandshahar	NA	BBA	12-08-1995	2:55 PM	5'9"	Fair		Business (Architectural Photography & Animal farm)
44	Deepak Kumar Gupta	Mr. Anil Kumar Gupta	Flat No. T-6/605, Aagman Society SEctor 70,IMT, Faridabad, Haryana-121004	9625364235	M.Com, MA,(History) NET JRF Qualified	08-05-2000	9:45 PM	5'4"			Assit.Section Officer in Ministry of External Affairs
45	Dhruv Dayal Gupta	Mr. Sanjay Gupta	3, Prem Bhawan Colony Opp. Saamibadh Gate No. 4 Dayalbagh Agra	9897224369	GMPE, IIM, Lucknow B.Tech CSE	19-08-1997	11:28 PM	5'9"			Software Engineer at MNC Noida Income 15 lac PA

46	Mohit Varshney (Dalchand)	Mr. Dilip Kumar Varshney	Surya Sarover Colony Near By Three Dots Public School Aligarh	9897825365	Graduation	04-11-1996	4:22 AM	5'8"	Genhua		Business Redymade Garments
47	Srajan Varshney	Mr. Chanda Shekhar Gupta	39/B, Rajaswa Colony Sailana Road Ratlam M.P	9981246707	B.Tech (Electrical & Electronics) MBA	13-11-1996	4:10 PM	5'7.5"	Fair		Associate Manager at Scimplify, Bangalore
48.	Dhruv Dayal Gupta	Mr. Sanjay Gupta	3 Prem Bhawan Colony Gate No. 3 Dayalbagh Agra	9897224369	B.Tech. CSE	19-08-1997	11:28 PM	5'9"	Fair		Software Development MNC Noida

SHRI VARSHNEY SABHA AGRA (Regd.)
Agra
BALANCE SHEET AS ON 31st MARCH 2025

LIABILITIES	FIGURES CURRENT YEAR Rs.	Rs.	ASSETS	FIGURES CURRENT YEAR Rs.	Rs.
Capital Account		27,88,563.02	**FIXED ASSETS**		
			Assets	17,358.00	
Balance as per last Balance Sheet	1,57,939.68		Land & Building	3,38,391.00	
Add: Excess of Income Over Expenditure	96,599.23	2,54,538.91	Shri Nathi Lal Varshney Charitable Trust (Building)	4,75,000.00	
			Almirah	26,000.00	
			Shri Varshney Dharmarth	17,02,250.00	25,58,999.00
			INVESTMENTS		
			PNB-FDR		2,25,039.00
			(As Per Schedule-2)		
			LOANS & ADVANCES		
			Amount Receivable	41,100.00	41,100.00
			(As Per Schedule-1)		
			Current Assets		
			Mathur Vaishya Security	3,000.00	
			Sursadan Agra Security	7,500.00	10,500.00
			CASH & BANK BALANCE		
			P.N.B.(A/C 1639000100107709)	74,353.53	
			P.N.B.(A/C 1639000100107693))	2,899.02	
			Syndicate Bank (A/C No.88152200004779)	9,304.85	
			Syndicate Bank (A/C No.86102010059541)	83,323.53	
			Cash in hand	37,583.00	2,07,463.93
TOTAL Rs.		**30,43,101.93**	TOTAL Rs.		**30,43,101.93**

Place : AGRA President Secretary Treasurer Auditor

Dated :

SHRI VARSHNEY SABHA AGRA (Regd.)
AGRA
Income and Expenditure for the year ended 31st March, 2025

EXPENDITURES	FIGURES CURRENT YEAR		INCOMES	FIGURES CURRENT YEAR	
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To **Akroor Jayanti Exps**			By Donation	3,47,453.00	
" Banner Exps	840.00		" Income from Advertisement	3,04,100.00	
" Pooja Exps	1,970.00		" Interest on FDR	14,369.00	
" Refreshment/ Food Exps	4,790.00		" Life time Membership fees	21,000.00	
" Tent Exps	750.00	8,350.00	" Income From Sale of Magazine	3,060.00	
			" S.B. Interest	7,617.86	
			" Scholarship	9,860.00	
			" Yearly Subscription	15,751.00	
			" Membership Fee (Mahila Mandal)	7,900.00	
To **Varshney Sabha Varshikoutsav**			" Mahila Mandal Donation	8,000.00	7,39,110.86
" Auditorium Rent	59,025.00				
" Guest exps	3,915.00				
" Card Exps	2,500.00				
" Conveyance/ Freight/ Travel Exps	12,665.00				
" Flowering & Decoration exps	4,000.00				
" Food Exps	1,46,000.00				
" Guard Exps	1,600.00				
" Magzine Printing exps	1,05,000.00				
" Media Exps	5,230.00				
" Misc Exps	1,800.00				
" Meeting exps	12,478.00				
" Photography exps	9,500.00				
" Postage & Courier exps	14,670.00				
" Printing/ Banner/ Stationery exps	26,596.00				
" Prize & Momentoes	53,000.00				
" Sound Exps	1,500.00				
" Tentage	20,000.00				
" Decoration exps	2,500.00	4,81,979.00			
" Donation to Varshney Kalyan Nidh	24,000.00				
" Akroor Yath Yatra	21,525.00				
" Bank Charges	782.63				
" Bad Debts	7,500.00				
" Charity	4,200.00				
" Hariyali Teez Exps	37,110.00				
" Holi Milan Samaroh	55,345.00				
" Sports & Games Exps	1,720.00	1,52,182.63			
" Excess of Income over Expenditure		96,599.23			
TOTAL RS.		**7,39,110.86**	**TOTAL RS.**		**7,39,110.86**

Place : AGRA   President   Secretary   Treasurer   Auditor

Dated :

• वार्ष्णेय सभा की झलकियाँ •

• वार्ष्णेय सभा की झलकियाँ •

• वार्ष्णेय सभा की झलकियाँ •